सम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग

परिसंवाद (सेमिनार) कार्य पुस्तक

पासबान रोनॉल्ड ई. शोनहर

7111 डिक्सि हाईवे #28, क्लार्कस्टोन एम.आई. 48346 यू.एस.ए.

www.rcministyy.org restorationchristianministry@gmail.com

प्रिय परिजनों और मित्रों,

सम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग इस परिसंवाद में आपका स्वागत है और आपकी उपस्थिति के लिए धन्यवाद!

सन् 2008 में, परमेश्वर ने मेरे दिल से यह बात कही कि वे अपने लोगों को पुनः अपनी सृष्टि की मूल अवस्था में पुनर्स्थापित होते हुए देखना चाहते हैं। पहला थिस्सलुनिकियों 5:23–24 में संत पौलुस परमेश्वर की इच्छा प्रस्तुत करते हैं।

''मेरा परमेश्वर स्वयं, वह परमेश्वर जो सारी वस्तुओं को पवित्र और पूर्णतः बनाते हैं, आपको पवित्र और संपूर्ण बनाते हैं, तुम्हें एकत्रित रखते हैं– आत्मा, प्राण ओर देह–और आपको हमारे स्वामी, प्रभु यीशु मसीह के आगमन के लिए स्वस्थ रखते हैं। वह जिसने आपको बुलाया है, वह पूर्णतः निर्भर रहने योग्य हैं। यदि उन्होंने कहा है तो वे उसे करेंगे भी!'' (बाइबल का संदेश)।

इसके परिणामस्वरूप, यह परिसंवाद और मसीहियों की पुनर्स्थपना के काम ने जन्म लिया है।

यह कितने ही सौभाग्य और सम्मान की बात है कि आप हमें अनुमति दें कि हम आपके जीवन में बोलें।

हम उस बात को लेकर उत्साहित हैं जो, परमेश्वर करने पर है केवल आप में ही नहीं, परन्तु आपके परिवार में भी

रॉन शोनहर

रेस्टोरेशन क्रिश्चन मिनिस्ट्री केंद्र संस्थापक और पासबान

सम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद कार्य पुस्तक प्रकाशनाधिकार 2018
रेस्टोरेशन क्रिश्चन मिनिस्ट्री
सारे अधिकार आरक्षित /इस पुस्तक के कोई भी भाग का पुनरूत्पादन पुनःप्राप्ति प्रणाली में जमा करना या किसी भी स्वरूप में या किसी भी जरिये से संचारित नहीं किया जा सकता जैसे कि इलेक्ट्रानिक, मैकेनिकल, झेरॉक्स, रेकॉर्डिंग, स्कैनिंग या अन्य कोई और प्रकार से उपयोग में नहीं लाया जा सकता जब तक आप लेखक या प्रकाशन से लिखित रूप में पहले अनुमति न ले ले । इस पुस्तक के किसी भी भाग में कोई अदल–बदल नहीं की जा सकती।

सम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद कार्यपुस्तक :–

चाहे आप सम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद को "सजीव" गृह समूह में, कली सिथाई स्थान में आपके काम करने के स्थान में, एक जेवनार में या होटल सम्मेलन केन्द्र में हिस्सा ले रहे हों– तो यहा पर कुछ शालीनतापूर्ण मार्गदर्शिका है, ताकि यह आपको इस योग्य बनाए कि जब परमेश्वर का वचन बॉटा जाए तब आप वह सब कुछ प्राप्तकर सकें जो परमेश्वर ने आपके लिए रखा है। प्रत्येक पाठ के दौरान जिस मात्रा में जानकारियों को पूर्ण किये जाने की आवश्यकता है। उसके कारण, हम आपसे सहायता की मांग कर रहे हैं ताकि हम निम्नलिखित मार्गदर्शिकाओं में बने रहने के द्वारा इसे पूर्ण होते हुए देखें:

- कृपया सद्गुणी बने रहें; हम ठीक समय पर आरंभ करेंगे।
- कृपया अपने आस–पास के लोगों का आदर करें और सत्र के दौरान व्यक्तिगत बातें न करें।
- यदि आपसे गवाही देने के लिए कहा जाए तो कृपया 3 मिनट से अधिक समय न लें और मुद्दे पर बने रहें
- हम सलाहकार नहीं है, इसके लिए अनुज्ञापत्र (लाइसेंस) की आवश्यकता होती है! हम तो प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के सेवक हैं और हम हमेशा आपका ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करेंगे की परमेश्वर का वचन आपके विषय में ओर किसी भी परिस्थिति के लिए क्या घोषित करता है।
- जब पाठ की पढ़ाई आगे बढ़ रही है और आपके पास कोई प्रश्न है जिसका उत्तर नहीं मिला है, तो कृपया हमें ई–मेल करें, उसके साथ किसी भी तरह के प्रार्थना निवदेन भी भेज सकते हो:

  restorationchristiaministry@gmail.com

अस्वीकरण :–

इस कार्य– पुस्तक का उद्देश्य यह नहीं कि वैद्यकिय सलाह और आपके निजि वैद्य के द्वारा दिए गए उपचार लें या उसका प्रयोजन करें। पाठकों को सलाह दी जाती है कि अपनी वैद्यकिय समस्याओं के लिए अपने डॉक्टरों से सलाह लें या अन्य योग्य स्वास्थ्य विशेषज्ञों से उपचार कराएँ। कोई भी व्यक्ति जो इस पुस्तक को पढ़ रहा है या इस पुस्तक में दी गई सूचनाओं का पालन कर रहा हो, उसके किसी भी तरह से उपचार न लेने, जो नुस्ख दिया गया है उसे लागू न करने या औषधियों का उपयोग न करने या रोगोपचार न लेने से होने वाले संभावित परिणामों के लिए लेखक किसी भी तरह की जवाबदारी नहीं लेते हैं। यदि कोई भी व्यक्ति जो इस अध्ययन में हिस्सा ले रहा है वह कोई वैद्यकिय उपचार ले रहा है, तो उन्हें चाहिए कि अपने रोगोपचार और औषधियों का त्याग करने से पहले चिकित्सक से अवश्य ही मिलें।

प्रार्थना :–

प्रार्थना हमारे पिता, सर्वशक्तिमान परमेश्वर से बातचीत करना है। हम प्रभु यीशु के नाम में पिता से प्रार्थना करते हैं, प्रभु यीशु के अधिकार उनकी अनुमति के तहत् परमेश्वर तक पहुंचते है। हम परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सामने, अपनी योग्यताओं के कारण नहीं आते परन्तु प्रभु यीशु की योग्यता के कारण आते हैं।

अपने आप को शुद्ध करना

वचन पढ़ने से पहले मैं प्रार्थना करता हूँ, किसी भी स्थान को छोड़ने पर (कभी कभी जहां गाडी, खड़ी/पार्क) करते है। और हमेशा ही जैसे ही मैं अपनी काम में बैठता हूँ –प्रार्थना करता हूँ।ई–मेल खोलने के बाद या संदेश ई–मेल पर भेजने के बाद टेलिविजन देखते, काम पर से लौटने के बाद, फोन कॉल के बाद, शॉपिंग या रेस्तरा इत्यादि से लौटने के बाद; मैं स्वयं पर शुद्धता की प्रार्थना करता हूँ।

इफिसियों 6:12 में बायबल हमें बताती है, ''क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्व लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। '' यह प्रधानताएँ

सामर्थ्य, अन्धकार के शासक (हाकिम) और दुष्टता की आत्मिक सेनाएँ सभी तरफ है; और वे आपके स्थान में आना चाहते हैं!

मैं एक व्यक्ति की कहानी बताता हूँ जो एक शाकाहारी संस्था की प्रमुख थीं। एक दिन उनकी एक व्यवसायीक बैठक थी और उनका ग्राहक उनसे एक स्थानीय ———(धुंए वाले) बि.बि.क्यु. रेस्तरा में मिलना चाहता था। उस ग्राहक के साथ उतनी बैठक के बाद,मैं अपनी नियमित निर्धारित शाकाहारी संस्था की मासिक बैठक में गईं। जब उन्होंने भीतर प्रवेश किया, जिस किसी के भी पास से वो प्रसारित हुई वे सभी उन पर बार्बिक्यु धुंए को सूंघ सकता थे । यद्यपी बार्बिक्यु खाया नहीं था फिर भी धुएं के ''अवशेष'' उन के पूरे वैसे ही दुष्टता की आत्मिक सेनाओं के '' अवशेष ''(असर, प्रभात) जो हर तरफ है, हमारा पीछा करते हैं। मेरी आदत है कि, मैं स्वयं को और अपने स्थान को हर दिन किसी भी समय जब मेरा वातावरण बदलता है, शुद्ध करता हूँ।

शुद्ध किये जानेवाली प्रार्थना के नमूने

'' हे स्वर्गीय पिता, मैं प्रभु यीशु के नाम में आपके समक्ष आता हूँ। मैं स्वयं के ऊपर और चारों ओर प्रभु यीशु के लहू को लगाता हूँ। उस अधिकार में जो मुझे प्रभु यीशु के नाम में मुझे मिला है–मैं कोई भी और सारी दुष्टताओं को किसी भी दुष्ट षडयंत्र और प्रत्येक दुष्टात्मिक सेनाओं को जो मुझ से जुड़ने का प्रयास करती हैं। या जिस स्थान में मैं हूँ उससे जुड़ने का प्रयास करती है। आज्ञा देता हूँ– अभी चली जाओ! तुम्हारे कार्यभार प्रभु यीशु के नाम में तोड़ दिए गए हैं।''

पाठ 1

संपूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद की समीक्षा

पासबान रॉनी की गवाही

पासबान रॉनी ने उद्धार पा लिया था, परन्तु वे शुद्ध नहीं थे। वे उलझे फंसे हुए थे। वे उलझे हुए थे जैसा की संत पोलुस ने रोमियों 7 में कहा है :

रोमियों 7:15, 19–25

15. और जो मैं करता हूँ, उस को नहीं जानता क्योंकि जो मैं चाहता हूँ, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है वही करता हूँ।

19–25 क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूं, वह तो मैं नहीं करता !

23. मैं सही काम करना चाहता हूँ, परन्तु करता नहीं.....मेरे अंगों में एक व्यवस्था काम करती है–– मेरी बुद्धि की व्यवस्था से युद्ध करती और मुझे पाप की व्यवस्था को बन्धन में ढालती है जो मेरे अंगों में है।

24. ओह! मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे कौन छुडाएगा।

25. यीशु मसीह हमारा प्रभु! अतः तब तो मैं बुद्धि से परमेष्वर की व्यवस्था की सेवा (का पालन) करता हूँ; परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था की सेवा करता हूँ।'' भावानुवाद

पासबान रॉनी की समस्या क्या थी ? यह पाप की व्यवस्था थी जो उनके अंगो में काम करती थी ! वे फंसे हुए थे!

परमेश्वर के साथ भी अपनी जीवनशैली के आरंभ में, उन्होंने 2 पतरस 1:2–10 पढ़ा–लिविंग बायबल अनुवाद में:

2. क्या आप परमेश्वर की कृपा और शान्ति अधिक और अधिक चाहते हो ? तब तो परमेश्वर को अच्छे से और अधिक अच्छे से जानना सीखें।

3. क्योंकि जितना अधिक आप परमेश्वर को बेहतरीन तरीके से जानोगे, तो वे अपनी बड़ी सामर्थ्य के द्वारा आपको एक सच्चे अच्छे जीवन के लिए लगनेवाली प्रत्येक वस्तुएं देंगेः यहाँ तक किवे हमारे साथ अपनी स्वयं की महीमा और भलाई को भी बाटेंगे!

4. और उसी महान सामर्थ के द्वारा परमेश्वर ने हमें अन्य सभी धन ओर अद्‌भुत आशीषें दी हैं जिसकी उन्होंने प्रतिज्ञा की है; उदाहरण के लिए, हमारे चारों ओर की सड़ाहट और अभिलाषाओं से बचाने, ओर हमें अपने स्वयं का चरित्र देने की प्रतिज्ञा।

5. परन्तु इन उपहारों (वारदातों) को प्राप्त करने के लिए, आपको विश्वास से अधिक चाहिए, अच्छा बनने के लिए आपने परिश्रम करना ही चाहिए और यह भी काफी नहीं, कि उसके पश्चात आपको और अधिक बेहतर तरीके से परमेश्वर को जानना सीखना होगा और खोज निकाले किवे क्या चाहते हैं कि आप करें।
(पासबान रॉन ने कहा बहुत अच्छे)

6. उसके बाद, अपनी स्वयं की इच्छाओं को एक तरफ रखता सीखें, ताकि आप धीरजवन्त ओर भक्त बन सके, आनन्द के साथ परमेश्वर को आपके साथ अपने तरीके से काम करने देना। (पासबान रॉन ने कहा कि यह तो अलग ही बात है कि मै अपनी इच्छाओ को एक तरफ रखूं!)

7. यह अगले कदम को संभव करेगा, वह यह है कि, आप दूसरे लोगों में आनन्द मनाएँ और उन्हें पसंद करें, और अन्ततः आप उनसे गहराई से प्रेम करने लगेंगे। (पासबान रॉनी ने सोचा–मैं उन लोगों से गहराई से प्रेम कैसे कर सकता हूं जबकि मैं उन्हें पसन्द भी नहीं करता? मैं स्वयं तक को भी पंसद नही करता!)

8. जितना अधिक आप इस मार्ग में आगे चलेंगे, उतने ही अधिक आप आत्मिक रीति से बलवन्त बनोगे और फलवन्त बनोगे और हमारे प्रभु यीशु के लिए उपयोगी बनोगे।

9. परन्तु यदि कोई विश्वास के अतिरिक्त इन बातों में आगे बढ़ने में असफल होता है तो वह निश्चित रूप से अन्धा है, या कम से कम उसे दूर का दिखाई नहीं देता (धुन्धला दिखता है) ओर यह भूल बैठा है कि परमेश्वर ने उसे उसके पुराने जीवन के पाप से छुड़ाया है, ताकि अब वह प्रभु के लिए एक मजबूत और अच्छा जीवन जिये।

10. इसलिये, प्रिय भाइयों, इस बात को प्रमाणित करने के लिये कठिन परिश्रम करो की आप वास्तव में ऐसे लोगों के मध्य में रहते हो जो परमेष्वर के बुलाए और चुने हुए है और तब आप कभी भी ठोकर नहीं खाओगे या गिरोगे नहीं।

शुद्धिकरण की जारी रहनेवाली प्रक्रिया, परमेश्वर के वचन के सत्य को लागू करने और सम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग में सिखाए गए वहा सिद्धांतो को लागू करने से पासबान रॉन ''खुल जाने'' पाए!

शुद्धिकरण का प्रक्रिया के द्वारा पासबान रॉन की चंगाई के क्या लाभ थे? वे अपने अंगों में पाप की व्यवस्था के द्वारा लम्बे समय तक बन्धुआई में थे! अब वे 24 पतरस 1: 2: 10 के अनुसार उसके बाहर निकट आए हैं, अपने संपूर्ण हृदय से परमेश्वर से प्रेम करने के द्वारा, अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के द्वारा क्योंकि अब अन्ततः वे स्वयं से प्रेम कर पा रहे हैं। परमेश्वर ने पासबान के टूटे हुए दिल को चंगा किया और उन्हें शान्ति और आनन्द से भर दिया। अब वे क्रोधी व्यक्ति नहीं रहे! अब वे फलवन्त होने के योग्य बने और हमारे प्रभु यीशु मंसीह केलिए उपयोगी बन गए हैं!

संम्पूर्णता की ओर जानेवाला मार्ग के संबंध में अन्य लोगों ने क्या कहाः

- ''इसने मेरे जीवन को बदल दिया। मैं एक नया व्यक्ति बन गया। अब मैं स्वतंत्रता और शान्ति में जीवनयापन करता हूं जिसके विषय में मैं जानता नहीं था की ऐसा संभव है।''
- ''परमेश्वर ने मुझे दिखाया (बताया) कि यदि मैं अपनी दुनिया को बदलना चाहता हूँ, तो पहले मुझे स्वयं को बदलने की आवश्यकता है....!''
- '' मेरी पत्नी के साथ मरा एक सम्पूर्ण नया रिश्ता है.....यह बहुत अच्छा है!''
- '' मैं नियंत्रित भय में रहा करता था। अब मैं स्वतन्त्र हूँ।''
- '' मैंने तीसरी बार इस परिसंवाद में भाग लिया है। प्रत्येक बार जब मैंने इसमें हिस्सा लिया, यह ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं प्याज की तरह एक और परत को द्यील रहा हूँ, जिससे मुझे छुटकारा चाहिए।''
- ''सम्पूर्णता की ओर जानेवाले मार्ग को पूर्ण करने के बाद, मेरा चर्म रोग धीरे धीरे लुप्त हो गया।''

और अधिक गवाहियों के लिए कृपया हमारे वेब साइट को देखें www.rcministry.org.

सम्पूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग के परिसंवाद में भाग लेने के लाभ :

- यह परिसंवाद आपका जीवन बदल देगा।
- जो सिद्धान्त सिखाए जाते हैं वे परमेश्वर के वचन पर आधारित हैं।

- इस परिसंवाद में सीखे सिद्धान्तो को जब आप लागू करते हैं, तब आप अपने जीवन में शान्ति, तनाव, भय और कडवाहट से मुक्ति का अनुभव करते हैं।
- जब आपको कई रोंगो के बारे में अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है तब उत्तम स्वास्थ्य पाते हैं।
- कौन सी बात है जो गलत निर्णयों को प्रभावित करती है उसे सीखने के द्वारा आर्थिक स्वतन्त्रता पाते हैं।
- परमेश्वर के साथ, अपने जीवन साथी, परिवार और मित्रों के साथ विचारानुसार संबंध रखना।
- एक लिखित दर्शन का विवरण।

रेस्टोरशन क्रिश्चन मिनिस्ट्री का दर्शन और मिशन दर्शन :

- रेस्टोरेशन क्रिश्चन मिनिस्ट्री का दर्शन यह है कि परमेश्वर के लोगों को स्वतन्त्र देखें और संपूर्ण तन्दुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद तथा संपूर्ण तन्दुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग की सेवकाई का दिन के द्वारा ऐसा जयवन्त जीवन जीयें, जिसकी योजना परमेश्वर ने उनके लिए बताई है– एक दिन पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतन्त्रता।

मिलन (लक्ष्य)

- दिए गए लोगों के लिए संपूर्ण तन्दुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद और सेवकाई के दिन का आयोजन करनाः
- परमेश्वर के द्वारा दिए गए आत्मिक अधिकारों के प्रति लोगों को जागरूकता के द्वारा उन्हें वे सभी उपकरण (शस्त्र) उपलब्ध करना, जिससे वे परमेश्वर की पूर्ण सामर्थ में जीवनयात्रा (चला) कर सकें और उन्हें सीखना की कैसे परमेश्वर के द्वारा दिए गए आत्मिक अधिकारों को दैनिक जीवन में लागु करे।
- वे शस्त्र जिनकी उन्हें उस जीवन को जीने की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए आवश्यक हो, जो परमेश्वर ने उनके लिए योजनाबद्ध किया है।
- और वे शस्त्र जिनकी उन्हें दूसरों की सहायता करने के लिए उन्हें. आवश्यक है।
- स्थानीय कलीसिया के अगुवों के साथ भागीदारी करें, ताकि उन्हें इस परिसंवाद को लागू करने में सहयोग मिले और सेवकाई का दिन का उनकी कलीसिया में आयोजन करें ताकि

उन्हें आत्मिक मामलों के साथ व्यवहार करने में सहायता प्राप्त है जिसका उनके लोगों को सामना करना पड़ता है।

- लोगों को प्रशिक्षित करना, ताकि स्थानीय कलीसिया में, गृह कलीसियाओं में, और बाजारों में एक सेवकाई के रूप में इस परिसंवाद को आगे बढ़ाएँ।

हम क्या करनेवाले हैं

इस परिसवांद के लिए पाठ्यक्रम रूप–रेखा :

अध्याय 1 समीक्षा और अध्याय –2 की तैयारी

अध्याय 2 छुटकारा और क्षमा

अध्याय 3 मौलिक सत्य

अध्याय 4 मौलिक (सैद्धान्तिक) सत्य

अध्याय 5 विचार के मार्ग

अध्याय 6 पुनर्स्थापना की चंगाई और स्वतन्त्रता के दिन के लिए तैयारी

अध्याय 6 और 7 के मध्य में हम एक दिन सेवकाई का रखेंगे–पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतन्त्रता का एक दिन ।

अध्याय 7 से 10 तक प्रतिदिन इसमें चलना या जीवनयापन करना।

हम क्या करनेवाले हैं

कुछ वे बातें जिसके विषय में हम बातें करेंगे:

- क्षमा क्या है?
- सत्य क्या है?
- व्यवस्था विवरण 28–आशीष की तुलना में स्त्राप ।
- रोमियों 7 और 8– संघर्ष की तुलना में परमेश्वर की योजना।
- न्यायोचित और शुद्धिकरण
- स्मृति क्या है?

- परमेश्वर ने हमें जो आत्मिक अधिकार दिए हैं वह कैसे कार्यरत होता है?
- हमारे जीवनों में शान्ति का होना, तनाव, भय ओर कड़वाहट से मुक्त होने के सिद्धान्त।
- जैसे ही, हमें किसी भी रोग के मौलिक कारण की अन्तरदृष्टि प्राप्त होती है तो सर्वोत्तम। स्वास्थ्य का आनन्द कैसे लें?
- गलत निर्णयों को क्या प्रभावित कर रहा है उसे सीखने के द्वारा कैसे आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करें ?
- परमेश्वर, हमारे जीवनसाथी, परिवार और मित्रों के साथ इच्छानुसार रिश्ता रखना।
- कि हम अभक्तिपूर्ण प्रभाव में उत्पन्न हुए हैं। और कैसे 6000 वर्षो के क्रमादेश ने हमें प्रभावित किया।
- हम कौन सी आवाज की सुन रहे हैं इसे, पहचानना और जानना।
- उत्पत्ति अध्याय 3 में जब परमेश्वर ने यह कहा, '' किस ने तुझे चिताया'' या ''यह तुझसे किसने कहा'' इसका परमेश्वर से तात्पर्य (अर्थ) क्या है, उसे समझना।

अध्याय 6 और 7 के बिच में हम एक दिन की पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतन्त्रता रखेंगे जो नहेमायाह 9:1–3 पर आधारित होगा– परमेश्वर के वचन का अनुवाद :

- फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास का टाट पहिने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हेा गए। तब इस्राइल के वंश के लोग सब अन्य जाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर, अपने अपने पापों और अपने पुरखाओं के अधर्म के कामों को मान लिया। तब उन्होने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत करते रहे।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतन्त्रता के दिन हम यह व्यतीत करेंगे :

- वचन पढ़ेंगे।
- अभक्तिपूर्ण प्रभाव की जड़ों को पहचानेंगे।
- अपने पापों और हमसे पूर्व की पीढ़ी के अधर्मो का अंगीकार करेंगे।
- शत्रु पर कानूनी (नैतिक) अधिकार लेंगे।

- जो अभक्तिपूर्ण प्रभाव शत्रु ने हमारे जीवनो में हमारे परिवार, और हमारी पीढ़ियो पर कर रखा है, उसे समाप्त करने की घोषणा हम स्वर्ग की अदालत में करेंगे।

(हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि किसी को भी परेशान होना नहीं पड़ेगा या अकेले नहीं छोडेंगे। परमेश्वर के वचन का पठन और जो घोषणा हम करेंगे या कहेंगे वे हमारे स्थान ही से सामूहिक रूप से किया जाएगा।)

अपने कानूनी अधिकार को जानें –पासबान रॉन की छत के काम की कहानीः

पासबान रॉन ने एक कम्पनी को अपनी छत के तखते (पहरें) बदलने का काम दिया। जिस दिन उन्होंने पुराने तखते उखाड़े, उसी दिन एक बड़ी बरसाती ऑधी आने वाली थी और उस कम्पनी के पास इस खुली छत को, ढाकंने के लिए मात्र एक छोटी सी तिरपाल थी, जिसमें बहुत से बड़े–बड़े छेद थे। बारिश आई, पासबान रॉन और उनका परिवार बाल्टियाँ, बर्तन, कटोरे लेकर छत में से घर के भीतर आ रहे पानी को उकत्रित करने लगे। घर के भीतरी भाग को बहुत अधिक क्षति पहुंची थी।

वह ठेकेदार वर्षा के थमने के बाद आया और छत का काम पूरा किया। पासबान रॉन ने उन्हें पूरा पैसा नहीं दिया जब तक वे उस पूरे घर की क्षतिग्रस्त छत को सुधार कर देने के लिए सहमत नहीं हुए, परन्तु वह ठेकेदार ने उस छत को सुधारने से इन्कार किया था । उस क्षति की जिम्मेदारी लेने से जिससे भीतरी छत को हुई थी इन्कार किया और पासबान रॉन ने ठेकेदार को बाकी पैसा देने से इन्कार किया।

महिनों तक लिखित सूचनाएं भेजने के पश्चात उन्होंने पा.रॉन का मामला एक वसूली विभाग (एजंसी) को सौंप दिया, जो रॉन को दोषी ठहराने की नीति के द्वारा लगातार पीछे पड़ गए । इस तरह परेशान किये जाने से पा. रॉन थक गए थे, इसलिए उन्होंने एक निर्णय लिया । अब वे इस बारे में क्या कर सकते है उसे देखें। पा. रॉन ने एक न्याय प्रतिनिधि (अटर्नी) से सम्पर्क किया । उस न्याय प्रतिनिधि ने ग्राहक सुरक्षा नियम पर एक सरसरी दृष्टि डाली और पा. रॉन को सलाह दी कि अगली बार जब वसूली दस्ते का फोन आए तब नियम के इस विशेष संदर्भ का उल्लेख करना साथ ही पुस्तक, पृष्ठ क्रमांक तथा अध्याय भी बताना ।

जैसे ही पा.रॉन को मालूम हो गया कि क्या बोलना है तो अब उनके फोन आने की बाट जोहना कठिन हो गया था । वसूली दस्ते ने फोन किया, पा.रॉन ने नियम क्या कहता है उसका उल्लेख किया, दूसरी ओर शान्ति थी, उन्होंने फोन रख दिया और फिर उसके बाद उन्होने पा. रॉन को परेशान नहीं किया ।

पासबान रॉन को इस नियम के बारे में विस्तृत जानकारी की आवष्यकता नहीं थी, उन्हें केवल उसका उल्लेख करना था । ठीक यही बात आत्मिक क्षेत्र में भी लागू होती है । जैसे की पासबान रॉन के घर की छत के काम की कहानी में है, वैसे ही पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतन्त्रता के दिन, हम नियम, को लागू करेंगे परमेश्वर का वचन और आत्मिक परेशनियॉ रूक जाएँगी ।

समय की व्याख्याः **जब आपका भूतकाल आपके वतर्मान का हिस्सा बन जाता है तब, यह आपके भविष्य को प्रभावित करता है । यदि हमारे भूतकाल की नकारात्मक बातें लगातार हमारे वर्तमान का हिस्सा बनती हैं तब यह हमारे भविष्य का विनाश करती है ।**

हमें चाहिए की हम भूतकाल से स्वतंत्र हो जाएँ, ताकि हमारे पास वर्तमान काल की स्वतंत्रता रहे और परमेष्वर की दृष्टी से भविष्य को देखें ।

पासबान शोनहर

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के उस दिन हम सभी और प्रत्येक दुस्टात्माओं और अभक्तिपूर्ण सहचारिताओं पर कानूनी अधिकार लेंगे । विषय जिन पर चर्चा करेंगे

कडवाहट की आत्मा : धिरे – धिरे विनाशकारी, क्षयकारी (नाशकरनेवाली) और हमें मार डालना चाहती है ।

दोषारोपण की आत्मा : एक झूठ बोलनेवाली आत्मा जो दोष लगाती और हमारे विरोध में आरोप लगाती है ।

जादू – टोने (तन्त्र – मन्त्र) की आत्मा : कोई भी ऐसी बात जो परमेश्वर के सोचने और काम करने के तरीके के विपरीत (विरोध) हो ।

इर्ष्या और जलन की आत्मा : जो हमारा नहीं वही चाहती है ।

इन्कार की आत्मा : हमें बरखास्त और निकाल देना चाहती है ।

व्यसन (लत) की आत्मा : हमें यह धोखा देती है कि हम सोचे कि हमें परमेश्वर के अलावा कुछ और चाहिए ।

प्रेम न करनेवाली आत्मा : ठीक उस प्रकार जैसा सुनाई देता है, यह प्रेम न करनेवाली, अशुद्य और परमेश्वर की सृष्टि से घृणा करती है । यह उन सब में सबसे अधिक घटिया आत्मा है क्योकि ये परमेश्वर के ठीक विपरित है, परमेश्वर प्रेम है ।

भय की आत्मा : परमेश्वर पर विश्वास और भरोसे की कमी, परमेश्वर के सिध्द प्रेम में चलने की कमी ।

गरीबी की आत्मा : परमेश्वर की साथ सही संबंध की धटी जो दूसरों के साथ के हमारे रिश्तों को प्रभावित करती है साधनों पर असर डालती है ।

हम आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि, पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन किसी को परेशान नहीं होता और ना ही अकेला छोड़ा जाएगा । परमेश्वर के वचन का पठन और जो घोषणा हम करेंगे (कहेंगे) वे हमारे स्थान ही से सामूहिक तौर पर किया जाएगा । पूर्ण निष्चित रहें कि आप हमारे सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की उपस्थिति में सुरक्षित और आशीषित अनुभव करेंगे ।

वचनबध्दता / सुपुर्दगी / सौपना

सुअर और मुर्गी की कहानी

एक सुअर और मुर्गी एक रेस्टॉरेन्ट (होटल) भोजनालय के सामने रूके जिसके सामने सूचना फलक पर " हम और एग्स " (सुअर का सुखाया हुआ मांस और अण्डे) लिखा हुआ था ।

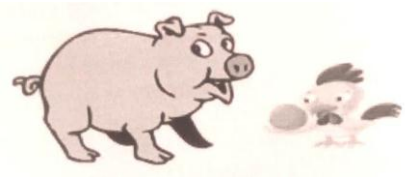

मुर्गी ने कहा, " आओ भीतर चलते हैं और अंशदान योगदान (मिल बांटकर खर्च करना) करें ।"

सुअर ने कहा, " तुम्हारे लिए तो यह कहना आसान है । तुम्हें तो केवल एक अण्डा ही देना होगा, परन्तु मेरे लिए तो एक सम्पूर्ण सुपुर्दगी (वचनबध्दता) होगी ।"

वचनबध्दता एक योगदान से बढकर है ।

"वचनबध्दता होने" का अर्थ हैं कि कुछ करने की प्रतिज्ञा, बंध जाता या भरोसा करना ही वचनबध्दता में परमेश्वर पर भरोसा करना सम्मिलित है क्योंकि परमेश्वर ही वह हैं, जिन्होंने प्रमाणित किया है कि वे भरोसेमन्द (भरोसे के योग्य) हैं ।

वचनबध्दता

जबकि आप इस परिसवांद के बाद चले जाओगे, तो आप इसमें क्या दे सकते या डाल सकते हो, निम्नलिखित बातों के लिए वचनबध्द होने के लिए प्रार्थनापूर्वक विचार करें :

- मैं प्रत्येक सत्र में उपस्थित रहूंगा/रहूंगी या जो मुझसे चूक गया है उसे पूरा करूंगा/करूंगी।
- मै अपना दैनिक अनुशासन का पूर्ण पालन करूंगा /करूंगी और अपना गृहकार्य करूंगा/करूंगी
- मै परमेश्वर के साथ अधिक समय व्यतीत करूंगा/करूंगी क्योंकी परमेश्वर ने मुझे सुना है ताकि हम उनके साथ संगति में रह सकें ।
- मैं प्रार्थना में रहूंगा/रहूंगी और परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्ति की खोज करूंगा/करूंगी ।
- मैं पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के संपूर्ण दिन में भाग लूंगा/ लूंगी ।
- मैं पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के एक दिन के पश्चात अध्याय 7 से 10 में चलने (के अनुसार करने) के लिए उपस्थित रहूंगा/रहूंगी ।

  क्योंकि मैं परमेश्वर के साथ और अधिक घनिष्टता की इच्छा रखता हूं, मेरे जीवन और मेरे परिवार में की किसी भी अभक्ति के प्रभाव पर विजय और स्वतंत्रता का जीवन जीने का चुनाव करता हूं, मै उपरोक्त बातों के लिए वचनबध्द हूं ।

  हस्ताक्षर .....

  दिनांक : / /

गृहकार्य

अध्याय 1 : कृपया निम्नलिखीत रिक्त स्थान भरें :

1. पा. रॉन की गवाही, के पृष्ठ पर रॉन ने उदार पा लिया था, परन्तु वे ..... नहीं थे / वे ..... थे ! रोमियों के किस अध्याय का संदर्भ उन्होंने दिया ..... ।
2. सम्पूर्ण तन्दुरूस्ति की ओर जाने वाले मार्ग के विषय में अन्य लोगों ने उस पृष्ठ पर क्या कहा : इस ने मेरे जीवन को बदल दिया अब मैं ..... और ..... "मै जीवनयापन करता हूँ , जिसके विषय में मैं जानता भी नहीं था कि ऐसा संभव है " मैं नियमित ..... .में रहा करता था । अब मैं ..... हूँ ।

3. रेस्टोरेशन क्रिश्चन मिनिस्ट्री का दर्शन और मिशन वाले पृष्ठ पर : दर्षन परमेश्वर के लोगों को ..... देखें और जयवन्त जीवन जियें जिसकी योजना परमेश्वर ने उनके लिए बताई है।
4. वचनबध्दता के उस पृष्ठ पर : सूअर और मुर्गी की कहानी : वचनबध्द होना इसका अर्थ है कि कुछ करने की प्रतिज्ञा बन्ध जाना या भरोसा करता है । वचन बध्दता में परमेश्वर पर ..... करता सम्मिलित है क्योंकि परमेश्वर ही वह है जिन्होंने प्रमाणित किया है कि वे भरोसेमन्द हैं । क्योंकि मैं परमेश्वर के साथ गहरी घनिष्ठता की इच्छा रखता हूँ , मेरे जीवन और परिवार पर किसी भी अभक्तिपूर्ण प्रभाव पर विजय चाहता हूँ और स्वातंत्रता का एक जीवन जीने का चयन करता हूँ मैं सुपूर्ण तंदुरूस्ती के मार्ग के प्रति वचनबध्द हूँ
5. यदि आपने पहले ही ऐसा नहीं किया है तो क्या, आप संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाले मार्ग के परिसंवाद प्रति वचनबध्द होने के लिए तैयार हैं ।

गृहकार्य कार्यभार

इस अध्याय में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ें, सुनें , जानें और आज्ञा मानें ! परमेश्वर के वचन को जानें, पवित्रशास्त्र के साथ गहराई से परिचित हो जाए और आप परमेश्वर के साथ गहराई से परिचित हो जाएंगे !

- पढ़ें " ए मोर एक्सेलेन्ट वे "2009 के संस्करण । लेखकः हेनरी डब्ल्यु. राईट पृष्ठ क्र.99 से 103 जो क्षमा और कड़वाहट पर है ।
- पढ़ें और पवित्रशास्त्र के साथ और अधिक परिचित हों मती 6:8:15; लूका 11:2—4: प्रभू की प्रार्थना, साथ ही मत्ती 18:21:35 मरकुस 11:25—26.

अगले सप्ताह के अध्याय की तैयारी में; कृपया हमारी वेबसाईट rcministry.org पर जाएं।

होम पृष्ठ पर लाल तीर का अनुसरण करें और जहॉ लिखा है "रजिस्टर हियर" वहॉ क्लिक करें, रिक्त स्थानों को भरें और "सबमिट रजिस्टेशन" पर क्लिक करें, फिर अध्याय एक पर क्लिक करें। वेबसाईट पर आप सुन पाएंगे या इस पाठ को देख सकेंगे जो सन 2016 में रेकॉर्ड किया गया था ।

यदि आप नीचे की ओर सरकेंगे, आप सुन सकेंगे गृहकार्य के पृष्ठ जो "ए मोर एक्सेलेन्टवे" से है उसे पढ़ना आरंभ करें। उपरोक्त बातों को जब आप पूरा सुन चुकें, तो कृपया नीचे की ओर

सरकें जहां अध्याय 1 के प्रश्नोत्तरी है, प्रश्नों के उत्तर दीजिए और उसके बाद "सबमिट एनसर" पर क्लिक करें। "आनलाईन" पर 5 प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है, जिससे आप सेवकाई के दिन में पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के एक दिन में उपस्थित हो सकें । आपके परिणामों के इलेक्ट्रानिक सूचनाएं हमें प्राप्त हो जाएगी ।

"और एक दूसरे पर कृपालु, और करूणामय हो और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

इफिसियों 4:32

गृहकार्य कार्यभार

- अगले सप्ताह की तैयारी में: पृष्ठ क्रमांक 15 व 16 पर जो क्षमा के विषय में गवाहियॉ दी गई हैं उन्हें पढ़ें ।
- साथ ही, अगले सप्ताह भी तैयारी में – " मैं क्षमा करने का निर्णय लेता हूं की सूची " को भरना आरंभ करें , जो इस पृष्ठ पर है । हम इस कार्यभार को अध्याय 2 में पूर्ण करेंगे।
- परमेश्वर से पूछें कि आपको किसे क्षमा करने की आवश्यकता है ।
- सूची में नामों को लिख लें।
- कृपया यह सूची अगले सप्ताह कक्षा में लेकर आऍं।

मैं क्षमा करने का चुनाव करता हूँ ।

प्रभु की प्रार्थना : सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता तू जो स्वर्ग में हैं ,तेरा नाम पवित्र माना जाए,तेरा राज्य तेरी ईच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो । हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे । और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु है, तेरा नाम पवित्र माना जाए,तेरा राज्य और तेरी ईच्छा जैसे स्वर्ग में बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरी ही हैं । "आमीन।

मत्ती 6:9–13

परिचय : प्रार्थना करें और परमेष्वर से मांगे की लोगों के नामो को प्रकट करें (फिर चाहे वे जीवित हों या मृत हो) संस्थाऍं हों, राजनैतिक दल हों; कलीसियाएं और फिरके हों; और ऐसी

परिस्थितीयॉ जिन्हें आपने अक्षम्यता में थाम रखा है । जिसमें आप स्वयं सम्मिलीत हो यदि लागू होता है तो परमेश्वर भी।

"मैं क्षमा करने का निर्णय लेता हूँ की सूची"

.....

.....

.....

.....

.....

(यह निजि जानकारियॉ हैं जो केवल आपके देखने के लिए हैं । आपसे इसे किसी अन्य व्यक्ति को बताने के लिए नहीं कहा जाएगा।)

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय 2

छुटकारा और क्षमा (या क्षम्यता)

अध्याय 1 : गृहकार्य पर पुनर्विचार :

1. पा. रॉन की गवाही, के पृष्ठ पर रॉन ने उध्दार पा लिया था, परंतु शुध्द नहीं हुए थे, उलझ (फंस) गए थे। उन्होंने रोमियों के किस अध्याय का संदर्भ दिया।
2. सम्पूर्ण तन्दुरूस्ती की ओर जाने वाले मार्ग के विषय में अन्य लोगों ने उस पृष्ठ पर क्या कहा है : इस ने मेरे जीवन को बदल दिया है अब मैं स्वतंत्रता और शांति "मैं जीवनयापन करता हूँ जिसके विषय में मुझे कभी मालूम भी नहीं था की ऐसा संभव है" मै निरंतर भय में रहा करता था । अब मै स्वतंत्र हूँ ।
3. जिस पृष्ठ पर रेस्टोरेशन क्रिश्चन मिनिस्ट्री का दर्शन और मिशन वाले पृष्ठ पर : दर्शन परमेश्वर के लोगों को देखें और जयवन्त जीवन जियें, जिसकी योजना परमेश्वर ने उनके लिए बताई है।
4. वचनबध्दता के पृष्ठ पर : सूअर और मुर्गी की कहानी : वचनबध्द होने का अर्थ है, कुछ करने की प्रतिज्ञा लेना, बन्ध जाना या भरोसा करना । वचनबध्दता में परमेश्वर पर भरोसा करना सम्मिलित है क्योंकि परमेश्वर ही वह है जिन्होने प्रमाणित किया है कि वे भरोसेमन्द है । क्योंकि मैं परमेश्वर के साथ गहरी

घनिष्ठता की इच्छा रखा हूँ, मेरे जीवन और परिवार पर किसी भी अभक्तिपूर्ण प्रभाव पर विजय चाहता हूँ और स्वातंत्रता का एक जीवन जीने का चयन करता हूँ । मैं संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाले मार्ग के प्रति वचनबध्द हूँ

5. यदि आपने पहले ही ऐसा नही किया है तो क्या, आप संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाले मार्ग के परिसंवाद के प्रति वचनबध्द होने के लिए तैयार हैं ? .....

छुटकारा

छुटकारा : परमेश्वर आपसे और मुझसे बेशर्त प्रेम करते हैं।

युहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए ।

परमेश्वर चाहते हैं कि हमारे साथ व्यक्तिगत संबंध रखे और मनुष्य–प्राणि के लिए वे चाहते हैं की उन्हें वापस अपने परिवार में अपना लें । गलतियों 3:26 क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने द्वारा जो मसीह येशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो ।

परमेष्वर ने प्रभु यीशु को पापी के लिए भेजा । प्रभु यीशु ने कहा :

मरकुस 2:17 मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को पश्चाताप करने के लिए बुलाने आया हूँ (पुस्तक के अनुसार किया है।)

छुटकारा परमेश्वर की इच्छा है

1 तीमुथियुस 2 : 3–5 यह हमारे उध्दारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उध्दार हो, और वे सत्य को भली भांति पहचान लें । क्योंकि परमेष्वर एक ही है । और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु , जो मनुष्य है ।

2 पतरस 3 : 9 प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाष हो, वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।

छुटकारा : आप परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बनें ?

रोमियों 10: 9–10 कि यदि तू अपने मुंह से यीषु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन (हृदय) से विष्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उध्दार पाएगा

क्योंकि धार्मिकता के लिये मन (हृदय) से विश्वास किया जाता है, और उध्दार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है ।

रोमियों 10:13 क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उध्दार पाएगा।

छुटकारा : आप घोषणा करें : यदि आपने नहीं किया है या यदि आपको निश्चय नहीं है कि आपने मुॅह से घोषणा (अंगीकार) किया है, जिसकी आवश्यकता है।

परमेश्वर के परिवार का हिस्सा (सदस्य) बनने के लिए, तो निम्नलिखित, घोषणा करें हे स्वर्गीय परमेश्वर पिता, आपको धन्यवाद कि आपने प्रभु यीशु के कूस पर मेरे लिए मरने हेतु भेजा। मैं आपसे मांगता हूं कि मेरे सारे पापों कि आप क्षमा करें। मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूॅ और अपने मुॅह से अंगीकार करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर के पुत्र हैं और मेरे उध्दारकर्ता हैं और प्रभु हैं।

प्रमेश्वर पिता, मेरे उध्दार के लिए आपका धन्यवाद और धन्यवाद कि अब मैंने आपके परिवार में नया जन्म पाया है । प्रभु यीशु के नाम में मै प्रार्थना करता हूं। आमीन।

छुटकारा : इसका क्या अर्थ है ?

परमेश्वर इब्रानियों 10:17 के अनुसार आपके पापों को क्षमा करते और भूल जाते हैं (फिर वह यह कहता है की,) मैं उन के पापों को, और उन के अधर्म के कामों को फिर कभी स्मरण न करूॅगा।

- आपका मानव आत्मा पाप में मरा हुआ था अब वह परमेश्वर में जीवित है ।
- अब आप परमेश्वर के राजकीय परिवार में सारे हक्कों–अधिकार सौभाग्य और परमेश्वर की एक संतान के नाते जबाबदारीयों के साथ गोद (अपनाए) लिए गए हैं।

यूहन्ना 14:26 परमेश्वर हमारे सहायक और शिक्षक होंगे प्रभु यीशु के वचन परंतु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है। वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

न्याय (पापमुक्ति, न्यायोचित ठहराया जाना) तुरन्त हो जाता है उसी घड़ी जब परमेष्वर हमें आत्मिकरीति से जीवीत कर देते हैं । हम छुडाए और धर्मी (निर्दोष) ठहराए गए हैं । हमारा पदस्थान बदल गया है और प्रभु यीशु का लेखा लागू किया गया, मानों हमने कभी पाप नहीं किया।

आपकी स्वतंत्रता में मसीह में आपकी पहचान (एकिकरण) को समझना अत्यन्त आवश्यक है ।

मसीह में मैं कौन हूं (फ्रिडम इन क्राईस्ट मिनिस्ट्रिज) की ओर से, डॉ. नील टि. एण्डरसन

www.ficm.org

मैं स्विकार किया गया हूँ ....

युहन्ना 1:12	मैं परमेश्वर की सन्तान हूँ ।
युहन्ना 15:15	मैं मसीह का मित्र हूँ ।
रोमियो 5:1	मैं न्यायोचित (निर्दोष) ठहराया गया हूँ ।
1 कुरिन्थियों 6:17	मैं प्रभु के साथ एक हो (जुड) गया हूँ और मैं उनके साथ एक आत्मा हूँ।
1 कुरिन्थियों 6:19–20	मैं एक कीमत देकर खरीदा गया हूँ और मैं परमेश्वर का हूँ ।
1 कुरिन्थियों 12 : 27	मैं मसीह की देह का अंग (सदस्य) हूँ।
ईफिसियों 1:1	मैं एक संत हूँ ।
ईफिसियों 1 : 5	मैं परमेश्वर की सन्तान के रूप में गोद लिया (लेपालक) गया हूँ ।
इफिसियों 2 :18	पवित्र आत्मा के द्वारा मेरी सीधे परमेश्वर के पास तक पहुँच है ।
कुलस्सियों 1 : 14	मैं छुड़ाया गया हूँ और मेरे सारे पापों की क्षमा हो गई है ।
कुलस्सियों 2 : 10	मैं मसीह में पूर्ण हूँ ।

मैं सुरक्षित हूँ। .....

रोमियों 8 : 12	मैं सर्वदा के लिए दोषारोपण से मुक्त हूँ। ।
रोमियों 8 : 28	मुझे पूर्ण निश्चय है कि सारी बातें भलाई ही उत्पन्न करती हैं ।
रोमियों 8 : 31	मैं मेरे विरूध्द लगाए जाने वाले किसी भी आरोप से मुक्त हूँ ।
रोमियों 8 : 35	मैं परमेष्वर के प्रेम से अलग नहीं किया जा सकता ।
2 कुरिन्थियों 1:21:22	मैं परमेश्वर के द्वारा स्थापित, अभिषिक्त और मुहरबध्द किया गया हूँ ।
कुलूस्सियों 3:3	मैं मसीह के साथ परमेश्वर मैं छिपा हुआ हूँ ।
फिलिप्पियों 1:6	मुझे पूरा निश्चय व भरोसा है कि जो अच्छा काम परमेष्वर ने मुझ में आरंभ किया ।
फिलिप्पियों 3:20	मै स्वर्ग का एक नागरिक हूँ।
2 तिमुधियुस 1:7	मुझे भय की आत्मा नहीं दी गई है परन्तु सामर्थ की, प्रेम की और संयम (समर्थ पूर्ण) बुध्दि दी है ।
इब्रानियो 4 : 16	मुझे आवश्यकता के साथ अनुग्रह और दया प्राप्त होती है ।
1 युहन्ना 5:18	मैं परमेश्वर से जन्मा हूँ, और वह दुष्ट मुझे छू नहीं सकता ।

मैं महत्वपूर्ण हूँ .....

मति 5:13:14	मैं पृथ्वी का नमक और प्रकाश हूँ ।
युहन्ना 15:5	मैं सच्ची दाखला की डाली हूँ, प्रभु के जीवन का एक स्रोत हूँ ।
युहन्ना 15:16	मैं फल उत्पन्न करने के लिए चुना और नियुक्त किया गया हूँ ।
1 कुरिन्धियों 3:16	मैं परमेश्वर का हूँ ।
2 कुरिन्धियों 5:18	मैं परमेश्वर के लिए मेल–मिलाप का सेवक हूँ।
इफिसियों 2:6	मैं स्वर्गिय क्षेत्र में मसीह के साथ बैठाया गया हूँ
इफिसियों 2:10	मैं परमेश्वर की हस्तकला हूँ।
इफिसियों 3:12	मैं परमेष्वर के पास स्वतंत्रता और भरोसे के साथ पहुँच सकता हूँ ।
फिलिप्पियों 4:13	मैं मसीह के द्वारा जो मुझे बल देता है सब कुछ कट सकता हुँ ।

क्षमा

- क्षमा की व्याख्या : दूसरे को उसकी गलती होने, कम घटी के, और चूक होने के बावजूद, भी माफ करने का कृत्य ।
- क्षमा की व्याख्या : क्षमा करना, माफ करना, किसी को बचाना, किसी को उसके अपराध के बोभ से मुक्त करना ।
- ठीक जिस तरह परमेश्वर ने हमें क्षमा किया है, हमें आज्ञा दी गई है कि दूसरों को क्षमा करें।

क्षमा के संबंध में प्रभु यीशु के वचनः

मत्ती 6:14 इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध ..... करो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें .....

मरकुस 11:25–26 "और जब कभी तुम खडे हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो ..... करो : इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध ..... करे ।

और यदि तुम ..... न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारे अपराध ..... न करेगा ।

और यदि तुम ..... न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारी अपराध ..... न करेगा ।

लूका 6:27–28 "परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूँ, कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो : जो तुम से बैर करें, उन का भला करो । जो तुम्हे स्राप दे, उस को आशिष दोः जो तुम्हारा अपमान करें उस के लिये प्रार्थना करो।

लूका 10:27 "उसने उत्तर दिया, कि तू प्रभू अपने परमेश्वर से अपने सारे मन (हृदय) और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुध्दि के साथ प्रेम रखें और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें ।"

लूका 6:37 " दोष मत लगाओ, तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जायेगाः दोषी न ठहराओं तो तुम भी दोषी नहीं ठहराये जाओगेः ..... करो तो तुम्हारी भी ..... की जायेगी ।

मत्ती 18:21–22 " तब पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे ..... करूं, क्या सात बार तक ? यीशु ने उस से कहा, मैं तुम से यह नहीं कहता कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक ।"

कड़वाहट :

अक्षम्यता को थामे रहने का चुनाव कड़वाहट का कारण बनता है ।

कडवाहट क्षयकारी होता है ।

ठीक उसी तरह जब एक बैटरी का सिरा नष्ट हो जाता या सड़ जाता है, तो उसमें से विद्युत प्रवाहित नहीं हो सकती, अक्षम्यता हमारे द्वारा प्रवाहित होने वाली परमेश्वर की सामर्थ्य को बदल देती है ।

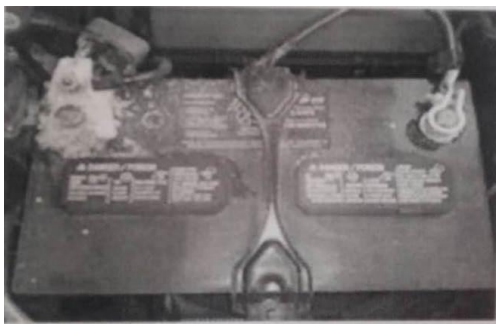

क्षयकारी : व्याख्याः योग्यता रखना या नश्वरता या सड़ाहट का कारण बनने की मनोवृत्ति होना । एक नश्वर तेजाब । धीरे–धीरे विनाशकारी : नियममितरूप से हानीकारकः लगातार खतरनाकः और हमें मार डालना चाहता है । कड़वाहट नष्ट करेगा और भौतिक देह को रखा जाएगा ।

क्षमा :

अक्ष्यम्यता पाप है । मन में अक्ष्यमता को रखना सम्भवतः पापा का सबसे सामान्य क्षेत्र है और विश्वासियों में अवज्ञा (आज्ञा न मानना) क्षमा के विषय में यह निर्देष, सीधे प्रभु यीशू के पास से आ रहा है, यह ऐसा एक क्षेत्र है जिसे कई विश्वासी अनदेखा करते हैं, यह सोचते हैं कि यह उनके लिए नहीं है या उन पर लागू नहीं होता । यद्यपि परमेश्वर का वचन एकदम स्पष्ट है ।

- जैसे हमारी क्षमा हूई है उसी तरह हमें क्षमा करना है ।
- अक्ष्यमता और दुर्व्यवहार का अपने हृदय में थामें रखना हमारी चंगाई और परमेष्वर की आशिषों को रोकेगा ।
- दुर्व्यवहार को अपने हृदय में पकड़ न बनाने देने का चुनाव करने के द्वारा हमारे पास कुछ भी ऐसा नहीं होता है, जिसकी क्षमा कि जाए।
- जिस तरह इफिसियों 4:32 में वर्णित है, उसी तरह अच्छे, कोमल और क्षमा करने वाले बनें: और एक दूसरे पर कृपया और करूणामय है। और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।
- बिस्तर पर क्रोधित होकर न जाएं, यह इफिसियों 4:26–27 में पाया जाता है: क्रोध तो करो, पर पाप मत करो : सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे। और न शैतान को अवसर दें।
- मत्ती 15:21–28 और मरकुस 7:24–30 में कि कहानी पढ़े, एक कनानी स्त्री के विषय में है । उसने एक चुनाव किया कि वह बुरा नहीं मानेगी और उसकी बेटी चंगी हो गई ।

उस कनानी स्त्री के पास अपमानित (बुरा मानते) होने के कारण थे क्योंकि : • उसे अनदेखा किया गया • अस्विकार किया गया • बहिष्कृत • अपमानित कि गई फिर भी उसने एक चुनाव किया – वह ठोकर (बुरा) नहीं खाएगी । क्योंकि उसने सही चुनाव किया, वह एक आश्चर्य कर्म की गवाह बनी और अपनी बेटी को स्वस्थ देखा।

क्षमा की एक गवाही : 1

एक मसीही महिला और उसकी मसीही बेटी थी । उस बेटी ने एक ऐसे पुरूष से विवाह किया जो परमेश्वर की सेवा नही करता था। मॉ अपने दामाद में केवल त्रुटियॉ ही देखा करती थी। मॉ अपने दामाद से कभी अच्छा नही बोलती थी और लगातार उसके बारे में शिकायत करती । मॉ

के नकारात्मक शब्दों के कारण उनके परिवारिक रिश्ते टूट गए । वह मसीही मॉ पूर्णतः "इस पुरूष को नापसन्द" को उचित अनुभव करती थी।

तकरिबन एक वर्ष हुए होंगे उन्हें देखे बिना, उन्होंने धन्यवाद के भोजन पर आमंत्रण स्वीकार किया । परमेश्वर उसकी मनोवृत्ति और पाप पर काम कर रहे थे । रात्रि भोजन पर उस दिन उसने उस व्यक्ति में कुछ अच्छी बातों पर ध्यान दिया, उसने उसकी बेटी के बैठने के लिए कुर्सी खीची, उसने अपनी पत्नी से पूछा की भोजन के दौरान उसे किसी वस्तु की आवश्यकता है क्या और रात्रि के भोजन के पश्चात उसने वास्तव में उस मेज को साफ भी किया।

जब मॉ – बेटी रसोई घर में अकेले थे, तब उस मॉ ने बेटी से कहा कि उसने उसके पति को कभी भी इतना अच्छा व्यवहार करते नहीं देखा। बेटी ने दृढ़ता, और शान्ति से कहा : "आपने कभी भी उनमें कोई अच्छाई देखी ही नहीं क्योंकी आपने कभी भी उन्हें प्रेमभरी दृष्टी से नहीं देखा । आपने उनसे घृणा कि और मैनें उनसे विवाह किया इस लिए मुझसे अप्रसन्न थी। मॉ वे एक अच्छे व्यक्ति है । बेटी रसोई –घर से चली गई ।

जब वह मॉ वहॉ अकेली थी, बर्तन धो रही थी, तभी परमेश्वर की ओर से कार्यलता उससे टकराई । उसने परमेश्वर के सामने पश्चाताप किया और उन बुरे वचनों के लिए जो उसने इस व्यक्ति के बारे में कहे थे, अपनी बेटी और उसके पति के प्रति प्रेम की कमी और अपनी अवज्ञा और पाप के लिए परमेश्वर से क्षमा, मांगी ।

वह मॉ बैठक कक्ष में गई और अपनी बेटी और दामाद के सामने पश्चाताप किया और अपने पाप के लिए उनसे क्षमा मांगी । उन्होंने केवल उसे क्षमा ही नहीं किया, परन्तु उस धन्यवाद के भोजन के बाद उसको दामाद ने फिर से परमेश्वर की सेवा करता आरंभ किया।

क्षमा की एक गवाही : 2

एक ग्रीष्मकाल की सुबह एक व्यापारी की एक भावी ग्राहक के साथ एक मुलाकात नियुक्त थी जो सुबह 10.30 बजे निकटवर्ती देश की वीरान सड़क पर थी जहॉ वह व्यापारी रहता और काम करता था। जब वह उस मुलाकात के स्थान की ओर यात्रा कर रहा था, उसे एक अत्यन्त विचित्र अनुभूति हो रही थी ।

जब उनकी मुलाकात हुई, उस भावी ग्राहक ने कहा कि उसे उसकी कार के पास वापस जाना है और एक बड़े से लिफाफे के साथ जिसमें कुछ था, लौट आया । उसे लिफाफे में एक बंदूकं थी और उसने इस व्यापारी पर आठ बार गोलियॉ चलाईं उसे मरने के लिए छोड़कर वह घटना स्थल से चला गया । वह व्यापारी अभी भी चैतन्य था, तोभी उसने मरने का अभिनय किया, जब तक उसने हमलावार (गोली चलानेवाले) की गाड़ी की आवाज को दूर जाते सुना।

उस व्यापारी ने अपने कार्यालय में फोन किया और उन्होने यह सोचकर कि वे उनके ही देश में है सहायता के लिए 911 को फोन कर बुलाया (उन्हें तो पडोसी देश में गोली मारी गई थी) और इसी कारण कोई सहायता नही पहुँची वे चिकित्सा – सहायक गलत स्थान पर चले गए।
उन्होंने स्वयं ही उपचार के लिए अस्पताल तक गाडी चलाई। वर्तमान समय में उन्हे शारीरिक चुनौतियॉ है क्योंकि अब भी उनके शरीर में गोलियॉ फसी है ।
अस्पताल से घर वापस आने के बाद, बहुत अधिक भय छाया हुआ था क्योंकि कोई भी नहीं जानता था कि यह घटना क्यों घटित हुई और कोई अन्य भी ऐसा ही, प्रयास कर सकता था । जो भी हो, जैसे–जैसे महिने आगे बढते गए वह गोली चलानेवाला अपराधी घोषित किया गया और केंद्र में भेज दिया गया है।
एक रविवार को क्लोसिया में एक कैदखाने में जाकर सेवा करनेवाले सेवक ने संदेश दिया और सभा के अन्त में उन्होने आमंत्रण दिया उन लोंगो को जो किसी के विरोध में अक्ष्यम्यता को थामे हुए हैं कहा कि वे आगे आ जाए। वह व्यापारी सामने गया और उस गोली चलाने वाले को परमेश्वर को सौंप दिया।

उस समय इस व्यापारी ने उस सेवक से निवेदन किया की वे इस गोली चलानेवाले से मुलाकात करें और उसे इनकी ओर से उसको क्षमा का संदेश पहुँचा दें क्योंकि वह सेवक उस बन्दीगृह में मुलाकात करने के लिए नहीं जा पाया तो उन्होंने इस गोली चलाने वाले के लिए एक पत्र में समझाकर लिख भेजा कि इस व्यापारी ने क्या किया है ।
एक पत्र सेवक को वापस (उत्तर में) भेजा गया जिसमें इस व्यापारी के बारे में, जिसे उसने आठ गोली मारी थी, अपनी भावना व्यक्त करते हुए, जो गोली चलानेवाले ने लिखा, उस पत्र के कुछ अंश :

- "मुझे एक बड़ी मुक्ति प्राप्त हुई यह जानने के बाद भी जिस व्यक्ति के विषय में मैंने यह सोचा वह कम से कम मेरा तो सबसे बुरा शत्रु है, वही मेरे लिए प्रार्थना कर रहा था ।
- इस दण्ड के बारे में मुझे कोई कटुता (शिकायत) नहीं और इसके विपरीत मैं ने यह पाया है कि इसने मेरे जीवन को झूठ बोलने, धोखा देने, प्रभु को पाने और सही मार्ग पर चलने

से पूर्व सांप की तरह रेंगने को मैंने विकसित कर लिया था उन से 180 के कोण में बदल दिया ।

- मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे उस व्यपारी के मेरे प्रति क्षमा की जानकारी प्रदान की ।

यहॉ छुटकारा पाए हुए गोली चालक के पत्र के कुछ अंश जो उसने व्यापारी को भेजे थेः

- मेरी इच्छा है कि मै आपको समझा सकूँ कि मैंने कैसे ऐसा घृणित कार्य किया, परन्तु मैं तो इसे स्वयं को भी समझाने में असमर्थ हूँ।
- मुझे मालूम नहीं कि मैं अपने दुःख को कैसे व्यक्त करू उस पीड़ा के लिए जिसे आपने सहा और वह क्लेश जिसका अनुभव आपके परिवार ने किया । मेरे विचार से जो एकमात्र तरीका है इस दुःख को व्यक्त करने का तो वह यह है कि मैंने जो कुछ आपकी दुनिया के लिए किया है उसके लिए मैं कितने गहरे खेद में हूँ। यदि कोई ऐसा काम जो मैं आपके लिए कर सकूं ताकि आपके और आपके परिवार के साथ जो गलत काम मैंने किया उसे ठिक कर पाऊँ, मैं पर्याप्त से अधिक आभारी रहूंगा की, ऐसा करने का प्रयास करने का अवसर मुझे मिला।

  और अतिरिक्त गवाहियों के लिए कृपया वेबसाईट पर जाएं : rcministry.org

क्षमा

क्षमा हमें भूतकाल की बन्धुवाई में जीवन जीने के बजाए भविष्य के लिए स्वतंत्रता का जीवन जीने की अनुमती प्रदान करती है ।

मरकुस 11:25–26 प्रभु यीशु के शब्दःऔर जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो, इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे ।।

और यदि तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी जो स्वर्ग में है, तुम्हारा अपराध क्षमा न करेगा ।

इफिसियों 4:32 और एक दूसरे पर कृपालुःऔर करूणामय हो, और जैसा परमेश्वर ने मसीह में । तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो ।

यदि आप क्षमा न करने का चुनाव करते हो, तो आप बन्धुवाई में बने रहोगे और उत्पीड़ित रहोगे।

मत्ती 7: 1–2 दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए क्योंकि जिस प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। भजन 50:6 और स्वर्ग उसके धर्मी होने का प्रचार करेगा क्योंकि परमेश्वर तो आप ही न्यायी है । वे बाधाएँ जो हमारे क्षमा करने के चुनाव में रूकावट बन सकती है :

1. एक दर्द भरी आहत या अन्याय । स्मृतियॉ इतनी पीड़ादायक हो सकती हैं कि क्षमा करना असंभव सा लगता है । प्रभु यीशु टूटे हृदयों को चंगा करने आए थे । प्रभु यीशु पर भरोसा रखें कि आपको वे चंगा कर दे । यषायाह 61:1
2. जिस व्यक्ति के द्वारा हम आहत हुए हैं हम प्रतिक्षा करते है कि वह क्षमा मांगे । चूँकि वह क्षमा मांगना कभी हो ही नहीं, हम पाप में बने रहते और क्षमा न करने के अपने चुनाव के साथ बन्धे रहते हैं।
3. वह व्यक्ति लगातार मुझे चोट पहुँचाता रहता है । प्रभु यीशु ने हमें सिखाते हैं कि हमें 490 बार एक दिन में क्षमा करता है । मत्ती 18:21–22
4. यह सोचना कि उस व्यक्ति को क्षमा करना ठीक वैसा ही होगा जैसे जो उन्होंने किया है उस के लिए उन्हें छोड़ देना। परमेश्वर हमसे यह नहीं कह रहे कि छोड़ दो या ऐसा दिखावा करो कि आप आहत नहीं हुए हैं ।क्षमा करना छोड़ देना (ध्यान न देना, बुरा न मानना) नहीं है, यह एक चुनाव है कि उस अगले व्यक्ति को हमारे दण्ड (न्याय) से मुक्त करना और इसके स्थान पर परमेश्वर का न्यायी बनने देना ।
5. वे क्षमा के योग्य नहीं है । हम में से कोई भी क्षमा के योग्य नहीं है । हमारे पाप मसीह यीशु में क्षमा किये गए है । प्रभु यीशु ने कीमत चुकाई है । यह हमारा चुनाव है कि जो प्रभु यीशु ने कहा है उस के आज्ञाकारी बनें: जैसे तुम्हें क्षमा किया गया है। वैसे दूसरों को क्षमा करें।

अच्छी खबर यह है कि, जो हम स्वयं नहीं कर सकते, उसे हम मसीह यीशु के द्वारा कर सकते हैं । यह विश्वास करें कि जब परमेश्वर आपसे कुछ करने के लिए कहते हैं तो वे उसे पूरा करने के लिए लगनेवाली शक्ती आपके लिए उपलब्ध कराते हैं ।

मैं मसीह के द्वारा जो मुझे बल देता है सब कुछ कर सकता हूँ।

फिलिपियों 4:13 इससे पहले कि हम परमेश्वर के सामने अपने " मैं क्षमा करने का चुनाव करता हूँ की सूची " के साथ आए पृष्ठ 10 से अध्याय 1, कृपया सहजकर्ता (मददगार) के पीछे प्रार्थना दोहराएः

" स्वर्गीय पिता, मैं आपसे मांगता हूँ की आप मेरे हृदय को खोजें (जॉचे) और मुझे ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को दिखाइये (चाहे जीवित हो अथवा मर गया हो), संस्था या राजनीतिक दल, कोई कलीसिया या फिरका या कोई परिस्थिति जिसके प्रति सम्भावित अक्षम्यता हो । प्रभु यीशु के नाम मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन !

(मै क्षमा करने का चुनाव करता हूँ कि सूची पासबान रॉन ने कहा अध्याय 1 पृष्ठ 25 वीडियो पर)

क्षमा

यदि प्रभु ने किसी भी अन्य व्यक्ति, संस्था या परिस्थिति का नाम प्रगट किया है, जिसके प्रति आपमें अक्षम्यता हो, कृपया कुछ मिनिट ले लिजिए ताकि आप उन्हें " मै क्षमा करने का चुनाव करता हूँ सूची " में लिख लें जो अध्याय 1, पृष्ठ क्रं.10 पर है । जिससे आप भी सम्मिलित हों और यदि लागू होता होगा तो परमेश्वर भी।

सहजकर्ता (मददगार) के पीछे दोहराएः

"परमेश्वर पिता मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ उन प्रत्येक व्यक्तियों संस्था या राजनीतीक दल, कोई कलीसिया या फिरका, या कोई परिस्थिति जिनके प्रति मैंने अक्षम्यता बनाए (थामें) रखी है । परमेश्वर पिता आज अपनी इच्छा के एक कृत्य के रूप में और आपके वचन के प्रति आज्ञाकारिता में प्रत्येक व्यक्ति, संस्था, परिस्थिति जिसने मुझे आहत किया और रूकावट डाली, उन्हें क्षमा करने और मुक्त करने का चुनाव करता हुँ । मैं उन्हे आपकी ओर मुक्त करता या आपके हाथों में सौपता हूँ। प्रभु यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।"

अब अपना पेन (कलम) या मार्कर पेन ले लीजिए और परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता के कार्य के रूप में नाम के सामने काट का निषान (क्रास) लगाएं और स्वयं से कहें, "मैं क्षमा करने को चुनता हूँ ।

अपना हाथ अपने दिल पर रखें और यह प्रार्थना करें, मेरे पीछे दोहराऍ : " परमेश्वर पिता, मैं आपको धन्यवाद देता/देती हूँ की जो दुर्व्यवहार, अस्विकरण, अन्याय, सताए जाते, क्रूरता और

दर्द जो दूसरों ने मुझे दिए थे उससे आपने मुझे चंगा किया है । चोटो को चंगा करने के लिए धन्यवाद ! प्रभु यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ । आमीन!

आज के बाद से, जैसे ही परमेश्वर आप पर किसी को प्रगट करते हैं जिन्हे क्षमा नहीं किया है, अपनी, इच्छा और परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारिता के कृत्य के रूप में :

1. मैं उस व्यक्ति, संस्था या अन्य को क्षमा करने का चुनाव करता हूँ।
2. इस साधारण प्रार्थना को करें :

   " परेमश्वर पिता मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ उन प्रत्येक व्यक्तियोंः संस्था या राजनीतिक दलः कोई कलीसिया या फिरकाः या कोइ परिस्थिती जिनके प्रति मैने अक्षम्यता बनाए (थामें) रखी है । परमेश्वर पिता आज अपनी इच्छा और आपके वचन के प्रति आज्ञाकारिता के एक कृत्य के रूप में, मैं उन्हे क्षमा करने और मुक्त करने का चुनाव करता हूँः ..... जिसने मुझे आहत किया और रूकावट डाली। मैं उसे आपके हाथ में छोड देता हूँ । प्रभु यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ । आमीन।"

जैसे ही प्रभु आप पर उन लोगों को प्रगट करते हैं जिन्हे आपने चोट पहुँचाई, ठोकर खिलाई या बदनामी की होः

जब उचित हो, उनके पास जाएं और उनसे उस चोट या ठोकर जो आपके कारण लगी हो, उसके लिए क्षमा मांगे ।

(ध्यान दीजिए हमने यहॉ उचीत उपयुक्त) शब्द को रखा है । किसी के भी पास जाने में जल्दबाजी न करें । आपके पास सामान्य ज्ञान और परमेश्वर की बुध्दी होनी चाहिए। जैसे–जैसे हम आगे बढेंगे और आप सम्पूर्ण तंदूरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग परिसंवाद को पूर्ण करते हैः जैसे–जैसे आप परमेश्वर के साथ समय बिताते हैं वे आपको प्रगटिक ज्ञान प्रदान करेंगे जो आपका मार्गदर्शन करेगा की अब कौन सा कदम उठाना चाहिए। किसी भी रूप में अपमानित किया (अपशब्द करे)– देह, प्राण और आत्मा, आपको चाहिए कि आप परमेश्वर के पास जाएं ना कि व्यक्ति के पास)।

उनके लिए जिन्हें आपने क्षमा किया है, वे लोग जिन्होने आपको ठोकर खिलाई और चोट पहुँचाई, उन्हें आपके पास आने की आवश्यकता नही कि वे आकर आपसे क्षमा मांगे इससे पहले कि आप स्वतंत्रता में जीवनयापन करनें आरंभ करें । अब आप मसीह में स्वतंत्र हैं ।

अपने भूतकाल की नकारकता में जीवन न जीयें।

समय की एक व्याख्याः जब आपका भूतकाल आपके वर्तमानकाल का हिस्सा बन जाता है तो यह आपके भविष्य को प्रभावित करेगा । " यदि हमारे भूतकाल की नकारात्मक बातें लगातार हमारे वर्तमानकाल का हिस्सा बनी रहती है । तब यह हमारे भविष्य का विनाश करेगा। हमें चाहिए की हम अपने भूतकाल से मुक्त रहना चाहिए ताकि वर्तमान में हमें स्वतंत्रता मिल और परमेश्वर की दृष्टि से भविष्य को देखे! पासबान रॉन शोनहर

जीवन के वचन की प्रार्थना

स्वर्गीय पिता, आपके वचन के उपहार के लिए उस उपहार के लिए जो आपका पुत्र है और उध्दार के लिए आपका धन्यवादः और धन्यवाद कि आपने मेरे जिवन में अपनी प्रतिज्ञा को बोया। परमेश्वर पिता, मैनें जो प्रत्येक स्थान पर ऐसे शब्द बोए हैं जिसने किसी के जीवन में हानी को उत्पन्न किया उसके लिए पष्चाताप करता हूँ । मुझे क्षमा करे प्रभु। जहॉ कही भी संभव होगा और जब भी उपयुक्त होगा मैं क्षमा मांगुॅगा। प्रभु , मैं उस बात के लिए भी पछताता हूँ कि मैने जो प्रत्येक शब्द स्विकार किये जो आपके नही थे, प्रत्येक शब्द के लिए जो आपकी इच्छा और आपके वचन की सहमती में नही थे। मुझे क्षमा करें प्रभु।

अब मै उन्हे अपने हृदय में से बाहर निकालने का चुनाव करता हूँ । मै अपने जीवन के लिये आपके वचन, आपके प्रेम और आपकी इच्छा को मैं स्विकार करूंगा।

परमेश्वर पिता, कृपया मुझे प्रत्येक शब्द जो मैं बोलता हूँ उसके प्रति मुझे संवेदनषील बनाएं, ताकि प्रत्येक शब्द आपको प्रसन्न करें और आपकी सन्तान की उन्नती करे । इस पल के आगे से मैं जीवन के वचन बोलने का चुनाव करता हूँ । प्रभु यीशु मसीह के नाम में : आमीन।

गृह–कार्य

अध्याय 2, कृपया निम्नलिखित रिक्त स्थानों को भरें ।

1. इब्रानियों 10:17 के अनुसार, एक बार जब आप आप परमेश्वर के राज–परिवार का हिस्सा बन गए, वे केवल सारे पापों को ही क्षमा नही करते, परन्तु इसके साथ ही वे ..... भी नही करते ।
2. क्षमा (क्षम्यता) की व्याख्याः दूसरे को उसकी गलती होने, कमी घटी और चूक होने के बावजूद भी ..... का कृत्य है ।
3. मत्ती 18:21–22 के अनुसार, हमें एक दिन में कितनी बार दुसरों के पापों और अपराधों को क्षमा करना है ? .....

4. अक्षम्यता को थामें रहने से ..... होती है ।
5. अक्षम्यता को थामें रखना ..... है।
6. दुर्व्यहार को अपने दिल को जकडने न देने के चुनाव के कारण हमारे पास ऐसा कुछ नही होता है जिसकी ..... किया जाए।
7. इफिसियों 4:26–27 के अनुसार ..... के साथ बिस्तर पर न जाएँ। क्योकी आपका शरीर एक रसायन उत्पन्न करेगा जो आपको मार डालेगा।
8. क्षमा हमें अनुमती देती है की हम भविष्य में ..... का जीवन जीये बजाएँ भूतकाल की बन्धुवाई में जीने के ।

गृह–कार्य कार्यभार

इस अध्याय में पाए जानेवाले शास्त्रभागों के पढें, उसे सुनें, जानें और आज्ञा मानें (उसके अनुसार करें) परमेश्वर के वचन को जानें, पवित्रशास्त्र के साथ घनिष्टता से परिचित हो जाए और आप और अधिक परमेश्वर के साथ घनिष्टता से परिचित हो जाओगे।

- पृष्ठ क्रं.13 पर **" मैं मसीह में कौन हूँ "** वाले शास्त्रभागों को पढे और उस पर प्रकाशन प्राप्त करें।
- पृष्ठ क्रं.19 पर **"जीवन के वचन वाली प्रार्थना"** को प्रतिदिन दोहराएं ।
- लेखक : हेनरी डब्ल्यू राईट द्वारा रचीत पुस्तक **"ए मोर एक्सलन्ट वे"** (एक और अधिक उत्तम मार्ग) 2009 संस्करण के पृष्ठ क्रं.1–29 को पढें।
- उत्पत्ति अध्याय 3 को पढें और उससे सुपरिचित हो जाएं।

कृपया हमारे वेबसाईट : rcministry.org पर जाएं। साईन इन करें । अध्याय 2 पर क्लिक करें। वहॉ आप इस अध्याय को जो 2016 में रेकॉर्ड किया गया था उसे सुन सकेंगे या देख पांऐगे । यदि आपने अभी तक साईज अप नही किया है, तो निर्देष के लिए पृष्ठ क्रं.9 को देखे। यदि आप नीचे कि ओर सरकारओगे, "ए मोर एक्सलन्ट वे" से आप गृह–कार्य पृष्ठ को पढते हूए सुन सकेंगे। उपरोक्त बातों को जब पूरा सुन चुके, तो कृपया नीचे सरकाकर अध्याय 2 के प्रश्नोत्तरी पर आ जाएं, प्रश्नों के उत्तर दें और फिर उत्तर को जमा करें (सब्मीट एनसर) पर क्लिक करें । सभी अध्यायों के 5 "ऑनलाईन" प्रष्नों के उत्तर देना एक दिन की सेवकाई पुनर्स्थापना चंगाई और स्वतंत्रता के एक दिन में उपस्थित होने के लिए एक आवश्यकता है । आपके परिणामों की सूचना हमें इलेक्ट्रानिक तरीके से प्राप्त हो जाएगी ।

इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र भाग के साथ "दैनिक अनुशासन" को पढे और उससे परिचित हो जाएं ।

दैनिक अनुशासन

अपने पुराने व्यक्ति को उतार डालो, अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और अपने नये व्यक्ति को पहन लो ।

इफिसियों 4 : 22–24

"अपने पहले के स्वभाव जो आपके पहले के जीवन को चरितार्थ करता है, उसे स्वंय उतार डालो (उतार दो, निकाल दो, फेंक दो) जो अभिलाषाओं और इच्छाओं के द्वारा जो भ्रामक बातों से उत्पन्न होता है उसके द्वारा भ्रष्ट होता जाता हैः और लगातार अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और नये स्वभाव (पुनःसृना हुआ स्वंय) को पहन लो जो परमेश्वर के स्वरूप में (परमेश्वर के समान) सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है । " एम्पिफाईड बायबल अनुवाद संसार के सोचने के तरीके सदृश्य न बनो : परमेश्वर के वचन में अध्ययन करो और अपनी बुध्दि की आत्मा को नया करो ।

रोमियो 12:2

" और इस संसार के सदृश्य न बनो " परन्तु तुम्हारी बुध्दी के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिध्द इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

शारीरीक बुध्दी (शरीर पर मन लगाना) परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता है ।

रोमियो 8:6–7

"शारीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।"

आत्मा में चलने का चुनाव करें।

गलतियों 5:25

"यदि हम (पवित्र) आत्मा के द्वारा जीवित है, तो आत्मा के अनुसार चले भी। यदि पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा जीवन परमेश्वर में है, तो आओ आगे बढ़ते हुए उसके अनुसार चलें, हमारा आचरण आत्मा के द्वारा नियंत्रीत हो।

– एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

विचारो को कैद कर लो।

2 कुरिन्थियों 10 : 4–6

"क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरीक नही, परन्तु गढ़ो को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है । सो हम कल्पनाओं (वादविवाद) को, और हर एक ऊंची बात को, जो स्वंय परमेष्वर की पहिचान (ज्ञान) के विरोध में उठती है, खण्डन करते है, और हर एक भावना (विचार) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं..... ।"

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें ।

2 तीमुथियुस 2:15

"आपने आप को परमेश्वर के ग्रहण योग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो ।

आपका खजाना एक वस्तु या एक व्यक्ति है जिसका मूल्य या किमत अत्यन्त अधिक है । खजाने का अर्थ यह भी हो सकता है कि एक किमती के रूप में बडी मूल्य, दुर्लभ या मंहगा। आपका खजाना काहॉ है ? मत्ती 6:21

"क्योंकि जहॉ तेरा धन है वहॉ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय 3

मूल–भूत सत्य

अध्याय दो के गृह–कार्य पर पुनर्विचार

1. इब्रानियों 10:17 के अनुसार एक बार जब आप परमेश्वर के राज –परीवार का हिस्सा बन गए तब वे केवल सारे पापों की ही क्षमा नही करते, परन्तु इसके साथ ही वे इसे फिर कभी स्मरण भी नही करते।
2. क्षमा क्षम्यता की व्याख्या : दूसरे को उसकी गलती होने, कमी–घटी और चूक होने के बावजूद भी क्षमा करने का एक कृत्य है ।
3. मत्ती 18:21–22 के अनुसार, हमें एक दिन में कितनी बार दूसरों के पापों को और अपराधी की क्षमा करना है ? 7X 70 = 490 बार एक दिन में ।
4. अक्षम्यता को थामे रहने से कड़वाहट होती है ।
5. अक्षम्यता को थामें रखना एक पाप है ।
6. दुर्व्यवहार को अपने दिल को जकड़ने न देने के चुनाव के कारण हमारे पास ऐसा कुछ नही होता है जिसकी क्षमा कि जाए।
7. इफिसियो 4:26–27 के अनुसार क्रोध के साथ बिस्तर पर न जाएँ, क्योंकी आपका शरीर एक रसायन उत्पन्न करेगा जो आपको मार डालेगा ।
8. क्षमा हमें अनुमती देती है कि हम भविष्य में स्वतत्रंता का जीवन जीये, बजाए भूतकाल की बन्धुवाई में जीने के ।

जॉच–सूची

आप अपने गृह कार्य कार्यभार को किस तरह कर रहे है ।

सम्पूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग–परिसंवाद के प्रति आपकी वचनबध्दता क्या है। इसे समझ लिजिए:शत्रु चोरी करने हत्या करने और नष्ट करने का प्रयास करेगा युहन्ना 10:10अ

कुछ तरीके है जिनके द्वारा शत्रु ऐसा करता है कि आपका ध्यान भटकाता है और आपको इन से रोकता है ।

- प्रत्येक सत्र में उपस्थित होने से या जिन बातों को (सिखने) से चूक गए है उसे पूर्ण करने से रोकता है ।
- अपना गृहकार्य करने से रोकता है ।
- अधिक समय प्रार्थना में परमेश्वर के साथ व्यतीत करने और परमेश्वर से प्रकाशन प्राप्त करने की खोज करने से रोकता है ।
- आनेवाले पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतत्रंता के दिन में सहभागी होने से रोकता है ।
- पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतत्रंता के दिन के बाद अध्याय 7–10 में प्रतिदिन जीवन यापन करते (चलने) के लिए उपस्थित होने से रोकता है ।

एक तरीका है जिसके द्वारा आप शत्रु का विरोध कर सकते है वह है कि आप उपरोक्त बातों को करने के प्रति वचनबध्द हो जाएं ।

मुल–भूत सत्य

1. सत्य क्या है ?

2. आप यह कैसे जान पाएंगे कि जो सत्य है वह वास्तव में सत्य है ?

3. क्या कोई संपूर्ण सत्य है ?

सत्य क्या है ? परमेश्वर – परमेश्वर के वचन की खास फूंका।

आपको संपूर्ण सत्य कहॉ मिलेगा ? बायबल।

युहन्ना 8:31–32 प्रभु यीशु ने कहा सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा । यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे स्वतंत्र करेगा ।

1. तीमुथियुस 2:4 हमें बता है कि परमेश्वर :..... यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उध्दार हो, और वे सत्य को भली भांती पहचान लें।
2. भजन 33:4 परमेश्वर के सारे कार्य सत्य में किये जाते है । क्योकी यहोबा का वचन सीधा है, और उसका सब का सच्चाई से होता है । इफिसियों 5:9 यह प्रकाश हमें सत्य प्रदान करता है । यह हमे परमेश्वर से साथ सीधा करता है और हमें अच्छा बनाता है । न्यू लाईन अनुवाद

3. युहन्ना 8:12 प्रभू यीशु ज्योती और सत्य है । एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद एक बार फिर प्रभू यीशु ने भीड़ को संबोधित किया । उन्होने कहा, " मैं जगत की ज्योति हूँ। वह जो मेरे पिछे हो लेता है वह अंधियारे में नही चलेगा, परन्तु उनके पास ज्योति होगी जो कि जीवन है ।

बायबल – अब तक का बताया हुआ सबसे महान सत्य और अब भी यह खुलता ही जा रहा है ।

महान चरित्र

- परमेश्वर पिता – सारी वस्तुओं का सृजनहार।
- परमेश्वर पुत्र, प्रभु यीशु – वचन, देह में परमेश्वर हमारे उध्दारकर्ता और प्रभु।
- परमेश्वर पवित्र आत्मा – वह एक जो उनके पास भेजे गए हैं , जो परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं– ताकि हमें सक्षम करें कि हम सब कुछ करें जो प्रभु यीशु ने किये और उससे अधिक (बड़े काम) करें ।

मनोहर नाटिका

- रचना – स्वर्गदूत और मनुष्य
- युध्द में दो राज्य
- परमेश्वर – पृथ्वी और स्वर्ग वह सब जो अच्छा है ।
- शैतान – पृथ्वी और नर्क झूठ और धोखा

वह रणभूमि आपकी बुध्दि है । नितिवचन 23:7 क्योंकी जैसा वह अपने मन में विचार करता है वैसा हि वह है ।

परमेश्वर के द्वारा बनाई रचना

यह सब परमेश्वर के साथ आरंभ हुआ । उत्पत्ति 1:1 आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टी की।

नर और नारी करके परमेश्वर ने अपने स्वरूप में सृजा । उत्पत्ति 1:26–28 फिर परमेश्वर ने कहा " हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ: और वे समुद्र की मच्छलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें । तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के

अनुसार उत्पन्न किया नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टी की। और परमेश्वर ने उनको आशिष दी : और उन से कहा, " फुलो–फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वर्ष में कर लो, और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो ।

वह सब बहुत अच्छा था– उत्पत्ति 1:31 तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है । तथा श्रम हुई फिर भोर हुआ । इस प्रकार छठवा दिन हो गया ।।

आप और मै एक दुर्घटना नही है । भजन 139:13–16 ओह हॉ, आपने पहले मुझे भीतर आकार दिया, फिर बाहर : आपने मुझे मेरी मॉ की कोख में रचा । मै आपको धन्यवाद देता हूँ, उच्च परमेश्वर – आप विस्मयकारी है ! शरीर और प्राण, मै अद्‌भुतरीती से बनाया गया हूँ । मैं श्रृध्दा में आराधना करता हूँ – क्या हि एक रचना है । आप मुझे भीतर और बाहर से जानते है, आप मेरे शरीर की सारी हडिड्यों को जानते हो, आप सटिक रीति से जानते हो कि मै कैसा बनाया गया था । थोड़ा–थोड़ा करके, मै कैसे कुछ नही (शुन्य) से कुछ में गढा गया था । जैसे एक खाली पुस्तक, आपने मुझे गर्भधारण से जन्म बड़ते हुए देखा है । मेरे जीवन के सभी स्तर आपके सामने फैलाए हुए थे, मैं एक दिन का जीवन जीता उससे पहले ही मेरे जीवन के सारे दिन पहले ही से तैयार किये गए थे मैसेज बायबल आस्वाद परमेश्वर पिता की रचना और इच्छा हमारे लिए यह है कि हम उनके, उनके पुत्र और उनकी आत्मा के साथ एक हो जाए। प्रभु यीशु ने कहा है कि उन्होने हमें अपनी महिमा दी है । युहन्ना 17:20–26 मैं केवल इन्ही के लिए बिनती नही करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझपर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हो। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में (एक) है । इसलिये कि जगत प्रतिति करे कि तू ही ने मुझे भेजा/और वह महिमा जा तूने मुझे दी, मै ने इन्हें दी है कि वैसे ही एक हो जैसे कि हम एक हैं/मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिध्द होकर एक हो जाऍ, और जगत जाने कि तू हीने मुझे भेजा, और जैसा तूने मुझसे प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रख। हे पित मै चाहता हूँ कि जिन्हे तू ने मुझे दिया है, जहॉ मै हूँ, वहॉ वे भी मेरे साथ हों किवे मेरी उस महिमा को देखे जो तू ने मुझे दी है, क्योकि तू ने जगत की उत्पत्ति के पहिले मुझ से प्रेम रखा है । धार्मिक पिता, संसार ने मुझे नही जाना, परन्तु मैंने तुझे जाना और इन्हों ने भी जाना कि तू ही ने मुझे भेजा / और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुम को मुझ से था, वह उन में रहे, और मैं उन में रहूँ ।

इफिसियों 1:3–14 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानो मे सब प्रकार की आशीष दी है । जैसा उसने हमें जगत की उत्पती से पहले उसमे चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हो और इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिये पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हो, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया । हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात, अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। जिसे उसने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया । कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबंन्ध है कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे । उसी में जिसमें हम भी उसकी मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बेन। कि हम जिन्होनें पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों ! और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उध्दार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी । वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो।

परमेश्वर के द्वारा बनाई गई रचना

सारी वस्तुओं की सृष्टि उन्ही के द्वारा और उन्ही के लिये सृजी गई ।

कुलुस्सियों 1:16

क्योकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिहांसन क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई है ।

परमेश्वर ने हमें संगती करने और उनकी महिमा को बॉटने के लिए सृजा है ।

इबानियों 2:10

और यह वह अधिकार है जो परमेश्वर ..... जिन्होने सब कुछ बनाया और जिनके लिए सब कुछ बनाया गया था ..... वे अपनी बहुत सी संतानों को महिमा में ले कर आए/संक्षिप्त व्याख्या या भावानुवाद

प्रभु यीशु ने हमें मित्र कहा है ।

युहन्ना 15:15

अब के बाद से मैं तुम्हे सेवक करके नही पुकारूंगा क्योंकि सेवक नही समझता की उनका स्वामी क्या सोच रहा है और क्या योजना बनारहा है । नही, मैंने तुम्हे मित्रों कहा है (ऐसा नाम रखा है) क्योंकि मैनें जो कुछ भी अपने पिता से सुना है वह सब तुम्हे बता दिया है । मैसेज बायबल अनुवाद

मनुष्य का पतन/बगिचे (वाटिका) में वास्तव में हुआ क्या था ? उत्पत्ति 3:1–8

1. यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले प्शु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उसने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना ?
2. स्त्री ने सर्प से कहा, इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते है।
3. पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नही तो मर जाओगे।
4. तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे,
5. वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखे खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।
6. सो जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा, और देखने में मनभाऊ और बुध्दि देने के लिये चाहने योग्य भी है, तब उस ने उस में से तोडकर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उस ने भी खाया।
7. तब उन दोनो की आंखे खुल गई, और उनको मालूम हुआ कि के नंगे हैं, सो उन्होने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये ।
8. तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठंडे समय वाटिका में फिरता था उसका शब्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नि वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छीप गए ।

मनुष्य का पतन/बगीचे (वाटिका) में वास्तव में हुआ क्या था ?

वचन 8 में परमेश्वर ने आदम और हव्वा से बातें की, उससे पहले क्या हुआ ? उनके उस निर्णय के कारण की वे परमेश्वर की अवज्ञा करेंगे, उनकी मानव आत्मा पाप के कारण मर गई और

उनका परमेष्वर के साथ जो संबंध था वह टूट गया । वहॉ अदला बदली की घटना घटित हुई । उन्होने बुराई के साथ परमेश्वर के सिध्द प्रेम को बदल दिया ।

उनका डि.एन.ए. बदल गया और अब वे सदा काल के लिए नहीं जी सकते थे ।

- उल्लंघन के कारण, पापने भीतर प्रवेश किया।
- अब आदम और हव्वा एक दूसरे कि ओर नही देख पा रहे थे (या आपस में नजरें नहीं मिला पा रहे थे)
- पतन के उस समय से लेकर अब तक, पुरूष और स्त्री एक दूसरे की ओर सही रीति से नहीं देख पाते हैं ।

उत्पत्ति 3: 9–13

9. तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, तू कहां है ?
10. उस (आदम) ने कहा, मै तेरा शब्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा थाः इसलिये छिप गया ।
11. उस (परमेश्वर) ने कहा किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है ? जिस वृक्ष का फल खाने को मैं ने तुझे बर्जा (मना किया) था, क्या तूने उसका फल खाया है ?
12. आदम ने कहा जिस स्त्री को तूने मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैं ने खाया ।
13. तब यहोवा परमेश्वर ने स्त्री से कहा, तूने यह क्या किया है ? स्त्री ने कहा, सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया ।

    - परमेश्वर ने आदम से क्यो पूछा " किस ने तुझे चिताया (यह बताया) ?" क्योंकी परमेश्वर जानना चाहते थे कि क्या आदम यह जानता है कि उसके द्वारा कौन बोल रहा है ।
    - जब आदम ने परमेश्वर को उत्तर दियाः " जिस स्त्री को तूने दिया..... " आदम इस बात की अनुभूति नही कर पाया कि जो आवाज उसमें से होकर बोल रही है वह उसकी अपनी आवाज या विचार नही है, परंतु शैतान की आवाज है ।

आत्मिक रीति से क्या हुआ ?

- इस घटना से पूर्व आदम और हव्वा केवल अच्छा ही जानते थे ।

- परमेश्वर के वचन के उलंघन के कारण उन्होने स्वंयं को परमेश्वर से छुपाया और उन्हे बुराई की जानकारी हो गई आदम और हव्वा अब एक दूसरे की ओर देख नही सकते थे ।
- प्रवेश का स्थान (मुद्दा) : भय की आत्मा, दोषासेवा की आत्मा, अपराध बोध की आत्मा, षर्म और दण्डाज्ञा ।
- स्मरण रखें जब परमेश्वर ने आदम से पूछा, " किसने तुझे चिताया (बताया) " कि तू नंगा है ? परमेश्वर ने यह इसलिए पूछा ताकि जान सके कि आदम यह जानता है कि नही की उसके द्वारा कौन बोल रहा है ।
- शैतान ने हव्वा को बहकाया ठिक उसी तरह वह आज भी लोगों को बहकाता है : 1 युहन्ना 2:16 "शरीर की अभिलाषा और आंखो की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड। " पहचान लिजिए यही सारे पापों का आधार है ।
- आदम और हव्वा ने अनंत काल को अल्पकाल के साथ अदलाबदली किया– सत्य को झूठ के साथ ।

परिणाम–6000 वर्षों की योजना कार्यक्रम एक पीढी से दूसरी पीढी तक आगे चलते चले गए ।

छुटकाराः पतन के बाद हमारे लिए परमेश्वर के द्वारा रचा गया ।

रोमियो 10:9–10 कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन (हृदय) से विश्वास करें कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उध्दार पाएगा । क्योंकि धार्मिकता के लिये मन (हृदय) से विश्वास किया जाता है, और उध्दार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।

जब आप छुड़ाए जाते हैं तो वे कौनसी कुछ वस्तुएं है जो आप प्राप्त करते हो ?

- " ईश्वरत्व की सारी पूर्णता आपमें निवास करती है। क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता संदेश वास करती है । " कुल्कासियों 2:9
- वही सामर्थ जिसने यीशु मसीह को मुरदों में से जीलाया आप में वास करती है ।" .... उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है ....। " रोमियों 8:11

- आप परमेश्वर के स्वभाव, उनके चरित्र के भागीदार बन गए ।"..... उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं बन जाए। ".....उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं ।
- ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ। " 2 पतरस 1:4

व्यवस्थाः दस आज्ञाएं : निर्गमन 20:1–17

1. कोई दूसरा ईश्वर नही
2. हत्या न करना
3. कोई मूर्ती नही बनाना
4. व्यभिचार न करना
5. प्रभु का नाम व्यर्थ न लेना
6. चोरी न करना
7. सब्त के दिन को पवित्र रखना
8. झूठ न बोलना
9. अपने माता पिता का आदर करना
10. लालच न करना

महान आज्ञा : परमेश्वर की संतान होने के नाते हमारे हक, विशेषाधिकार और जिम्मेदारियॉ जिसमें जैसा प्रभु यीशु ने सिखाया है वैसे ही महान आज्ञा का पालन करने का चुनाव करना भी सम्मिलित है । परमेश्वर से प्रेम करो, अपने आप से प्रेम करो, और अपने पडोसी से प्रेम करो। मत्ती 22:36–40 हे गुरू : व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बडी है ? प्रभु यीशु ने उसने कहा तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, हृदय, और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुध्दी के साथ प्रेम रख । बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है । और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख । ये हि दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं का आधार है ।

शाप – व्यवस्था विवरण 27: 9–26 शाप और अधिक स्राप व्यवस्था विवरण 28:15–61

वचन 15) " परन्तु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नही करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे।

वचन 58–59) "यदि तू इन व्यवस्था के सारे वचनों के पालने में, जो इस पुस्तक में लिखे है, चौकसी करके उस आदरणीय और भययोग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है भय न माने,

तो यहोवा तुझ को और तेरे वंश को अनोखे अनोखे दण्ड देगा, वे दुष्ट और बहुत दिन रहनेवाले रोग और भारी भारी दण्ड होंगे । "

संघर्ष : रोमियों 7 जो हम कहते है उसे हम क्यों करते है ? रोमियों 7:11–25 15) और जो मैं करता हूँ, उस को नही जानता (समझता), क्योकि जो मैं (करना) चाहता हूँ, वह नही किया (उसका अभ्यास नही) करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूँ ।

20–23) मैं सही (भला) करना चाहता हूँ। परन्तु करता नही ..... मेरे अंगों के पाप की व्यवस्था काम कर रही है ..... मेरी बुध्दि की व्यवस्था के विरूध्द युध्द करती है, और मुझे पाप की व्यवस्था की बन्धुवाई में लेकर आती है जो मेरे अंगों में है ।

24) ओह मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ । मुझे कौन छुड़ाएगा ?

25) यीशु मसीह हमारा प्रभु ! तो फिर मैं स्वंय बुध्दि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन (सेवा) करता हूँ, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का । संक्षिप्त व्याख्या या भावानुवाद

जब संत पॉलुस ने रोम में जो कलीसिया है उसे पत्र लिखा, तब वह 20 वर्षो का अनुभवी मसीही था, एक प्रेरित, एक कलीसिया स्थापक, एक मिशनरी, परमेश्वर का एक सामर्थी जन, तकरिबन आधा नया नियम लिखता है और अपने क्षेत्र का सबसे महान सुसमाचार प्रचारक – और वह अब भी संघर्ष कर रहा है ।

रोमियों 7 के अनुसार बहुतेरे लोग पौलुस के समान अटके हुए हैं ।

परमेश्वर की योजना

आज्ञाकारित पर आशिष। व्यवस्था विवरण 28:1–14

यदि तू परिश्रम के साथ प्रभु अपने परमेश्वर की बात माने, और उसकी आज्ञाओं का पालन करे .. यह सारी आशीषें तुम पर आएंगी । खोजे, उस लक्ष्य साधे और परमेश्वर के तरीके से काम करे। मत्ती 6:33 परन्तु पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से उसके राज्य की खोज (उस लक्ष्य साधो, उसके पिछ संघर्ष करो और उसकी धार्मिकता (उसका काम करने और सही होने का तरीका – परमेश्वर की मनोवृत्ती और चरित्र, और यह सारी वस्तुएं तुझे भी दि जाएगी । एम्प्लिफाइड बायबल अनुवाद ।

रोमियों 8:1–4

सो अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नही : क्योंकी वे शरीर के अनुसार नही वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं ।

क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया । क्योंकी जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को

परमेश्वर ने किया अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पापके बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी। इसलिये कि व्यवस्था की विधी हम में जो शरीर के अनुसार नही वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए ।

रोमियो 8 – आज्ञा यह है कि परमेश्वर पिता की तरह सोचे और प्रभु यीषु की तरह बातें करें । हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को चिन्ह और अद्‌भूत कामों के द्वारा प्रदर्शित होते हुए देखना । जैसे ही हम परमेश्वर पिता की तरह सोचते और प्रभु यीशु की तरह बोलते हैं, हम पवित्र आत्मा को देखते हैं कि :

- वे हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करते है ।
- वे हमें सामर्थ प्रदान करते है जयवन्त जीवन जीने के लिये ।
- परमेश्वर की इच्छा के अनुसार वे हमारे लिए मध्यस्थता करते है ।

इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना की हमें परमेश्वर के प्रेम से कोई भी वस्तु किसी भी तरह अलग नहीं कर सकती, जैसा की हमने रोमियों 8:37–39 में देखा है । परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हमसे प्रेम किया, जयवन्त से भी बढकर है । क्योकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु , न जीवन न स्वर्गदूत , न प्रधानताएं न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य न ऊंचाई न गहराई और न कोई और सृष्टि, हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी ।

आधार रेखा : परमेश्वर के आत्मा के अनुसार जीवन जीये, शरीर के अनुसार नही जो परमेश्वर से प्रेम करते है उनके लिए परमेश्वर सारी बतो में भलाई को उत्पन्न करने में योग्य (सक्षम) है।

रोमियो 8:28 और हम जानते है, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते है, उनके लिये सबबातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है, अर्थात उन्ही के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए है ।

1 कुरिन्थियो 10:13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नही पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर हैः और परमेष्वर सच्चा (विश्वासयोग्य) हैः वह तुम्हे सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पडने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा : कि तुम सह सको ।

2 कुरिन्थियो 9:8 और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है , जिससे हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हे आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कुछ है ।

इब्रानियो 2: 18 क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है , जिन की परीक्षा होती है ।

यहूदा 1:24 अब जो तुम्हें ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपनी महिमा की भरपूरी के सामने जगत और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है ।

चुनौतीः समय निकाल कर इन सत्यों पर मनन करे तब तक मनन करते रहें जब तक आपको प्रकाशन नहीं मिल जाता की जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए परमेश्वर सब बातों में से भलाई हि उत्पन्न करने में सक्षम (योग्य है) परमेश्वर योग्य है और इच्छुक है, जो भी हो, हमें आवष्यक है कि हम परमेश्वर के बचन के प्रति आज्ञाकारी बनें ।

गृह–कार्य

अध्याय 3, कृपया निम्नलिखित रिक्त स्थानों को भरें ।

1. " आदि में ..... ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की " उत्पत्ति 1
2. " तब ..... जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है। उत्पत्ति 1:31
3. " उसी का आत्मा जिसने ..... को मरे हूओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है। रोमियो 8:11
4. " क्योकि.....मै ईश्वर व की सारी परिपूर्णता संदेह वास करती है । " कुलस्सियों 2:9
5. " क्योकि जिस के लिये सब कुछ है, और जिस के द्वारा सब कुछ है, ... यही अच्छा लगा की उसके बहुतसे पुत्रों को महिमा में पहुँचाए इब्रानियों 2:10 भावार्थपूर्ण बचन
6. "क्योकी उसमें सारी वस्तुओं की सृष्टी हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की ..... या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं। कुलुस्सियों 1:16

गृह–कार्य कार्यभार

इस अध्याय में पाए जानेवाले शास्त्रभागों को पढ़े, उसे सुनें, जानें और आज्ञा मानें (उसके अनुसार करें)।

परमेश्वर के वचन को जानें, पवित्रशास्त्र के साथ घनिष्टता से परिचित हो जाएं और आप और अधिक परमेश्वर के साथ घनिष्टता से परिचित हो जाओगे।

- पृष्ठ कं.13 पर " मै मसीह में कौन हूँ " वाले शास्त्र भागों को पढ़े और उसपर प्रकाशन प्राप्त करें।

- पृष्ठ क्रं.19 पर " जीवन के वचन वाली प्रार्थना " को प्रतिदिन दोहराएँ ।
- लेखक हेनरी डब्ल्यु, राईट द्वारा रचीत पुस्तक " ए मोर एक्सलन्ट वे " (एक और अधिक उत्तम मार्ग) 2009 संस्करण के पृष्ठ क्रं 155–159 को पढे।

कृपया हमारे वेब साईट – rcministry.org.sign in पर जाएं । साईन इन करें । अध्याय 3 पर क्लिक करें । वहॉ आज इस अध्याय को जो 2016 में रेकॉर्ड किया गया था उसे सुन सकेंगे या देख पाएंगे । यदि आपने अभी तक साईन्ड अप नही किया है, तो निर्देश के लिए पृष्ठ क्र.9 को देखें । यदि आप निचे कि ओर सरकाओगे, " ए मोर एक्सलन्ट वे " से आप गृह कार्य पृष्ठ को पढते हुए सुन सकेंगे। उपरोक्त बातों को जब आप पूरा सुन चुको, तो कृपया निचे सरकाकर अध्याय 3 के प्रश्नोत्तरी पर आ जाएं, प्रश्नों के उत्तर दें और फिर उत्तर को जमा करें (सबमिट एनसर) पर क्लिक करें । सभी अध्यायों के 5 (पांच) " ऑनलाईन " प्रश्नों के उत्तर देना एक दिन की सेवकाई – पुनरूत्थान, चंगाई और स्वतंत्रता के एक दिन में उपस्थित होने के लिए एक आवश्यकता है । आपके परिणामों की सूचना हमें इलेक्ट्रानिक्स तरीके से प्राप्त हो जाएगी ।

स्मरणपत्रः यदि आपके पास "एक मोर एक्सलन्ट वे" की एक प्रति हो, तो उसे कृपया अगले सप्ताह कक्षा में ले कर आएं।

इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र भाग के साथ "दैनिक अनुशासन" को पढ़े और उससे परिचित हो जाएं ।

दैनिक अनुशासन

अपने पुराने व्यक्ति को उतार डालो, अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और अपने नये व्यक्ति को पहन लो ।

इफिसियों 4 : 22–24

"अपने पहले के स्वभाव जो आपके पहले के जीवन के चरितार्थ करता है उसे स्वंय उतार डालो (उतार दो, निकाल दो, फेंक दो) जो अभिलाषाओं और इच्छाओं के द्वारा जो भ्रामक बातों से उत्पन्न होता है उसके द्वारा भ्रष्ट होता जाता हैः और लगातार अपनी बुध्दि की आत्मा में नये

बनते जाओ और नये स्वभाव (पुनःसृना हुआ स्वंय) को पहन लो जो परमेश्वर के स्वरूप में (परमेश्वर के समान) सच्ची धार्मिकता और पवित्रा में सृजा गया है । " एम्प्लिफाइड बायबल अनुवाद संसार के सोचने के तरीके सदृष्य न बनोंः परमेश्वर के वचन में अध्ययन करो और अपनी बुध्दि की आत्मा को नया करो ।

रोमियो 12:2

" और इस संसार के सदृश्य न बनो " परन्तु तुम्हारी बुध्दी के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिध्द इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

शारीरीक बुध्दी (शरीर पर मन लगाना) परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता है ।

रोमियो 8:6–7

"शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।"

आत्मा में चलने का चुनाव करें।

गलतियों 5:25

"यदि हम (पवित्र) आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चले भी। यदि पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा जीवन परमेश्वर में है, तो आओ आगे बढ़ते हुए उसके अनुसार चलें, हमारा आचरण आत्मा के द्वारा नियंत्रीत हो।

– एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

विचारों को कैद कर लो।

2 कुरिन्थियों 10 : 4–6

"क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरीक नही, परन्तु गढ़ो को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारां सामर्थी है । सो हम कल्पनाओं (वादविवाद) को, और हर एक ऊंची बात को, जो स्वंय को परमेश्वर की पहिचान (ज्ञान) के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर एक भावना (विचार) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं.....।"

परमेश्वर के बचत का अध्ययन करें ।

2 तीमुथियुस 2:15

"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाऐ, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो ।

आपका खजाना एक वस्तु या एक व्यक्ति है जिसका मूल्य या कीमत अत्यन्त अधिक है । खजाने का अर्थ यह भी हो सकता है कि एक कीमती के रूप में बड़ी मूल्य, दुर्लभ या मंहगा। आपका खजाना कहॉ है ? मत्ती 6:21

"क्योंकि जहॉ तेरा धन है वहॉ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय 4.

मूल–भूत सत्य

अध्याय 3 के गृहकार्य पर पुनर्विचार

1. "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की ।" उत्पत्ति 1
2. "तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है ।" रोमियों 1:31
3. "..... उसी का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है ..... । रोमियों 8:11
4. " क्योंकि उस मैं ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता निःसंदेह वास करती है ।" कुलुस्सियों 2:9
5. "क्योंकी जिसके लिये सब कुछ है, और जिसके द्वारा सब कुछ है, परमेश्वर को यही अच्छा लगा कि उसके बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुॅचाए । " इब्रानियों 2:10 भावार्थपूर्ण वचन
6. "क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं क्या प्रधानताएं क्या अधिकार, सारी वस्तुऍ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं ।" कुलुस्सियों 1:16

आदि में

आदि में परमेश्वर ने पुरूष और स्त्री की सृष्टि की और उन्हे वाटिका में रखा । सर्प ने हव्वा को धोखा (बहकाया) दिया और उसने उसमें से खाया । उसने फल आदम के पास लेकर गई और उसने खाया ।

उत्पत्ति 3 : क्या हुआ ?

उनकी अवस्था बदल गई। उनकी दशा बदल गई ।

पहले परमेश्वर ने आदम से बात की उनकी अवज्ञा के बाद क्या हुआ ?

- आदम और हव्वा अब एक दूसरे कि ओर उस तरह से नही देख पा रहे थे जैसा कि कुछ पल पहले देख पा रहे थे ।
- एक परदा उनके ऊपर आ गया, एक पाप का परदा
- जैसा वे पहले परमेश्वर को देख पाते थे उस प्रकार अब वे नहीं देख पा रहे थे ।
- वे परमेश्वर से डरे हुए थे ।
- जो सिध्द हुआ करता था अब बुरा था ।
- सिध्द वाटिका को उन्होने नही छोड़ा, सिध्द वाटिका ने उन्हे छोड़ दिया ।

न्यायोचित (निर्दोषिकरण) : न्यायसंगत, न्यायिक (कानूनी) अर्थो में निर्दोष या धर्मी घोषित करना।

न्यायोचित (निर्दोषिकरण) : एक अदालती शब्द दण्डाज्ञा के विपरीत है । उसके स्वभाव के संबध के अनुसार, यह परमेष्वर का न्यायिक कृत्य है, जिसके द्वारा परमेश्वर उन सबके पापों की क्षमा करते है जो मसीह पर विश्वास करते है, और लेखा स्विकार किया गया और उनसे। धर्मी की तरह व्यवहार किया, जो कि उसके सभी मांगो के व्यवस्था की दृष्टि में अनुसार है । पापों की क्षमा के अलावा निर्दोषिकरण घोषित करता है कि व्यवस्था के सारे दावे (मांगे) धर्मी (निर्दोष)

ठहराए जाने के लिए संतोषजनक रूप से पूर्ण किये गए। यह एक न्यायाधिष का कार्य है ना कि सर्वशक्तिमान (महाराजा) का । व्यवस्था को शोन्त या एक ओर हटाया नही गया परन्तु यह घोषित किया गया की इसे बड़ी सक्ति के साथ पूर्ण किया गया है, और जो व्यक्ति न्यायोचित घोषित किया गया है वह उन सभी लाभों और प्रतिफलों जो व्यवस्था को सिध्दता से पालन करने पर प्राप्त होते है, उसे प्राप्त करने के योग्य घोषित किया जाता है।" (रोमियों 5:1–10)

न्यायोचित होना वह एक व्यक्ति की धार्मिकता के बिना क्षमा नही है, परन्तु एक घोषणा है कि अपने में धार्मिकता रखता है जो सिध्दता के साथ और सदा काल के लिए व्यवस्था को संतुष्ट करता है, उसका नाम है, मसीह की धार्मिकता । " (2 कुरिन्थियों 5:21: रोमियों 4:6) एम.जी. ईस्टन, एम.ए., डि.डि. ईल्लस्ट्रेटेड बायबल डिक्षनरी, तिसरा संस्करण, पब्लिश बाय थॉमस नेलसन 1897%

न्यायोचितता

- जिस क्षण परमेश्वर आपको आत्मिक रीति से सजीव करते है उसी समय तुरन्त न्यायोचितता (निर्दोषिता) होती है । आप ने उध्दार पाया और निर्दोष (न्यायोचित) ठहरे । आपकी अवस्था (पदस्थान) बदल गया है ।
- प्रभु यीशु का लेखा आप पर लागू होता है और यह ऐसा होता है मानों आपने कभी पाप नही किया है।
- निर्दोषिता (न्यायोचितता) एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा पापी लोग को पापी लोग को पवित्र परमेश्वर के प्रति ग्रहणयोग्य बनाया जाता है ।
- इस न्यायोचितता का आधार है प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु ।

2 कुरिन्थियों 5:19 अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल–मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उसने मेल–मिलाप का वचन हमे सौंप दिया है ।

न्यायोचितता– रोमियों 5:9

जबकि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ?

जब परमेश्वर न्याय करते (निर्दोष ठहराते, धर्मी ठहराते) वे मनुष्य के पापों का दाम मसीह पर लगाते और विश्वासियों को मसीह की धार्मिकता प्रदान करते हैं और उनका पद स्थान बदल

गया होता है । 2 कुरिन्थियों 5:21 एन.एल.टी. क्योंकि परमेश्वर ने मसीह को, जिन्होने कभी पाप नही किया था, उन्हे हमारे पापों के लिए पाप बली बनाया, ताकि हम सही (सीधे) बनाए जा सके ... ।

न्यायोचित (निर्दोष) होना यह परमेश्वर की धार्मिकता और प्रेम की मांग है । रोंमियो 3:26 वरन इसी समय उस की धार्मिकता प्रगट हो, कि जिस से वह आप ही धर्मी ठहरे, और जो यीशु पर विश्वास करे, उनका भी धर्मी ठहरानेवाला हो ।

न्यायोचित (निर्दोष) होना एक मुक्त उपहार (वरदान) है, परन्तु इसके लिए प्रभु यीशु मसीह को अपना सब कुछ देकर कीमत चुकाना पड़ा । रोमियो 5:18 इसलिये जैसा एक मनुष्य के अपराध के द्वारा सभी मनुष्यों के अपराध के द्वारा सभी मनुष्यों पर दण्ड (न्याय) आया, परिणामस्वरूप दोषी ठहराया गया, वैसे ही एक मनुष्य के धर्म के कार्य के द्वारा वह मुक्त उपहार (वरदान) सभी मनुष्यों का प्राप्त हुआ (के पास आया), परिणामस्वरूप जीवन को न्यायोचित (निर्दोष) ठहराया ।

न्यायोचित (निर्दोष) ठहराया जाना और शुध्दिकरण

बैटरी से चलने वाली घड़ियों का आविष्कार होने से पहले, कलाई की घडियों में प्रतिदिन चाबी भरना पड़ता था। घड़ी में का एक तना ही होता था जिससे घड़ी की सूईयों को घुमाकर सही समय पर निर्धारित किया जाता था और उसी से चाबी भी भरी जाती थी जो कि मुख्य स्प्रिंग को घुमाया करती थी । सारे दिन भर घिरे–घिरे मुख्य स्प्रिंग खुलती जाती जिससे घड़ी का तंत्र समय बताता । मसीह में विश्वास के द्वारा निर्दोष (न्यायोचित या धर्मी) ठहराये जाने का सुसमाचार मसीही जीवन की मुख्य स्प्रिंग है । पुरानी घडी की मुख्य स्प्रिंग की तरह ही, इसे प्रति दिन चाबी भरकर घुमाया जाना चाहिए। क्योंकि हमारी स्वभाविक वृत्ति होती है कि अपने स्वयं के भीतर देखे परमेश्वर के द्वारा किये गए समर्थन या असमर्थन के आधार हेतु, हमारी वर्तमान की धार्मिकता में खड़े होने के बदले में हमें चाहिए कि हम प्रति दिन चैतन्यता पूर्ण अपने स्वयं के बाहर मसीह की धार्मिकता को देखने का प्रयत्न करे। विश्वास के द्वारा मसीह और उनकी धार्मिकता को प्राप्त करने के बाद, परमेष्वर और नया जीवन पाए हुए विश्वासी के मध्य में एक कानूनी एकता (मेल) तैयार होता है, जिसके परिणामस्वरूप तुरन्त सिध्द और स्थायी निर्दोषिता प्राप्त होती है । विश्वासी का ईश्वरीय कचहरी में एक दोषी से बदलकर निर्दोष घोषित किए गए अवस्था में खड़ा होता है । उसके बाद, परमेश्वर के साथ एक जीवित एकता में सदा के लिए जुड़ जाना वह विश्वासी

शुध्दिकरण की प्रक्रिया आरंभ करता है जो उसके बदले हुए हृदय का बाहरी प्रमाण होता है । जैसे –जैसे वह विश्वासी मसीह में वह कौन है एक नयी सृष्टि बनता है ।

लेखक : जेरी ब्रिजेस एण्ड बॉब बिवेग्टन मे से उदधृत www.gospel.com/good-news-publishess-crossway-books

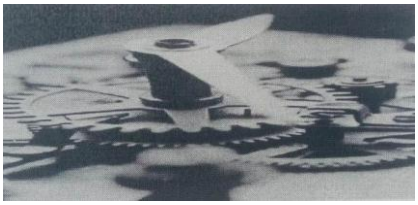

" उध्दार और निर्दोषिता यह परमेश्वर की ओर से हमारा उपहार (वरदान) है । निरन्तर चलते रहनेवाली शुध्दीकरण की प्रक्रिया हमारी ओर से परमेश्वर को बदले में दिया हुआ उपहार है ।" पासबान रॉन शोनहर

शुध्दीकरण

जब हम अपने पापों से पश्चाताप करते और मसीह को अपने उध्दारकर्ता के रूप में स्विकार करते है, हमारी अवस्था (स्थिती या पद स्थान) बदल जाता है । जो आदम और हव्वा से ले लिया गया था वह हमें लौटाया गया है, परमेश्वर का सिध्द प्रेम अब हमारे भीतर वास करता है और हमारी मानव आत्मा प्रभु यीशु मसीह में जीवीत हो उठती है ।

अब त्रिएक परमेश्वर की सारी परिपूर्णता हम में निवास करती है, और वही सामर्थ जिसने प्रभु यीशु मसीह को मुरदों में से जिलाया वह हम में निवास करता है, साथ ही परमेश्वर हमें अपना स्वयं का चरित्र प्रदान करेंगे ।

हमारी स्थिती बदल गई है।

हमारी दशा जैस हम उसे देखते है वह नही बदली है ।

हमारी दशा बदलेगी जैसे ही हमारे विचारों पर से पाप का परदा हटाया जाएगा। क्योंकि, हम पाप में जन्मे है, हम परमेश्वर के सोचने और काम करने के तरीके के विपरीत काम करने के तरीके के विपरीत काम करते, देखते और सोचने के लिए प्रशिक्षित किये गए थे।

शुध्दीकरण की प्रक्रिया होती है :

- जब हम गलतियों 5:16 के अनुसार आत्मा में चलते है..... आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे ।

- जैसे – जैसे हमारे मन का आत्मिक स्वभाव इफिसियो 4:23 के अनुसार परमेश्वर के विचार करने और काम के तरिके के सदृष्य हो नया बनता है .... और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ । हमारा शारीरीक मन (सांसारिक बुध्दि) परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता (षत्रुताः गहरी जड़ पकड़ी हुई घृणा) है और इसे नया नही किया जा सकता । रोमियों 8:6–7

  शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है । क्योकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।

शुध्दीकरण

- शुध्दीकरण का कार्य (कृत्य) या पवित्र बनाना । परमेश्वर के अनुग्रह का कृत्य जिसके द्वारा मनुष्य के लगावों को शुध्द किया जाता है या पाप और संसार से विमुख किया जाता है और परमेष्वर के सर्वोच्च प्रेम के प्रति ऊॅचा उठाया जाता है, साथ ही, शुध्द किये जाने या पवित्र किये जाने की अवस्था । पवित्र करने का कृत्य, या अलग कर रखने, एक पवित्र उद्देश्य के लिये पवित्रिकरण।
- यह हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा है । परमेश्वर चाहते है की हमे अलग कर रखेगे । परमेश्वर की इच्छा है कि इनकी रचना पवित्र रहे । (पवित्रः नैतिक और सदाचरण संपूर्णता या सिध्दता नैतिक बुराई से स्वतंत्रता)

1 थिस्सलुनीकियों 4:3–3

क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम पवित्र बनो: अर्थात व्यभिचार से बचे रहो । और तुम में से हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपने पात्र को प्राप्त करना जाने । और यह काम अभिलाषा से नही, और न उन जातियों की नाई जो परमेश्वर को नही जानती। कि इस बात में कोई अपने भाई को न ठगे, और न उस पर दांव चलाए, क्योंकि प्रभु इन सब बातों का पलटा लेनेवाला है । जैसा कि हम ने पहिलेतुम से कहा, और चिताया भी था । क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुध्द होने के लिये नही, परंतु पवित्र होने के लिये बुलाया है । इस कारण जो कुछ जानता है, वह मनुष्य को नही, बुलाया है । इस कारण जो तुच्छ जानता है, वह मनुष्य को नही, परन्तु परमेश्वर को तुच्छ जानता है, जो अपना पवित्र आत्मा तुम्हें देता है ।

2 थिस्सलुनीकियों 2:13

परन्तु हे भाईयों, प्रियो प्रभु के द्वारा हम तुम्हारे लिए सदा परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए बाध्य है, क्योकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतिति करके उध्दार पाओ।

यहुदा 1:1 हम बुलाये और शुध्द किये गए है ।

इनके लिये जो बुलाये गए है, परमेष्वर पिता के द्वारा पवित्र किये गए, और यीषु मसीह में सुरक्षित किये गए हैं ।

" शुध्दिकरण परमेश्वर के अनुग्रह का काम है जिसके द्वार विश्वासी पाप से अलग किया जाता है और परमेश्वर की धार्मिकता के प्रति समर्पित हो जाता है । शुध्दिकरण ही वह बात है जिसके कारण हमारी दशा बदल जाती है ।" पासबान रॉन शोनहर

मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा हम शुध्द किये गए हैं । राजा अग्रिप्पा के साथ बात करते समय संत पौलुस उसे प्रभु यीषु मसीह, जो जीवित परमेश्वर कि ओर अपने जीवन परिवर्तन की गवाही देते हुए राजा अग्रिप्पा को प्रभु यीशु के शुब्द का उल्लेख करते है ।

प्रेरितों 26:18 कि तू उनकी आंखे खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरेः कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं।

शुध्दीकरण एक निती चलते रहनेवाली प्रक्रिया है। संत पौलुस हमें बता रहे है कि हम शुध्द किये गए, हम शुध्द किए जा रहे है। और हम लागतार शुध्द किये जाते रहेंगे । 2 कुरिन्थियों 1:10 उसी ने हमें ऐसी बड़ी मृत्यु से बचाया (शुध्द किया), और बचाएगा (शुध्द करेगा), और उससे हमारी यह आशा है, कि वह आगे को भी बचाता (शुध्द करता) रहेगा ।

विवरणात्मक अनुवाद

2 तीमुथियुस 2:15 हमें परमेश्वर के वचन को पढ़ने, अध्ययन करने और याद कर लेने की आज्ञा देता है । यह शुध्दिकरण की प्रक्रिया है । अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो ।

2 कुरिन्थियों 6:17–18 हमारे पवित्र परमेश्वर हमारे भीतर रहते हैं । उन्हें आपके परिवर्तित करने की अनुमती देने का चुनाव करे । परमेश्वर मांग करते है कि आप किसी भी ऐसी वस्तु से जो

अशुध्द है उससे स्वयं को अलग करें । (अशुध्दःनैतिकरूप से अशुध्द, बुरा, गंदा या घृणित) इसलिये उन अविश्वाससियों के बीच में से निकलो और स्वयं को उनसे अलग (पृथक) करो, प्रभु कहता है और (किसी) अशुध्द वस्तु को मत छुओं, तब मैं कृपा के साथ तुम्हें ग्रहण करूंगा और तुम्हारे साथ समर्थन का व्यवहार करूंगा, और मै तुम्हारा पिता हूंगा, और तुम मेंरे बेटे और बेटिया होंगे, सर्वशक्तिमान प्रभु कहते हैं । एम्पिफाईड बायबल अनुवाद

अपनी बुध्दि (मन के आत्मिक स्वभाव हमारी बुध्दि की आत्मा) के नये किये जाने का महत्व ।

रोमियों 8:7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है । क्योंकी हमारी शारीरीक बुध्दि परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता (शत्रुता, बैर = गहरी जड़ पकड़ी हुई घृणा), इसे नया नही किया जा सकता। इफिसियों 4:23 और अपने मन (बुध्दि) के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ। और अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ ।

रोमियों 12:2

और इस संसार के सदृश्य न बनो, परन्तु तुम्हारी बुध्दि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती और सिध्द इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

संसार के तरीके के अनुसार न तो जीवन जीओ और न विचार करो । ऐसा होने दे कि परमेष्वर के वचन का सत्य आपकी बुध्दि को बदल दे और आप की विचार धारा बदल दे । परमेश्वर की इच्छा को जानने के लिए उसे उसे पूरा करने के लिए अपनी बुध्दि (बुध्दि की आत्मा) को नया बनाए । परमेश्वर पिता की तरह विचार करें । प्रभु यीशु की तरह बोले और पवित्र आत्मा की तरह चलें ।

शुध्दिकरण

हर समय परमेश्वर के हथियार बान्धे रहें ।

इफिसियों 6:10–18 निदान प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनों । परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो : कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खडे रह सको । क्योंकि हमारा

यह मल्लयुध्द लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है । इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर खड़े रह सको । सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर। और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर । और उन सब के साथ (ऊपर) विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहें । जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको । और उध्दार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, लेलो । और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार बिनती किया करो ।

इफिसियों 6 :13
इसलिये परमेश्वर के संपूर्ण हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन (खतरे के) में अपने स्थान में खड़े रह सको और सामना कर सको, और सब कुछ (जिसकी मांग संकट करता हो) पूरा करके, खड़े रहो (अपने स्थान में अडिग) एम्प्लिफाईड बायबल

सकंट जिन बातों की मांग कर रहा है उसे पूरा करने के बाद और जब युध्द समाप्त हो जाए उसके बाद, अपने स्थान में अडिग (स्थिर) खड़े रहो और खड़े हुए पाए जाओ ।

हर समय परमेश्वर के हथियार बान्धे रहो ।
इफिसियों 6 : 14–17 एम्प्लिफाईड बायबल
सत्य का पटुका इसलिए खडे रहो (अपने स्थान पर जमे रहो) अपनी कमर के चारों ओर सत्य का पटुका (कमरबन्ध) कस लो ।
धार्मिकता की झिलम और सत्यनिष्ठता (धार्मिकता) और नैतिक ईमानदारी और परमेश्वर के साथ सही सबंध हो की झिलम पहिन लो,
मेल के सुसमाचार के जूते और अपने पैरों में मेल के सुसमाचार की तैयारी (दृढ व स्थिर अडिग जमे पैरो के साथ शत्रु का सामना करने के लिए, उस अच्छी खबर के द्वारा उत्पन्न तैयारी और तत्परता) के जूते पहिन कर ।

विश्वास की ढाल सबके उपर उध्दार के विश्वास की ढाल (आवरण) को ऊंचा उठाओ, जिसके ऊपर तुम उस दुष्ट के सभी जलते हुए तीरों को बुझा सको । उध्दार का टोप ले लो (पहन लो)।

आत्मा की तलवार वह तलवार जिसको आत्मा काम में लाता है, वह परमेश्वर का वचन है ।

गृह–कार्य

इस अध्याय में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढें उसे सुनें, जाने और मानें । परमेश्वर के वचन को जानें, पवित्रशास्त्र के साथ गहराई से परिचित हो जाइये और परमेश्वर के साथ और अधिक गहराई से परिचित हो जाऐगे ।

- पृष्ठ कं. ..... पर **" मैं मसीह में कौन हूँ"** ऐसे शास्त्र भागों को पढ़े और प्रकाशन प्राप्त करें ।
- पृष्ठ कं. ..... पर लिखित **"जीवन के वचन की प्रार्थना"** को प्रतिदिन दोहराएं।

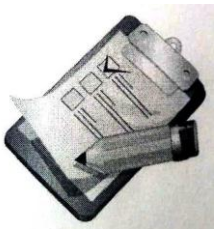

" प्रतिदिन के अनुशासन " के साथ इस अध्याय में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ें और उनसे परिचित हो जाएं।

प्रतिदिन के अनुशासन

अपने पुराने मनुष्यत्व को उतार डालो, अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ और अपने नये मनुष्यत्व को पहन लो ।

इफिसियों 4: 22–44

" अपने पुराने स्वभाव को जो तुम्हारे पहले के तौर तरिकों को चरितार्थ (प्रदर्शित) करता है, जो तुम्हारा पहले का जीवन जीने का तरीका है और जो भरमानेवाली अभिलाषाओं और इच्छा के द्वारा भ्रष्ट हो गया है उसे स्वयं उतार (निकाल दो और फेंक दो) डालो, और लगातार अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते चले जाओ, और नये स्वभाव (पुनःसृजा गया स्वयं है) को पहनलो जो परमेश्वर के स्वरूप में (परमेश्वर के समान) सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है । एम्प्लिफाईड बायबल

संसार के सोच विचार के सदृष्य न बनोंः परमेश्वर का वचन पढें और अपने मन के आत्मिक स्वभाव को नया बनाएँ ।

रोमियों 12 : 2

" और इस संसार के सदृष न बनो, परन्तु तुम्हारी बुध्दि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिध्द इच्छा अनुभव से मालूम करते रहे ।"

शरीर पर मन लगान तो परमेश्वर से बैर (शत्रुता) रखना है ।

रोमियों 8ः 6–7

" शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु हैः परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है । क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकी न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।"

आत्मा में (आत्मा के अनुसार) चलने का चुनाव करें ।

गलतियों 5:25

" यदि हम (पवित्र) आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी (यदि पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर में हमारा जीवन है, सो आओ हम उसके अनुसार चलें, आत्मा के द्वारा हमारे आचरण को नियन्त्रित किया जाएगा)" एम्प्लिफाईड बायबल

विचारों को बन्धुवाई (कैद) में ले जाए।

2 कुरिन्धियों 10ः 4–6

" क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरीक नही, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा (में) सामर्थी है । सो हम कल्पनाओं (वादविवादो) को, और हर एक उंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान (ज्ञान) के विरोध में उठती हैं, खण्डन करते है, और हर एक भावना को कैद करके मसीह के आज्ञाकारी बना देते हैं ।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें ।

2 तीमुथियुस 2:15

" अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता है ।

आपका खजाना, एक वस्तु या एक व्यक्ति है जिसे ऊंचा मूल्य या महत्व दिया गया है। खजाने का अर्थ यह भी होता है कि ऊंची कीमत का जैसे मूल्यवान, दुर्लभ या महंगा। आपका खजाना कहॉ है ? मत्ती 6:21

" क्योंकि जहॉ तेरा धन है वहॉ। तेरा मन भी लगा रहेगा ।"

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय–5

विचारों का मार्ग

विचारों का मार्ग – आदि में परमेश्वर ने पुरूष और स्त्री की सृष्टी की और उन्हे बगीचे में रखा। सांप ने हव्वा को बहकाया और उसने वह फल में से खाया। उसने वह फल आदम के पास ले गयी और उसने भी खाया

उत्पत्ति 3 : क्या हुआ ?

उनकि अवस्था (पदस्थान) बदल गई।

उनकी दशा बदल गई ।

पहले परमेश्वर ने आदम से बात किया उनके अवज्ञा के बाद क्या हुआ ?

- अब आदम और हव्वा उस तरह एक दूसरे की ओर नही देख पा रहे थे जैसे कुछ पल पहले देख पा रहे थे ।
- उनके ऊपर एक परदा आ गया था, यह पाप का परदा था । एक परदा जो किसी वस्तु को ढांकता या छुपाता है ।
- अब वे परमेश्वर को उस तरह से नही देख पा रहे थे जैसा वे पहले देखा करते थे ।
- वे परमेश्वर से डरे हुए थे ।
- जो सिध्द था अब वह बुरा हो गया था ।
- उन्होने उस सिध्द बगिचे को नही छोड़ा वरन उस सिध्द बगीचे ने उन्हे छोड़ दिया।

जब हम अपने पाप से पश्चाताप करते और प्रभु यीशु मसीह को अपने उध्दारकर्ता के रूप में स्विकार कर लेते है, हमारी अवस्था बदल जाती है । जो कुछ आदम और हव्वा से ले लिया गया था वह हमें लौटाया जाता है, अब सिध्द प्रेम हमारे भीतर रहता है और हमारी मानव आत्मा प्रभु यीशु मसीह में जीवित हो जाती है ।

त्रिएक परमेश्वर की पुर्णता अब हममें निवास करती है, और वही सामर्थ जिसने प्रभू यीशु मसीह को मुरदों में से जिलाया वह हममें रहते है, साथ ही परमेश्वर हमें अपना चरित्र प्रदान करेंगे। हमारी अवस्था बदल गई, तो भी हमारी दशा जैसा की हम देखते है वह नही बदली। हमारी दशा तब बदलेगी जब हम आत्मा में चलना सिख लेंगे और शरीर में नही चलेंगे (शरीर=शारीरिक या सांसारिक बुध्दि) क्योंकि हम पाप में जन्में थे, इसलिए हम परमेश्वर के सोचने के और काम करने के तरीके के विपरित सोचने और कृत्य (कार्य) करने के लिये प्रशिक्षित थे । परमेश्वर के सोचने और काम करने के तरिके के सदृश होने के लिये हमारे मन का आत्मिक स्वभाव का नया होना आवश्यक है, जो की शुध्दीकरण की प्रक्रिया है।

इफिसियों 4:23 और तुम्हारे मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ।

रोमियों 8:7 क्योकि शरीर पर मन लगाना तो परमेष्वर से बैर रखना है, क्योकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।

हमारी शारीरिक मन और हमारे आत्मिक मन के बीच में एक अन्तर है । क्योकि हमारा शारीरिक मन (जो नया नही हुआ) वह बैर है (बैर= परमेश्वर के साथ लड़ाई), वह नया नही किया जा सकता है । केवल हमारी आत्मिक बुध्दि (नया जन्म पाई हुई) नयी कि जा सकती है ।

आपकी संरचना– उध्दरण हेनरी डब्ल्यु. राईट से " एक और अधिक उत्तम मार्ग " पृष्ठ कं. 105–106

"आपकी सहायता करने के लिए आपको लगनेवाले साधन दे रहे है, हमें आपकी संरचना के विषय मे बात करने की आवश्यकता है । यह आपको यह समझने में सहायता करेगी की कैसे एक अदृष्य राज्य आपको, प्रलोभित कर सकता है, आपसे बात कर सकता है और आपको नियंत्रित करने का प्रयास करता है ।

अपने व्यक्तित्व को आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बनाने के द्वारा यदि वह आपके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाए, तो वह सामान्य दिखाई देगा और आप उसका विरोध नही करोगे। यह राज्य उसे जो असामान्य है उसे ऐसा दिखाएगा जैसे वह सामान्य है ।"

आप तीन भाग में बने व्यक्ति है

आत्मा प्राण शरीर

अल्फा

बुध्दि की लहरें

थिटा बिटा

बुध्दि की लहरे बुध्दि की लहरे

अल्फा आत्मिक संसार और भौतिक संसार के बीच का सेतु है ।

थिटा आत्मा को प्राण के साथ जोड़ता है ।

बिट प्राण को शरीर के साथ जोड़ता है ।

" एक और अधिक उत्तम मार्ग" 2009 संस्करण / लेखकः हेनरी डब्ल्यु. राईट प्रकाशनाधिकार (C) 2009 / स्वस्थ रहो

विचार का मार्ग

अल्फा बिटा और थिटा बुध्दि(दिमाग, मन) की लहरे (तंरगे) यह प्रक्रिया करने और सोचने, छवि (तस्वीर) को उपलब्ध कराने (आसानी प्रदान करने), तर्क करने और हमारे व्यक्तित्व को बनाने के लिए आवश्यक है ।

आत्मिक दुनिया और भौतिक दुनिया के मध्य प्राण सेतु (पुलिया) है ।

प्राण (मन,बुध्दि) यह बुध्दिमत्ता, अनुभूति, भावनाओं से बना है और सारे अनुभवों का लेखा रखता है – चाहे अच्छे हो या बुरे । प्राण में स्मृतियॉ जमा रहती है ।

उदाहरण : जब आप कुछ सुनते है तब आपके दिमाग की बिटा लहरे सक्रिय हो जाती है । आपका दिमाग एक विद्युत रासायनिकी प्रक्रिया के द्वारा दृष्टि में आनेवाली वस्तुओं की और जो आप सुन रहे हो उसकी ध्वनी में से छवि को पकड़ता है। आपका दिमाग भौतिक दुनिया से प्राप्त होनेवाले अनुभवों को दर्ज करता है और उसे आपकी स्मृति में जमा कर देता है । यह प्रक्रिया आपके प्राण (बुध्दी) को क्रमादेश देती है दुष्ट आत्मा ने आपको आपके प्राण में क्या सिखाया है इसका एक उदाहरणः उस अदृष्य राज्य में हो सकता है कि आपको आपके जीवन के अनुभव के कारण भय सिखाया हो। भय आपके विचारों, आपकी भावनाओं और आपके निर्णय लेने कि प्रक्रिया पर शासन करेगा । क्योकि यह पाठ आपकी दिर्घ–कालिन स्मृति में है, फिर चाहे वह भय

की आत्मा को वहॉ से हटा दिया जाए तोभी आपको वे सारी बातें जो उसने (भय की आत्मा ने) सिखाया है याद रहती है । यह अदृष्य राज्य आपके थिटा दिमाग की तरंगो (लहरों) के द्वारा काम करता है ।

व्याख्याएं

डि एन ए – डिऑक्सिराइबो न्यूक्लिक ऍसिड (अम्ल, तेजाब) – प्रत्येक कोशिका के केन्द्र के भीतर घुमावदार अणु होते है जिन्हें डि.एन.ए. (जीवन) कहा जाता है। डि.एन.ए. वह वस्तुतत्व है जो अनुवांशिक जानकारियों को संचारित करता है जो शरीर को बताता है कि क्या करता है।

आर.एन.ए. – रायबो आणविक अम्ल – आर. एन. ए. वंशाणुओं से आदेश को निर्माण स्थल कि ओर वहन (लेकर जाते) करते है, जहॉ वह प्रोटीन के जमा होने को निर्दिष्ट करते है । आर.एन.ए ही है जो डि.एन.ए. को आदेश देता है । आर.एन.ए. अपनी अन्य गतिविधियों के अलावा। " बीच में जाओ" "एक संपादक" और "एक व्यवस्थापक" के रूप में कार्य करता है।

स्मृति (याददाश्त स्मरण) – हेनरी डब्ल्यु.राईट से लिया उध्दाहरण है, " एक और अधिक उत्तम मार्ग " के पृष्ठ क्रमांक 56 "अल्प कालिन स्मृति में, आप " एक तस्विर लिजिए" जो कि एक मिमि (अर्थात तस्विर, विडियों जो लोग एक दुसरे को भेजते है– मिडिया में) । स्मृति कि एक इकाई यह एक विद्युतिक, रसायन घटना है जो दिमाग में घटित होती है । अल्प – कालिन स्मृति में, यह वहॉ स्थायी नही बनता /यद्यपि, दीर्घकालिन स्मृति में हमारे पास कुछ हो रहा है और अब मनन करने के द्वारा प्रबलित होता है, दोहराए जाने के द्वारा प्रबलित होता है, चेतना में बन्द हो जाने के द्वारा प्रबलित होता है, अंत विद्युती रसायन में कुछ तो घटना घटित होती है। अनुवांशिक का एक कारक होता है, जो भीतर धक्का मारता है और आर.एन.ए. सम्मिलित होता है। कुछ वस्तु है जिसे प्रोटिन संश्लेषण घटित होना कहते है और यह स्मृति आपके दिमाग की कोशिकाओं का एक जैविक हिस्सा बन जाती है, यह केवल एक बार झलक गया या एक अल्पकालीन स्मृति में कि एक तस्वीर नही है । अब यह जैविक रूप से आपका हिस्सा बन गया है । इस तरह ही आपके प्राण को सुरक्षित किया जाता है। आईने की छवी को एक छाया – चित्र (निगेटिव) की तरह लिया जाता है । मानव आत्मा उस में से उठाता और आप आत्मिक और मनोवैज्ञानिक रीति से उसके साथ एक हो जाते है। ..... आपके विचारों के क्षेत्र जो परमेश्वर के ज्ञान के साथ मेल नही खाते उन्हे चाहिए की सर्वोत्तम सोच विचार के आधिन आएः परमेश्वर के विचारों के। "

"एक और उत्तम मार्ग" (c) 2009 संस्करण–लेखकः हेनरी डब्ल्यु.राईट

प्रकाषनाधिकार 2009 / स्वस्थ रहो

विचारों के और अन्य मार्ग, हेनरी डब्ल्यु.राईट से लिए उध्दहरण "एक और उत्तम मार्ग" पृष्ठ कं. 107 " जब आप किसी बात पर बार –बार विचार करते हो (मनन) तब प्रोटिन संश्लेषण घटित होता है । यह आर एन एक को सम्मिलित करता है (यह डि.एन एक को निर्देष देता है) और डि.एन.ए. (अनुवांशिक जानकारी जो बताती है शरीर को कि क्या करता है) परन्तु विशेषकर आर. एन. ए। वे विचार जिन्हें बार बार याद किया जाता है वे वास्तव मै आपके जीव विज्ञान (हमारे दिमाग की कोशिका) का स्थायी हिस्सा बन जाता है। परमेश्वर आपको प्रशिक्षित करना चाहते है ताकि उनकी व्यवस्था केवल आपकी आत्मा में ही न रहे, परन्तु एक मानव प्राणि होने के नाते परमेश्वर की व्यवस्था आपके व्यक्तिव का एक हिस्सा बन जाए ।"

" एक और उत्तम मार्ग" 2009 संस्करण – लेखक हेनरी डब्ल्यु. राईट – प्रकाशनाधिकार

(c) 2009 / स्वस्थ रहो।

विचार की व्याख्या

1. एक कल्पना या मानसिक तस्वीर, कल्पित और अपेक्षित।
2. एक कल्पना या सोचने के द्वारा उत्पन्न राय या अचानक बुध्दि (दिमाग) में घटित होता (उत्पन्न होना)।

2 कुरिन्थियों 10:4अ क्योकि हमारी लडाई के हथियार शारीरिक नही. ..... गलत विचारों के विरोध में हमारे पास हथियार है, लहू और मांस के शारीरीक हथियार नही है ।

2 कुरिन्थियों 10:4ब पर गढ़े को ढा देने के लिए परमेश्वर (में) के द्वारा सामर्थ है । सर्वशक्तीमान परमेश्वर के द्वारा चार दिवारी से घिरे सोच –विचार के तरिके (दृढ गढ) को उखाड फेंकना और नष्ट करना।

2 कुरिन्थियों 10:5 अ सो हम कल्पनाओं (वादविवादों) को, और हर एक ऊंची बात को, जो परमेश्वर की पहचान (ज्ञान) के विरोध में उठती है, खण्डन करते है,

- प्रत्येक वादविवाद सिध्दात तर्क, मंत्रणा और गलत सोच को परमेश्वर के वचन के और प्रमाण के द्वारा गलत प्रमाणित करते है।

2 कुरिन्थिओ 10:5ब और हर एक भावना (विचार) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते है।

- ऐसे विचार जो परमेश्वर के नही है उन्हे आपको केंद्र करने की अनुमती न दें (बन्दीगृह में और शत्रु की बन्धुवाई में)।

दृढ गढ की व्याख्याः

- एक ऐसा स्थान जिसमें दृढ सुरक्षा होती है, एक चार दिवारी युक्त स्थान । हम अपने विचारों के तरीके में दृढ गढ की बात कर रहे है ।
- दृढ गढ पिढ़ी से पिढ़ी तक पहुॅचाया या प्रदान किया जा सकता है । वे अधर्म भी हो सकते है ।
- एक दृढ गढ अधिक क्षेत्र या अधिक स्थान लेना चाहत है और अपने पद की रक्षा करता है ।
- हम अपने सारे जीवनभर एक विशेष तरीके से विचार करने के लिए प्रशिक्षित किये जाते है। हमारे विचार निर्धारित करते है कि हम कैसे कृत्य करेंगे और हम क्या करेंगे। हमारे विचार ने हमारे अस्तित्व को या व्यक्तित्व को उत्पन्न किया है ।

किसी बात को स्थान देने का अर्थ क्या होता है ?

जब आप किसी बात या वस्तु के विषय में विचार करते है, तब आप उसे स्थान देते है । यदि आप किसी ऐसी बात पर विचार कर रहे है, मनन कर रहे है या कल्पना कर रहे हैं जो परमेश्वर की बात नही है, तब आप शत्रु के अदृष्य राज्य को अनुमती दे रहे है कि वह स्थान प्राप्त करें । जब आप किसी सोच पर विचार करते हैं त बवह आपके दिर्घ कालिन स्मृति का हिस्सा बन जाता है । जिस बात पर आप विचार करते है वह आपके शरीर से कहता है कि उस विचार को सहयोग देने के लिए एक रसायन उत्पन्न करे ।

इफिसियों 4:26–27

और न शैतान को अवसर दो।

अच्छी बातों पर विचार करें । परमेश्वरकी स्मृति करें और परमेश्वर के वचन को स्थान दे । फिलिप्पियों 4:8

निदान, है भाइयों, जो जो बातें सत्य है, और जो जो बातें आदरनीय है, और जो जो बातें उचित है, और जोजो बातें पवित्र है, और जो जो बातें सुहावनी है, और जो जो बाते मनभावनी है, निदान जो जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बाते हैं उन्ही पर ध्यान लगाया करो ।

हमारा प्रशिक्षण, हेनरी डब्ल्यु.राईट से लिए उध्दारण " एक और उत्तम मार्ग " पृष्ठ 109 " आपको आपके परिवारो, में तकरीबन 6000 वर्षो से परमेश्वर के ठिक विपरीत विचार करने के लिए

प्रशिक्षित किया गया है । आपको सिखाया गया है कि अनुचित तरीके से, शिकार होने के लिए, दूसरो को शिकार बनाने, डरे हुए रहने के लिए, तिरस्कृत किये जाने के लिए, कड़वाहट से भरे रहने के लिये, अनुचित अनुभुती रखने के लिए ... एक दूसरे के साथ संबंधित हों। परमेश्वर ने यह नही पूछा, " तुम से किसने डरने के लिए कहा ? " या " तुम से किसने कहा उदास रहने के लिए? परमेश्वर ने आदम से पूछा, " तुम से किसने कहा की तू नंगा है ?" परमेश्वर ऐसा पूछ सकते थे, " तुम से डरने के लिए किसने कहा ? " तुम से उदास रहने के लिए किसने कहा ? " आप समस्या नही है। आपको पाप की व्यवस्था में प्रशिक्षित किया गया है। आदम और हव्वा के विचार उनके अपने नही थे।

परमेश्वर उन वस्तुओं व बातों को जो परमेश्वर की नही है उसे हटा देना चाहते है । यह आरंभ ही आपके मन के आत्मिक स्वभाव को नया करने के द्वारा आपमें मसीह की बुध्दि (मन) का होना आरंभ होगा और एक सोचने का ऐसा तरीका होगा जो पाप की व्यवस्था से उत्तम होगा।

परमेश्वर आपको सिखाना चाहते है । पवित्र आत्मा सत्य की गवाही देना चाहते है। जब आप पवित्रशास्त्र को पढ़ते है, तब अल्फा लहरें आपको ज्ञानात्मक, निगमनात्मक तर्क करने योग्यता प्रदान करता है। यह अल्फा लहरे उन सारी बातों का लेखा दर्ज करते है जिनका आपने बाहरी तौर पर और भीतरी रूप से अनुभव करते है, निगमनात्मक तर्क को उत्पन्न करने के लिए संघटित होता है। यह आपके व्यक्तित्व और आपके प्राण की पहचान का मिश्रण बन जाता है।"

"एक और उत्तम मार्ग" 2009 संस्करण लेखक हेनरी डब्ल्यु. राईट प्रकाशनाधिकार (c) 2009 स्वस्थ रहो।

समस्थापन (एक जैसा बने रहना) की, व्याखा

एक प्रणाली की प्रकृति, विशेषकर मनुष्यो की मानसिक प्रणाली, जो उसके भीतरी वातावरण को संचालित करती है, और प्रवृत्त होती है कि स्थिर, तापमान या पि.एच जैसे गुणस्वभाव को अचल (स्थायी) बनाए रखे। यह किसी भी परिस्थिती के प्रति उसके अंगो की प्रतिक्रिया के समायोजन को नियंत्रित करता है या जो उसके सामान्य अवस्था या गतिविधी में बाधा डालने की प्रवृत्ति को उत्तेजित करता है ।

समस्थापन (होमिओस्टेसिस) = परमेश्वर की सिध्द शांति

परमेश्वर की सिध्द शांति – फिलिप्पियों 4:6–7 एम्प्लिफाईड बायबल " चिढ़ना नही था किसी भी बात की चिन्ता ना करे, परन्तु प्रत्येक परिस्थिती में और हर एक बात में, प्रार्थना और निवेदन (निश्चित अनुरोध) के द्वारा, धन्यवाद के साथ लगातार, आपकी आवश्यकताओं को परमेश्वर को बताओ । और परमेश्वर की शांति (तुम्हारी हो जाएगा, जो प्राण की अवस्था को मसीह में उसके

उध्दार में सुस्थिर करता है, अतः परमेश्वर की ओर से भय का कोई कारण नही और पृथ्वी पर के अपने हिस्से से संतुष्ट रहना फिर वह किसी भी प्रकार का हो, वह शांति) जो सारी समझ से ऊँची है उसकी रक्षा करेगी और मसीह यीशु में आपके हृदय और मन सुरक्षा को बढ़ाएगी।

परमेश्वर की सिध्द शांति – यशायाह 26:3 एम्प्लिफाईड बायबल

जिसकी बुध्दि(मन) (दोनों बातें हो उसका झुकाव और उसका चरित्र) तुम पर ठहरा (लगा) हो उसकी तू रक्षा करेगा और उसे सिध्द और नियमित शांति में रखेगा, क्योकि उसने स्वंय को तुझे सौंप दिया है, तेरा सहारा किया है और तुझ में भरोसे के साथ आशा रखता है ।

परमेश्वर की सिध्द शांति – नीतिवचन 3:5–6 एम्प्लिफाईड बायबल

अपने संपूर्ण हृदय और बुध्दि से अपने प्रभु पर सहारा के, प्रतिति कर और भरोसा रख और अपनी स्वंय की अंतरदृष्टि या समझ का सहारा न लेना अपने सारे मार्गो में जाने, पहचाने और उसे मान ले, और वह तेरे मार्ग को मार्गदर्शित करेंगे, और उसे सीधा करेंगे और समतल करेंगे ।

इनके द्वारा आप परमेश्वर की सिध्द शांति प्राप्त कर पाएंगेः

- अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनो और अपने सोचने के तरीके को परमेश्वर के सोचने के तरीके साथ बदल लो ।
- परमेश्वर के वचन का पालन (आज्ञा माने) करें ।
- अपने आपको परमेश्वर को सौंप दो ।
- सिध्द प्रेम में चलो (जीवन यापन करें)।
- अपने संपूर्ण हृदय से परमेश्वर पर भरोसा रखे और अपनी समझ का सहारा न लेना ।

नितिवचन 3:8 के अनुसार सिध्द शांति और अच्छे स्वास्थ के लिए उपरोक्त बाते कुंजी है

यह तुम्हारे शरीर के लिए चंगाई और तुम्हारी हड्डियों के लिए बल है ।

अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाने का महत्व रोमियों 12:2 और इस संसार के सदृश न बनोंः परन्तु तुम्हारी बुध्दी के नए हो जाने से परिवर्तित हो जाओ, ताकि तुम प्रमाणित कर सको कि परमेश्वर की भली और स्विकारयोग्य और सिध्द इच्छा क्या है ।

- संसार के तरीके के अनुसार जीवन न जीयें ।
- चुन लो कि परमेश्वर के वचन के सत्य को तुम्हारे मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनाने दो और परमेश्वर की सिध्द इच्छा को पूरी करो ।
- पिता की तरह विचार करें । प्रभु यीशु की तरह बोलें । आत्मा में चलें।

अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाने का महत्व और परमेश्वर पर भरोसा रखना यह भीतरी स्थिरता समस्थापन को बनाए रखने की कुजी हैं, जो सिध्द शांती को उत्पन्न करता है जिसका परिणाम स्वस्थ प्रतिक्षा तंत्र है ।

बुध्दी की रण–भूमि

आपको स्मरण होगा की जिस स्थान पर प्रभु यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था उसे गोलगुत्ता कहते है , जिसका अर्थ है " खोपड़ी का स्थान " यदि हम आत्मिक युध्द में प्रभावशाली होंगे, वह पहला लड़ाई का स्थान जहॉ हमें लड़ाई लडना सीखना ही होगा वह लड़ाई हमारी बुध्दि की रणभूमी है, जो कि खोपड़ी का स्थान है ।

क्योंकि अक्रुसित (जिसे क्रुस पर न चढ़ाया गया हो) विचारों के जीवन का क्षेत्र हमारे जीवन में शैतानी हमले की चौथी होती है । शैतान को पराजीत करने के लिए, हमें खोपड़ी के स्थान पर क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए। हमें हमारे मन के आत्मिक स्वभाव में नया बनना ही चाहिए ।"

("द थ्री बैटलग्राऊण्ड तीन रणभूमी" इस पुस्तक में से लिए गया हवाला, ऍरो प्रकाशन 2000 फ्रान्सिस फ्रॉगिपॅन के द्वारा)

" बुध्दि का नविनिकरण, भक्ति और नैतिक शुध्दता " पासबान जॅकडब्ल्यु. हेफोर्ड की ओर से हवाला

" नविन करने का अर्थ है, नया करना, नूतन करना" ताजगी या एक मूल अवस्था पुनस्थापना पर लागू होता है । यह छुटकारे की सामर्थ का क्षमता को घनिष्ट (हमसे परिचित करती है) करता है जिससे परमेश्वर की मनुष्यों के लिए मूल उददेश्य की विशेषता को पुनःस्थापित करें और पतन से पहले जैसा निर्धारित किया गया था वैसे ही मनुष्य के प्राण और बुध्दी की क्षमताओं को एक बहाली (पुनःउस अवस्था में लाना) प्रदान करें । बुध्दी बुध्दीमत्ता या समज को संघटित करती है परंतु उसमें वे सारी बाते भी सम्मिलित होती है जो मनोधारणा या बुध्दी निर्धारन इस शब्द में है जो की अनुभूती और इच्छा है। " बुध्दी के नये हो जाने के द्वारा बदल जाना विचार या व्यक्तित्व के प्रकार या सूत्र में अक्षरशः परिर्वतन का संकेत है ।

यह वर्णित करता है, छुटकारे का सामर्थ का प्रयोजन कि हम में भक्ति की स्थापना करे, एक सामर्थ जो बदल देता है :

1. हमारे विचार, जो सत्रबध्दिकरण की ओर अगुवाई करता है
2. हमारे उददेश्य, जो हमारे कृत्य के आदेश की प्रक्रिया करता है, और, ऐसे ही
3. हमारे कृत्य चरित्र बन जाते हैं– आदतों को निर्धारित करते है, जीवन को आकार देते हैं और भविष्य के लिए गति तय करती है । भक्तिपूर्ण जीवन जीने का मार्ग पेचिदा जटील

नही है, ना ही शरीर के द्वारा शक्ति प्रदान किया जाता है, परंतु यह विश्वासियो को निश्चित रूप से पिता के प्रयोजन और मार्ग के लिए इच्छुक समर्पण के लिए बुलाता है ।"

यह समझ लिजिए कि बाबुल की मिनार की कहानी में, परमेश्वर ने इसे नियम के रूप में तय करते है–उत्पत्ति 11:6

और प्रभु ने कहा, देखो, वे सब एक लोग है और उन सब की एक भाषा है, और यह तो जो वो करेगे उसका आरंभ मात्र है, और अब जो कुछ करने की उन्होंने कल्पना की है उसमें से कुछ भी उनके लिए असंभव नही होगा । एम्प्लिफाईड बायबल

- यह नियम भले या बुरे के लिए भी उपयोग में लाया जा सकता है । जिस बात को आप स्थान देते हो, आप उसे सामर्थ भी देते हो ।

  क्योकि जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसे वह आप है (नीतिवचन 23:7अ)

परमेश्वर की कल्पना या अच्छी कल्पना ? यहोशु के विचार, अध्याय 9

- जब गिबोन के निवासियों (लोगो) ने यह सुना कि यहोशू और इस्रालियों ने किस तरह यरीहों और आस–पास के देशो को नष्ट वे जानते थे कि अगले वे ही है क्योंकि नजदीकी में वे निकट थे । यद्यपी गिबोनी निकट ही रहते थे, उन्होने इस्राएलियों के विचारों में छल (चालचली) किया िकवे बहुत दूर से आए है क्योकि उन्होने सुना था कि उन देशो को नष्ट नही किया जाएगा।
- गिबोनियो ने यहोशु को धोखा दिया और उससे कहा जब वे घर से चले थे तब उनकी रोटियॉ गरम और ताजी थी, अब सूख गई है और इसमें फफूंदी लग गई है, साथ ही अन्य झूठ भी बोले ताकि समझा सके की वे एक लाम्बी यात्रा करके आ रहे है ।
- इस्राइली पुरूषों ने रोटी को चखा परंतु प्रभु यहोवा से नही पूछा कि क्या करना चाहिए।
- यहोशू ने सोचा कि उसके पास अच्छी कल्पना है और उन्हे जीवित रखने की शपथ खा कर वाचा बान्धी।
- क्योकी यहोशु ने परमेश्वर से पूछताछ नही कि, और अपनी ही समझ की अगुवाई (के अनुसार) में चला, इस कारण इस्राएलियों को उस वाचा का आदर करना पड़ा जो उन्होंने गिबोनियों के साथ बान्धी थी, यद्यपी उन्होने इस्राएलियों को धोखा दिया था ।

परमेश्वर की कल्पना या अच्छी कल्पना ? नीतीवचन 14:12 ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परतु उसके अन्त मै मृत्यु ही मिलती है ।
यह एक अच्छी कल्पना जान पड़ती होगी।

- हमारे और उसके पुत्र को, " उनकी कल्पना अच्छी है ऐसा जान पड़ा " और यह उन्हे उनकी मृत्यु तक ले कर गई / उत्पत्ति 34
- हामाम को यह एक अच्छी कल्पना सी जान पड़ी कि यहूदी मोदिक को मारने के लिए एक उॅचा फॉसी का खम्भा बनाए ।
- एस्तर की पुस्तक पढें और देखें कि उस अच्छो कल्पना ने हामाम को कहां ले गई ।
- शत्रु ने दाउद के विचारों को प्रभावित किया कि जनगणना करे । " दाऊद को ऐसा सोचने लगाया की यह एक अच्छी कल्पना है ।" 1 इतिहास 21:1
- शासक, दारा ने सोचा यह एक अच्छी कल्पना हो सकती है " दानियेल, अध्याय 6 में दानियेल को सिंहो की मान्द में डाले जाने के विषय मै ।

ऐसा तुमसे किस ने कहा ?
हमारे विचार तीन स्रोतों से आते हैं:

- परमेश्वर– जो हमेशा परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाऐंगे।
- स्वंय – जो हो सकता है और नहीं भी हो सकता है किवे परमेश्वर के वचन के साथ मेल खाए ।
- शत्रु – परमश्वेर के वचन के विपरित होता है और यह एक झूठ होता है।

युहन्ना 10:27 वे भेडे जो मेरी अपनी है वे सुनती और मेरी आवाज को सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूॅ और वे मेरे पीछे पीछे आती हैं । एम्प्लिफाईड बायबल
2 तीमुथियुस 3:16–17 प्रत्येक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की श्वास है (परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है) और निर्देश के लिए, डॉटने (समझाने) के लिए और पाप के प्रति दोषी पाए जाने (कायल होने), गलतियों को ठीक करते और आज्ञाकारिता में अनुशासन, और धार्मिकता में प्रशिक्षित करने के लिए (पवित्र जीवन यापन में, विचारों में परमेश्वर की इच्छा को सुनिश्चित करने के लिए, उद्देश्य और कृत्य), ताकि परमेश्वर का जन पूर्ण हो और निपुण, पूर्ण स्वस्थ और प्रत्येक अच्छे कामों के लिए पूर्णतः सुसज्जित हो । एप्लिफाईड बायबल

याकूब 1:22–24 अपने आप को मूर्ख न बनाओ यह सोचकर की आप एक सुननेवाले है जबकि आप कुछ और हैं परन्तु, वचन को एक कान में से भीतर जाने देते हैं और दूसरे कान से बाहर निकाल देते हो ।

आपने जो सुना है उसके अनुसार कृत्य करें । जो सुनते हैं और उसके अनुसार कार्य नहीं करते वे उनके समान है जो दर्पण में देखता है, वहॉ से चला जाता है, और दो मिनटो के बाद उन्हे कोई कल्पना नहीं होती की वे कौन हैं, वे किस तरह दिखाई देते हैं । मैसेज बायबल हो सकता है कि हमारे विचार दूसरों के द्वारा प्रभावित हों । जैसे दूसरे लोग बोल रहे हैं, वे क्या कह रहे हैं यह उन्हीं तीन स्त्रोतों से आ रहा है।

- परमेश्वर – यह हमेशा परमेश्वर के वचन के अनुरूप होगा ।
- स्वंय– यह परमेश्वर के बचन से मेल खा भी सकता है और नहीं भी ।
- शत्रु – यह परमेश्वर के बचन के विपरीत होगा।

गृह–कार्य कार्यभार

इस अध्याय में जाए जानेवाले शास्त्रभागों को पढ़ें, उसे सुनें, जानें और आज्ञा मानें। परमेश्वर के वचन को जानें, पवित्रशास्त्र के गहराई के साथ परिचित हो जाएँ और आज परमेश्वर के साथ गहराई से परिचित हो जाएंगे ।

- पृष्ठ क्र. ———› पर पाए जानेवाले " मसीह में मै कौन हूँ " इन शास्त्र भागों को पढे और प्रकाशन प्राप्त करें ।
- पृष्ठ क्र. ——— पर " जीवन के वचनों की प्रार्थना " को प्रतिदिन दोहराओ ।

" प्रति दिन के अनुशासन " के साथ इस अध्याय में पाए जानेवाले शास्त्र भागो को पढे और परिचित हो जाएँ।

दैनिक अनुशासन

अपने पुराने व्यक्तित्व को उतार डालो, अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ और अपने नये मनुष्यत्व को पहन लो ।

इफिसियों 4:22–24

इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र भाग के साथ "दैनिक अनुशासन" को पढ़ें और उससे परिचित हो जाएं ।

दैनिक अनुशासन

अपने पुराने व्यक्ति को उतार डालो, अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और अपने नये व्यक्ति को पहन लो ।

इफिसियों 4 : 22–24

"अपने पहले के स्वभाव जो आपके पहले के जीवन को चरितार्थ करता है उसे स्वयं उतार डालो (उतार दो, निकाल दो, फेंक दो) जो अभिलाषाओं और इच्छाओं के द्वारा जो भ्रामक बातों से उत्पन्न होता है उसके द्वारा भ्रष्ट होता जाता हैः और लगातार अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और नये स्वभाव (पुनःसृना हुआ स्वंय) को पहन लो जो परमेश्वर के स्वरूप में (परमेश्वर के समान) सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है । " एम्प्लिफाइड बायबल अनुवाद संसार के सोचने के तरीके सदृष्य न बनोंः परमेश्वर के वचन में अध्ययन करो और अपनी बुध्दि की आत्मा को नया करो ।

रोमियो 12:2

" और इस संसार के सदृश्य न बनो " परन्तु तुम्हारी बुध्दी के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिध्द इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

शारीरीक बुध्दी (शरीर पर मन लगाना) परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता है ।

रोमियो 8:6–7

"शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।"

आत्मा में चलने का चुनाव करें।

गलतियों 5:25

"यदि हम (पवित्र) आत्मा के द्वारा जीवित है, तो आत्मा के अनुसार चले भी। यदि पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा जीवन परमेश्वर में है, तो आओ आगे बढ़ते हुए उसके अनुसार चलें, हमारा आचरण आत्मा के द्वारा नियंत्रीत हो।

– एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

विचारो को कैद कर लो।

2 कुरिन्थियों 10 : 4–6

"क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरीक नहीं, परन्तु गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा में सामर्थी है । सो हम कल्पनाओं (वादविवाद) को, और हर एक ऊंची बात को, जो स्वयं

को परमेश्वर की पहिचान (ज्ञान) के विरोध में उठती है, खण्डन करते है, और हर एक भावना (विचार) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते है.....।"

परमेश्वर के बचन का अध्ययन करें ।

2 तीमुथियुस 2:15

"आपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाऐ, और जो सत्य के बचन को ठीक रीति से काम में लाता हो ।

आपका खजाना एक वस्तु या एक व्यक्ति है जिसका मूल्य या कीमत अत्यन्त अधिक है । खजाने के अर्ध यह भी हो सकता है कि एक किमती के रूप में बडी मूल्य, दुर्लभ या मंहगा। आपका खजाना काहॉ है ? मत्ती 6:21

"क्योंकि जहॉ तेरा धन है वहॉ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

संपूर्ण चंगाई की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय –6

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन के लिए तैयारी

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन के लिए तैयारी पिछले पॉच सप्ताहों से हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन कर रहे हैं और अपने हृदयों को पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतत्रंता के लिए तैयार कर रहे हैं । तैयारी में, हमें चाहिए की हम परमेश्वर पर निरन्तर भरोसा और विश्वास रखे । फिर चाहे हमारे जीवन में कितनी ही सामग्री (कूडा–कचरा) क्यों ना घुस गई हो– फिर चाहे हम अपनी ही इच्छा से इसमें चल कर गए हों या फिर हम इसमें ही जन्मे हो (वंशानुगत) या यह हमारे साथ एक शिकार के रूप में किया गया है – हमें चंगाई स्वतंत्रता और पुनर्स्थापना के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। हम स्वतंत्रता में प्रवेश करने का चयन कर सकते हैं और चंगाई, स्वतंत्रता और के दिन पुनर्स्थापना के दिन परमेश्वर वहॉ हमारे साथ होंगे।

यशायाह 1:18

" यहोवा कहता है आओ हम आपस में वादविवाद करें: तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तो भी वे हिम की नाई उजले हो जाएंगे: और चाहे अर्गवानी रंग के हो, वे उन के समान श्वेत हो जाऐंगे। "

भजन 51:7 एन.एल.टि.अनुवार

मुझे मेरे पापों से शुध्द करे, और मैं शुध्द हो जाऊंगो । मुझे धो, और मै हिम से भी अधिक श्वेत हो जाऊॅगा ।

यूहन्ना 14:6

यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ: बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नही पहुंच सकता ।

1 यूहन्ना 1:9

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुध्द करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है ।

मरकुस 7 :20–23

फिर उस (प्रभु यीशु) ने कहाः जो मनुष्य में से निकलता है, वही मनुष्य को अशुध्द करता है । क्योंकि भीतर से अर्थात मनुष्य के मन (हृदय) से, बुरी बुरी चिन्ता व्यभिचार। चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि निन्दा, अभिमान और मूर्खता निकलती है । ये सब बुरी बातें भीतर ही से निकलती हैं और मनुष्य को अशुध्द करती है ।

- यह बातें भीतर ही से निकलती हैं– बुरे विचार, भ्रष्ट स्वभाव से, सांसरिक बुध्दी से, हृदय में के बुरे खजाने में है ।

गलतियों 5:19–23

शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन/मूर्ति पूजा, टोना बैर, झगड़ा ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, हत्या, मतवालापन, लीला क्रीडा, और इनके ऐसे और और काम है, इनके विषय में मैं तुम को पहले से कह देता हुँ जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ।

- चंगाई, स्वतंत्रता और पुनस्थापना के दिन हम इन बातों की जडों तक पहुँचेंगे जिसके विषय में संत पौलुस यह बात कर रहे हैं।

नीतिवचन 28 :13

जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सुफल नही होता, परन्तु जो उनको मान लेता और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जायेगी ।

अधर्म– अधार्मिकता, दुष्टता, परमेश्वर के विपरीत कुल अन्याय । अधर्म एक आदतन पाप है. जिसके लिए पश्चाताप नही किया गया और वह उस व्यक्ति के चरित्र में अंतःस्थित हो गया है (चरित्र का अभिन्न हिस्सा बन गया है।) पीढ़ियों का अधर्म तब एक पीढ़ी से दूसरी पीढी में पहुंचाया जाता है । जब नियमित रूपसे किये जानेवाले पाप के लिए पश्चाताप न किया गया हो

यशायाह 59:2

परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है , और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुम से ऐसा छिपा है कि वह नही सुनता।

भजन 90:8

तूने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख, और हमारे छिपे हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है ।

भजन 38:18

इसलिए कि मैं तो अपने अधर्म को प्रगट करूंगा, और अपने पाप के कारण खेदित रहूंगा। यह हमारे हृदय की पुकार होना चाहिए । भजन 141:4 मेरा मन (हृदय) किसी, बुरी बात की ओर फिरने न दे, मैं अनर्थकारी पुरूषों के संग, दुष्ट कामों में न लगूँ ...

भजन 32:5

जब मैं ने अपना पाप तुम पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, मै यहोवा के सामने आपने अपराधों को मान लुँगा : तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया ।

- चंगाई, स्वतंत्रता और पुनर्स्थापना के दिन हम हमारे जीवन के किसी भी अधर्म पर नैतिक अधिकार लेंगे।

रोमियों 1: 21

..... क्योंकि, वे परमेश्वर को जानते पर भी, उन्होने उसको परमेश्वर के रूप में महिमा नही दी (या उसे परमेश्वर के रूप में जाना), ना ही वे धन्यवादी हो, परन्तु व्यर्थ विचार किया (अपने विचारों में व्यर्थ बने) और उनके मूर्ख हृदय अन्धकारमय हो गए । (उनके विचारो में व्यर्थता खाली, व्यर्थ निरूपयोगी और महत्वहिन विचार)

- परमेश्वर को जानते– अवलोकन, पूछताछ या जानकारी के द्वारा परमेश्वर से अवगत होना ।
- परमेश्वर को जानना– परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध के द्वारा ।

इफिसियों 4:18

उनकी बुध्दि अन्धेरी हो गई है और उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं ।

- ठीक उसी तरह जैसे संत पौलुस बात कर रहे हैं कि अंधियारा हो जाता और असमंजस में पड़ते के बारे में, वैसे ही हम भी मसीही वैसे ही हो सकते हैं, हमारे जीवन में उन अधार्मिक प्रभाव के कारण जिसके विषय में हम अनजान हैं ।

यशायाह 5:13

इसलिये अज्ञानता के कारण मेरी प्रजा बंधुवाई में जाती है...

भजन 139:23–24

हे ईश्वर मुझे जांचकर जान ले । मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले । और देख कि सुख में कोई बुरी चाल है कि नही, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर ।

भजन 19:14

मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हो, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उध्दार करनेवाले।

इब्रानियों 12:1–2 प्रभु यीशु ने क्रूस पर कार्य को पूर्ण किया हमें उसे अपने जीवनों में अपनाने की आवश्यकता है । इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बडा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु, और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिस में हमे दौड़ना है, धीरज से दौड़े । और विश्वास के कर्ता और सिध्द करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहे, जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था लज्जा की कुछ चिन्ता न क्रूस का दुख सहा, और सिहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा ।

मैथ्यू हेनरी की टिप्पणी – इब्रानियों 12:1–2

मसीह में विश्वास की जबरदस्त आज्ञांकारीता, वह दौड़ थी जो इब्रानी लोगों के सामने रखी गई थी, जिसमें उन्हें अवश्य था की यातो महिमा का मुकुट जीते, या फिर उनके भाग में अनन्तकालीन दुर्गती होगी और यह हमारे सामने रखा है ।

पाप के द्वारा जो आसानी से हमें रोकता है, इस बात को समझ लें कि वह पाप जिसकी ओर हमारा अधिक झुकाव होता है, या जिसके प्रति, हम सबसे अधिक आदत से, आयु के कारण या परिस्थिती से खुले हुए रहते हैं । यह सबसे महत्वपूर्ण प्रोत्साहन है, जबकी एक व्यक्ति का प्रिय पाप, जैसा है वैसा ही रहे, अनियान्त्रित बना रहे, वह उसके लिए रूकावट बनेगा पीड़ा को कम नहीं करेगा और बिना अनभुती के उनके अधिन रहेगा, कि मसीही दौड़ दौडने से, यह उसके पास से दौड़ने के प्रत्येक उद्देश्य को ले लेगा और हर प्रकार की निराशा को सशक्त करेगा । जब उनके मनों में थकान और मूर्च्छा हो, तब उन्होने यह स्मरण करता है कि पवित्र यीशु ने दुःख उठाया उन्हे अनन्त दुर्गति से बचाने के लिए । प्रभु यीशु को एकटक देखते रहने के द्वारा

उनके विचार पवित्र स्नेह को शक्ति प्रदान कर सकता है, और उनकी सांसारिक (शारीरीक) इच्छाओं को वश मैं रखता है ।

आओ हम लगातार प्रभु यीशु की ओर ध्यान लगाएं। हमारी छोटी सी परिक्षा या हमारी मरूभूमी भी प्रभुयीशु की पीड़ाओं के सामने क्या है ? कई अन्य लोगों के दुःख उठाने के सामने वे क्या है ? विश्वासियों में थकित और परिक्षा और कष्टों के तहत मूर्छित हो जाने की प्रवृत्ति होती है। यह अनुग्रह की असिध्दता की ओर से होता है और भ्रष्टाचार के बचे रहने से । मसीहियों ने उनकी परीक्षा के समय मूर्छित नहीं होना चाहिए।

चाहे उनके शत्रु और सतानेवाले उनके दुःखों को उनके ऊपर डालने के पीछे के स्त्रोत हो, तौभी वे अलौकिक ताड़नार है उनके स्वर्गिय पिता का हाथ इन सब में है, और सभी के द्वारा उत्तर का उसका तरीका है । वे होना ही चाहिए, वे परमेश्वर के हाथ और लाठी हैं, और पाप के लिए उनकी डॉट है ।

परमेश्वर के पास एक योजना है और हमारे पास एक चुनाव है।

युहन्ना10:10 अ, प्रभु यीशु हमें बताते हैं कि हमें नष्ट करने की शत्रु की एक योजना है और वह एक स्थान चाहता है, फिर भी, यह हमारा चुनाव है कि हम उसे स्थान न दें, इफिसियों 4:27 के अनुसार। प्रभु यीशु ने घोषणा की कि उनके पास योजना है कि हमें बहुतायात का जीवन दे ।

युहन्ना 10:10

"मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाए, और बहुतायत से पाएं।"

यह चुनाव हमारा होता है कि हम बहुतायत के जीवन में प्रवेश करें जो परमेश्वर ने पहले से उपलब्ध कराया है। परमेश्वर शुध्दिकरण और स्वतंत्रता उपलब्ध कराते हैं।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन की तैयारी में, हमें लगातार परमेश्वर पर भरोसा और विश्वास करना चाहिए। चाहे हमारे जीवन में कैसी भी सामग्री ने प्रवेश क्यों न किया हो चाहे हमने अपने चुनाव (पसन्द) के द्वारा उसमें प्रवेश किया हो, या हम उस में जन्में है, (वंशानुगत), या एक शिकार के रूप में यह हमारे साथ किया गया हो हमारे पास चुनाव है कि या तो हम लगातार उसी में चलते (जीवन यापन करते) रहे या उससे बाहर निकल आये हम स्वंतत्रता में प्रवेश करने का चुनाव कर सकते हैं और पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन परमेश्वर हमारे साथ होंगे ।

लूका 15:11–28–32

11. फिर उसने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे । 12. उनमें से छोटे ने पिता से कहा, हे पिता, संपत्ति में से जो भाग मेरा हो वह मुझे दे दीजिए । उसने उनको अपनी संपति बॉट दी। 13. बहुत दिन न बीते थे कि छोटा पुत्र सब कुछ इकट्ठा करके दूर देश को चला गया, और वहॉ कुकर्म में अपनी संपत्ति उड़ा दी। 14. जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ा अकाल पड़ा, और वह कंगाल हो गया । 15. इसलिये वह उस देस के निवासियों में से एक के वहॉ जा पडा। उस ने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिए भेजा 16. और वो चाहता था कि उन फलियों से जिन्हे सूअर खाते थे अपना पेट भरे और उसे कोई कुछ नही देता था 17. जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है । और मैं यहा भूखॉ मर रहा हूँ। 18. मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा की पिताजी, मैं स्वर्ग के विरोध में और तेरे दृष्टी में पाप किया है । 19. अब इस योग्य नही रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ । मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले 20. तब वह उठकर अपने पिता के पास चला । वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा । 21. पुत्र ने उससे कहा, पिताजी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टी में पाप किया है और अब इस योग्य नही रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ 22. परंतु पिता ने अपने दासों से कहा, झट अच्छे से अच्छा वस्त्र पहिनाओ, और उसके हाथ में अँगूठी, और पॉवों में जूतियॉ पहनाओं, 23. और पला हुआ पशु लाकर मारो ताकि हम खाएँ और आनंद मनाएँ। 24. क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया हैः खो गया था, अब मिल गया है । और वे आनंद करने लगे ।

25. परन्तु उसका जेठा पुत्र खेत में था। जब वह आते हुए घर के निकट पहुँचा, तो उसने गाने–बजाने और नाचने का शब्द सुना 26. अतः उसने एक दास को बुलाकर पूछा, यह क्या हो रहा है । 27. उसने उससे कहा, तेरा भाई आया है। और तेरे पिताने पला हुआ पशु कटवाया है, इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है , 28. यह सुनकर वह क्रोध से भर गया और भीतर न जाना चाहा परंतु उसका पिता को बाहर आकर उसे मनाने लगा ।

29. उसने पिता को उत्तर दिया देख मैं इतने वर्ष से तेरी सेवा कर रहा हूँ और कभी भी तेरी आज्ञा नही टाली तो भी तूने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया, कि मै अपने मित्रों के साथ आनंद करता 30. परंतु जब तेरा यह पुत्र जिसने तेरी संपत्ती वेश्याओं में उड़ा दी है आया, तो उसके लिये पला हुआ, पशु कटवाया 31. उसने उससे कहा, पुत्र तू सर्वदा मेरे साथ और जो कुछ मेरा है , वह सब तेरा ही है । 32. परंतु अब आनंद करना और मगन होना चाहिए क्योंकि यह तेरा भाई मर गया था । फिर जी गया है खो गया था अब मिल गया है।

- वचन 17 में, उड़ाऊ पुत्र अपने होश में आया । वह अपनी सही बुध्दि में आया।
- वचन 18 में, उड़ाऊ पुत्र ने पहचाना जाना की उसने पाप किया है । उसने एक निर्णय लिया कि अपने पिता और स्वर्ग के सामने पश्चाताप करेगा।
- पश्चाताप पाप के लिए दुःखी होना है, अंगीकार है कि पवित्र परमेश्वर के विरोध में अपराध किया, और फिर हृदय में परिवर्तन जो कृत्य के परिवर्तन में स्वयं को प्रगट करता है ।
- उड़ाऊ पुत्र ने अपने पाप के लिए जवाबदारी ली, वह अपने पृथ्वी पर के (सांसारिक) पिता के सामने पछताया और पुनर्स्थापित किया गया ।
- उड़ाऊ पुत्र के ही समान, हम भी अपने हृदय में परिवर्तन ला सकते हैं और पश्चाताप कर सकते हैं, और अपने स्वर्गीय पिता, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास जाएं, और चंगे हो जाएं और पुनर्स्थापित हो।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन के लिए तैयारी

परमेश्वर की उंगली क्या है ?

परमेश्वर की उंगली परमेश्वर की सामर्थ है शत्रु की सामर्थ को नष्ट करती, बलवान व्यक्ति के सारे हथियारों को उतार लेता है और हमारे जीवन पर होनेवाले अभक्तिपूर्ण प्रभावों को जो सूखे स्थानों में ले जाते हैं हटा देती है।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन में हम परमेश्वर की उंगली को बड़ी सामर्थ के साथ काम करते हुए देखेंगे।

परमेश्वर की उंगली क्या है ?

लूका 11:20–22 प्रभु यीशु के वचनः

परन्तु यदि मैं परमेश्वर के सामर्थ से दुष्ट आत्माओं को निकालता हूँ तो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है जब बलवंत मनुष्य हथियार बांधे हुए अपने घर की रखवाली करता है तो उसकी संपत्ती बची रहती है । पर जब उससे बढ़कर कोई और बलवंत चढ़ाई करके उसे जीत लेता है । तो उसके वे हथियार जिसपर उसका भरोसा था छीन लेता है और उसकी संपत्ती लूटकर बॉट देता है ।

- उपरोक्त शास्त्रभाग परमेश्वर के राज्य की सामर्थ का वर्णन करता है जो अंधकार के छोटे राज्य पर प्रबल होकर राज्य करता है । इस कमजोर राज्य का वर्णन बलवंत मनुष्य, शैतान करके लिया गया है ।

परमेश्वर की उंगली क्या है ?

मूसा को दस आज्ञाएँ परमेश्वर की उंगली के द्वारा प्रदान की गई ।

व्यवस्था विवरण 9:10

और यहोवा ने मझे अपने ही हाथों (परेमश्वर की उंगली) की लिखी हुई पत्थर की दोनों पटियाओं को सौंप दिया और वे ही वचन जिन्हें यहोवा ने पर्वत के ऊपर आग के मध्य में से सभा के दिन तुम से कहे थे वे सब उन पर लिखे हुए थे ।

परमेश्वर की उंगली क्या है ?

निर्गमन 8:19

तब जादुगरों ने फिरौन से कहा, यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है (वह परमेश्वर की अंगुली है) तौभी यहोवा के कहने के अनुसार फिरौन का मन कठोर होता गया, और उस ने मूसा और हारून की बात न मानी ।

- शीघ्र ही या बाद में परमेश्वर अपने शत्रुओं को भी बाध्य करेगा कि वे परमेश्वर की अपनी सामर्थ को पहचानें ।
- वचन 18 में जादुगरों ने परमेश्वर की सामर्थ की नकल करने का प्रयास किया, परंतु वे नही कर पाए । इस बात ने उन्हे बाध्य किया कि अंधिकार (मान) कटले यह परमेश्वर की अंगुली है ।

पुनर्स्थापना चंगाई और स्वतंत्रता के दिन, परमेश्वर की उंगली आपके जीवन में से और पीढियों में से अभक्तिपूर्ण प्रभाव को निकाल देगी।

फिलिप्पियों 2:13

क्योंकि परमेश्वर आप में काम कर रहे हैं, आपको इच्छा प्रदान कर रहे हैं और जो परमेश्वर को प्रसन्न करे ऐसा काम करने की सामर्थ देते हैं ।

अपने कानूनी अधिकार को जानें –पासबान रॉन की छत के काम की कहानीः

पासबान रॉन ने एक कम्पनी को अपनी छत के तखते (पहरें) बदलने का काम दिया। जिस दिन उन्होंने पुराने तखते उखाड़े, उसी दिन एक बड़ी बरसाती आंधी आने वाली थी और उस कम्पनी के पास इस खुली छत को, ढॉकंने के लिए मात्र एक छोटी सी तिरपाल थी जिसमें बहुत से बड़े–बड़े छेद थे। बारिश आई, पासबान रॉन और उनका परिवार बाल्टियाँ, बर्तन, कटोरे लेकर छत में से घर के भीतर आ रहे पानी को एकत्रित करने लगे। घर के भीतरी भाग को बहुत अधिक क्षति पहुंची थी।

वह ठेकेदार वर्शा के थमने के बाद आया ओर छत का काम पूरा किया। पासबान रॉन ने उन्हें पूरा पैसा नहीं दिया जब तक वे उस पूरे घर को क्षतिग्रस्त छत को सुधार कर देने के लिए सहमत नहीं हुए, परन्तु वह ठेकेदार ने उस छत को सुधारने से इन्कार किया था उस क्षति की जिम्मेदारी लेने से जिससे भीतरी छत को हुई थी इन्कार किया और पासबान रॉन ने ठेकेदार को बाकी पैसा देने से इन्कार किया।

महिनों तक लिखित सूचनाएं भेजने के पश्चात उन्होंने पा.रॉन का मामला एक वसूली विभाग (एजंसी) को सौंप दिया, जो रॉन को दोषी ठहराने की नीति के द्वारा लगातार पीछे पड़ गए । इस तरह परेशान किये जाने से पा. रॉन थक गए थे, इसलिए उन्होंने एक निर्णय लिया अब वे इस बारे में क्या कर सकते हैं, उसे देखें। पा. रॉन ने एक न्याय प्रतिनिधी (अटर्नी) से सम्पर्क किया । उस न्याय प्रतिनिधी ने ग्राहक सुरक्षा नियम पर एक सरसरी दृष्टी डाली और पा. रॉन को सलाह दी कि अगली बार जब वसूली दस्ते का फोन आए तब नियम के इस विषेश संदर्भ का उल्लेख करना साथ ही पुस्तक, पृष्ठ क्रमांक तथा अध्याय भी बताना ।

जैसे ही पा.रॉन को मालूम हो गया कि क्या बोलता है तो अब उनके फोन आने की बॉट जोहना कठिन हो गया था । वसूली दस्ते ने फोन किया, पा.रॉन ने नियम क्या कहता है उसका उल्लेख किया, दूसरी ओर शान्ति थी, उन्होंने फोन रख दिया और फिर उसके बाद उन्होंने पा. रॉन को परेशान नहीं किया ।

पासबान रॉन को इस नियम के बारे में विस्तृत जानकारी की आवश्यकता नही थी, उन्हें केवल उसका उल्लेख करना था । ठीक यही बात आत्मिक क्षेत्र में भी लागू होती है । जैसे की पासबान रॉन के घर की छत के काम की कहानी में है, वैसे ही पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतन्त्रता के दिन, हम नियम, को लागू करेंगे परमेश्वर का वचन और आत्मिक परेशानियॉ रूक जाएंगी ।

समय की व्याख्याः जब आपका भूतकाल आपके वतर्मान का हिस्सा बन जाता है तब यह आपके भविष्य को प्रभावित करता है । यदि हमारे भूतकाल की नकारात्मक बातें लगातार हमारे वर्तमान का हिस्सा बनती है तब यह हमारे भविष्य का विनाश करती है ।

हमें चाहिए की हम भूतकाल से स्वतंत्र हो जाए, ताकि हमारे पास वर्तमान काल की स्वतंत्रता रहे और परमेश्वर की दृष्टी से भविष्य को देखें ।

इस बात को समझ लें कि जिस तरह आपके पास नैसर्गिक (स्वाभाविक) नैतिक अधिकार है, वैसे ही शत्रु पर आपके पास आत्मिक अधिकार है ।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतत्रंता के दिन चोर का खुलासा करेंगे और उसे पकड़ेंगे ।

तौभी यदि वह पकड़ा जाए, तो उसको सातगुणा भर देना पडेगा, वरन अपने घर का सारा धन देना पड़ेगा – नीतिवचन 6:31

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन हम क्या करने वाले हैं ? तकरीबन 2,500 वर्षो पूर्व नहेमयाह भविष्यवक्ता ने परमेश्वर के लोगों को पवित्रता की आज्ञा दी। उन्होंने पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता का पूरा दिन परमेश्वर के वचन को पहने, अपने पापों का और उनसे पहले कि पीढ़ी की बुराइयों का अंगीकार करने तथा परमेश्वर की आराधना में बिताया । यही हम भी करने जा रहे है ।

नहेमायाह 9:1–3

1. फिर उसी महीने के चौबीसवें दिन को इस्त्राएली उपवास का टाट पहिने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए 2. तब इस्त्राएल के वंश के लोग सब अन्य जाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर अपने अपने पापों और पुरखाओं के अधर्म के कामों को मान लिया 3. तब उन्होंने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा कि व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते, और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा को दंडवत करते रहे ।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन हम क्या करनेवाले हैं ?

- वचन पढ़ेंगे ।
- अभक्ति के प्रभाव की जड़ों को पहचानेंगे ।

- अपने पापों और हमसे पहले के पूर्वजों के अधर्मो का अंगीकार करेंगे।
- परमेश्वर के वचन की घोषणा करने के द्वारा शत्रु पर नैतिक अधिकार लेंगे।
- स्वर्ग की कचहरी (आंगन) में घोषणा करेंगे की शत्रु ने जो हमारे जीवनों में, हमारे परिवार और हमारी पीढ़ियों पर जो अभक्तिपूर्ण प्रभाव डाला है उसे निष्क्रिय करें।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन हम क्या करनेवाले हैं ? हम सभी और किसी भी दुष्ट आत्मा पर और अभक्तिपुर्ण संलग्नता पर अधिकार लेंगे।

कडवाहट की आत्मा

धीरे–धीरे नाशा करनेवाली, क्षयकारी और हमें मार डालना चाहती है ।

दोष लगानेवाली आत्मा

एक झूठ बोलनेवाली आत्मा जो हमपर दोष लगाती और हमारे विरोध में आरोप लगाती है ।

तन्त्र–मन्त्र की आत्मा

कोई भी ऐसी बात जो परमेश्वर के तरीके विपरीत हों ,जैसे सोचने का तरीका और काम ।

ईर्ष्या और जलन की आत्मा

जो हमारा नहीं है वही चाहती है ।

तिरस्कार की आत्मा

यह हमें निकाल देना चाहती है और हटा देना चाहती है ।

लत की आत्मा

यह हमें धोखा देती है कि हम यह सोचें कि हमें परमेश्वर के अलावा कुछ और चाहिए।

प्रेम न करनेवाली आत्मा

ठीक जैसे उसका अर्थ है, यह प्रेम नहीं करती, अशुध्द और परमेश्वर की रचना से घृणा करती है । यह उन सब में से सबसे नीच आत्मा है क्योंकि यह पूर्णतः परमेश्वर, जो प्रेम है उनके विपरीत है ।

भय की आत्मा

परमेश्वर पर भरोसे और विश्वास की कमी, परमेश्वर के सिध्द प्रेम में चलने की कमी ।

गरीबी की आत्मा

परमेश्वर के साथ सही तरह के संबंध की कमी जो दूसरों के साथ हमारे संबंध और हमारे संसाधनों को प्रभावित करता है।

पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन की तैयारी के लिए क्या आप परमेश्वर को अपना हृदय जॉचने देंगे ? क्या आप व्यक्तिगत रीति से स्वयं पर परमेश्वर की सहायता से शोध कार्य करने के लिए इच्छूक है ?

याद रखें परमेश्वर के सामने अंगीकार करना क्षमा, चंगाई और पुनस्थापना लाता है ।

1. पुनर्स्थापना चंगाई और स्वतंत्रता के दिन से पहले परमेश्वर के साथ शान्त रहकर प्रभु के सामने अपने हृदय को तैयार करो ।
2. वैकल्पिक– पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन से 2 या 3 दिन पहले कृपया ध्यान करें ।

   अ. जैसा की दानिएल 10:3 में आया है वैसा ही एक आंशिक उपवास जिसमें मनपंसद भोजन को नहीं खाना या एक दिन में एक समय के भोजन को न खाने पर विचार करें । महत्वपूर्ण बातः कृपया पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के उस दिन भोजन का उपवास न करें, आप सहभागी होने से पहले भोजन खा कर आएं ।

   ब. मिडिया का उपवास करें ।

   क. अनावश्यक गतिविधियों का उपवास करें
3. इस अध्याय में जितने वचन दियेगए हैं उन सभी को पढ़ें साथ ही दैनिक अनुशासन को भी पढ़ें ।
4. सेवकाई के दिन जिन बातों को आप चाहते हो कि परमेश्वर आपके लिए करे उनकी सूची बनाएं :

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

.....

हम आपको आश्वस्त करना चाहते हैं कि कोई भी निराश नही होगा या कोई भी अलग अकेला नही छूटेगा । वचन का पटना और जिन घोषणाओं को हम घोषित करेंगे वे सामूहिक रूप से हम अपने स्थानों पर से करेंगे। इस बात का भरोसा रखें कि आप हमारे सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर की उपस्थिती में सुरक्षित अनुभव करेंगें। पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन कि तैयारी के लिए आपका, खजाना (धन) यह एक वस्तु या एक व्यक्ति जिसको उच्च मूल्य या कीमत दि गई हो । आपका खजाना कहॉ है ?

मत्ती 6:21

क्योंकि जहॉ तेरा धन है वहॉ तेरा मन भी लगा रहेगा ।

परमेश्वर ने आपको सृजा और ढाला है । यिर्मयाह 1:5

गर्भ में रचने से पहले ही मैने तुझ पर चित्त लगाया, और उत्पन्न होने से पहिले ही मैने तुझे अभिषेक किया: मै ने तुझे जातियों का भविष्यवक्ता ठहराया । एक भविष्यवक्ता वह होता है जो परमेश्वर के वचन को बोलता है ।

प्रभु यीशु मसीह, हमारे चंगा कर्ता और छुटकारा दाता।

यशायाह 61:1

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझपर है क्योंकि यहुवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया और मुझे इस लिये भेजा है कि खेदीत मन के लोगों को शान्ति दूँ कि बंन्दियों के लिए स्वंतत्रा का और कैदीयों के लिये छुटकारे का प्रचार करों।श

प्रभु निकट है । भजन 34 :18

यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है,

और पिसे हुओं का उध्दार करता है।

आपके प्रति परमेश्वर के विचार बहुमूल्य हैं।

भजन 139:17–18

मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं । उनकी संख्या जोड़ कैसा बड़ा है। यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते । जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे संग रहता हूँ ।

आपके प्रति परमेश्वर के विचार।

यिर्मयाह 29:11

क्योंकि यहुवा की यह वाणी है, की जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अंत में तुम्हारी आशा पुरी करूंगा।

आप परमेश्वर के मित्र है । युहन्ना15:15 प्रभु यीशु के शब्दः

मैं ने तुम्हें मित्र कहा है, क्योंकि मैं ने जो बातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दीं।

प्रभु का आत्मा हमें स्वतंत्र करता है । 2 कुरिन्थियों 3:17

प्रभु तो आत्मा है : और जहॉ कही प्रभु का आत्मा है वहा स्वतंत्रता है ।

गृह–कार्य

इस अध्याय में पाए जाने वाले शास्त्र भागों को पढ़े, सुनें, जानें, और पालन करें। परमेश्वर के वचन को जानें, पवित्रशास्त्र के साथ गहराई के साथ परिचित हो जाएँ और आप परमेश्वर के साथ और अधिक गहराई के परिचित हो जाओगे ।

- पृष्ठ क्रमांक ..... पर " मै मसीह में कौन हू " इन शास्त्र भागों को पढ़ें और उसका प्रकाशन प्राप्त करें ।
- पृष्ठ क्रमांक ..... पर " जीवन के वचनों की प्रार्थना " को प्रतिदिन दोहराए ।

इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र के भाग के साथ "दैनिक अनुशासन" को पढे और उससे परिचित हो जाएं

दैनिक अनुशासन

अपने पुराने व्यक्ति को उतार डालो, अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और अपने नये व्यक्ति को पहन लो ।

इफिसियों 4 : 22–24

"अपने पहले के स्वभाव जो आपके पहले के जीवन के चरितार्थ करता है उसे स्वंय उतार डालो (उतार दो, निकाल दो, फेंक दो) जो अभिलाषाओं और इच्छाओं के द्वारा जो भ्रामक बातों से उत्पन्न होता है उसके द्वारा भ्रष्ट होता जाता हैः और लगातार अपनी बुध्दि की आत्मा में नये बनते जाओ और नये स्वभाव (पुनःसृजा हुआ स्वयं) को पहन लो जो परमेश्वर के स्वरूप में (परमेश्वर के समान) सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है । " एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद संसार के सोचने के तरीके सदृश्य न बनोः परमेश्वर के वचन में अध्ययन करो और अपनी बुध्दि की आत्मा को नया करो ।

रोमियो 12:2

" और इस संसार के सदृश्य न बनो " परन्तु तुम्हारी बुध्दी के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली और भावती, और सिध्द इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।।

शारीरीक बुध्दी (शरीर पर मन लगाना) परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता है ।

रोमियो 8:6–7

"शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु हैं, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है। क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।"

आत्मा में चलने का चुनाव करें।

गलतियों 5:25

"यदि हम (पवित्र) आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। यदि पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा जीवन परमेश्वर में है, तो आओ आगे बढ़ते हुए उसके अनुसार चलें, हमारा आचरण आत्मा के द्वारा नियंत्रीत हो।

– एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

विचारों को कैद कर लो।

2 कुरिन्थियों 10 : 4–6

"क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरीक नही, परन्तु गढ़ो को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी है । सो हम कल्पनाओं (वादविवाद) को, और हर एक ऊंची बात को, जो स्वयं को परमेश्वर की पहिचान (ज्ञान) के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं, और हर एक भावना (विचार) को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं.....।"

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें ।

2 तीमुथियुस 2:15

"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो ।

आपका खजाना एक वस्तु या एक व्यक्ति है जिसका मूल्य या किमत अत्यन्त अधिक है । खजाने के अर्ध यह भी हो सकता है कि एक किमती के रूप में बड़ी मूल्य, दुर्लभ या मंहगा। आपका खजाना कहॉ है ? मत्ती 6:21

"क्योंकि जहॉ तेरा धन है वहॉ तेरा मन भी लगा रहेगा।"

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय 7

प्रतिदिन इसमें चलना – नयी की गई बुध्दि

हमारा पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता का दिन एक जीवन को बदल देनेवाली घटना थी, केवल आपके लिए ही नहीं, परतु आपके परिवार और उन सभी के लिए भी जिन्हें आप जानते हो । परमेश्वर का अभिषेक और उपस्थिति हमें स्वतंत्र करती है और हमें चंगा करती है, जब हम परमेश्वर के साथ अपनी यात्रा को जारी रखते हैं और जो महान योजना परमेश्वर के पास हमारे लिए है ।

इसमें चलना यह शुध्दिकरण की प्रक्रिया है । यह सारे जीवन भर की यात्रा है । यह साथ ही वह प्रकिया भी है जिससे हमारी अवस्था बदल गई । संत पौलुस हमें बता रहे हैं कि हम शुध्द किये गए हैं, हम शुध्द किए जा रहे हैं। और हम कुरिन्थियों 1:10 के अनुसार लगातार शुध्द होते रहेंगे ।

विवरणात्मक अनुवाद

प्रति दिन इसमें चलना – प्रभुयीशु मसीह के साथ और अधिक गहराई से परिचित होना है । संत पौलुस फिलिप्पियों 3:11–11 में लिखते हैं :

(क्योंकि मेरा ठाना हुआ उददेश्य यह है) की मैं उसे जानूँ (कि मैं उसके साथ उन्नतशील रीति से और अधिक गहराई से और घनिष्ठता से परिचित हो जाऊँ, अनुभव करते हुए और पहचानते हुए और उसके व्यक्ति के अद्भुतकार्य को और अधिक दृढ़ता से और अधिक स्पष्टता से समझते) और यह कि मै उसी तरह से जान पाऊँ उस सामर्थ को जो उसके पुनरूत्थान से प्रभावित होती है (जो विश्वासियों पर काम में लाई गई है,) और यह कि मै उसके दुःख उठाने को ऐसा बॉट लू ताकि लगातार बदलता चला जाऊँ (आत्मिक और नैतिक) पुनरूत्थान को प्राप्त कर सकूँ (जो मुझे उठाता है) मृतकों के मध्य में से बाहर (यहॉ तक कि जब देह में हो तब भी)

एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

- वचन 11 पौलुस की ओर से संदेह की अभिव्यक्ति नही है, परन्तु यह एक गहरी नम्रता की अभिव्यक्ति है जो निःस्वार्थता, दास स्वरूप, और पाप के लिए मर कर के मसीह के प्रति आज्ञाकारी होने की वृत्ति को पाना है ।

संत पौलुस फिलिप्पियों 3:12–14 में अपनी बात जारी रखते हैं ।

यह मतलब नही की मैं पा चुका हूँ; या सिध्द हो चुका हूँ; पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूँ; जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकडा था 13 हे भाईयों भावना यह नही की मैं पकड़ चुका हूँ;परंतु केवल यह एक काम करता हूँ; की जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर आगे की बातो की ओर बढ़ता हूआ 14 निशाने की ओर दौडा चला जाता हूँ; ताकि वह ईनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर मुझे मसीह यीशु में मुझे ऊपर बुलाया है ।

- दौड़ा चला जाता हूँ इस शब्द का अर्थ है : किसी का शक्ति के साथ अनुशरण करना, उत्साह के साथ अनुसरण करता और प्राप्त करने में परिश्रम होना, या प्रतिस्पर्धा में कोई कीमत को नहीं बचाना !
- भूतकाल की बातों को भूल जाता हूँ और उन बातों को पहुँचना (बढ़ते जाना) जो हमारे सामने हो।
- हम सभी को आगे बढ़ते जाने की आवश्यकता है, मसीह के साथ और अधिक गहराई से और घनिष्टता से परिचित बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई खर्च में बचाव (कटौती) नहीं करना।

नवीन की हुई बुध्दि

अपने भूतकाल के नकारात्मकता में जीवन न जीयें।

समय की एक व्याख्याः जब आपका भूतकाल आपके वर्तमान काल का हिस्सा बन जाए तब यह आपके भविष्य को प्रभावित करेगा।

समय की व्याख्याः जब आपका भूतकाल आपके वतर्मान का हिस्सा बन जाता है तब यह आपके भविष्य को प्रभावित करता हैं । यदि हमारे भूतकाल की नकारात्मक बातें लगातार हमारे वर्तमान का हिस्सा बनती हैं तब यह हमारे भविष्य का विनाश करती है ।

हमें चाहिए की हम भूतकाल से स्वतंत्र हो जाएँ ताकि हमारे पास वर्तमान काल की स्वतंत्रता रहे और परमेश्वर की दृष्टी से भविष्य को देखें । पासबान रॉन शोनहर

हमने पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता का दिन पूरा किया है और हमारे जीवन पर और परिवार पर यदि शत्रु के पास कोई कानूनी अधिकार था भी तो उसे समाप्त कर दिया गया है । परमेश्वर के साथ हमारा सही संबंध और व्यवस्थाविवरण 28:1–14 की सारी आशिषें अब हमारी है जब हम प्रति दिन उसमें चलते हैं ।

ध्यानपूर्वक निरिक्षण करना, मनन करते और परिश्रम के साथ परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर की वाणी की आज्ञा पालन करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 28:1–14

1. यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातीयों में श्रेष्ठ करेगा ।
2. फिर अपने परमेश्वर यहोबा की सुनने के कारण ये सब आशिर्वाद तुम पर पूरे होंगे। क्यों ये सब आशिर्वाद तुम पर पूरे होना चाहिए ? क्योंकी तूने परमेश्वर की बात सुनी है– आज्ञा मानी है।
3. धन्य हो तू नगर में, धन्य हो तू खेत में।
4. धन्य हो तेरी सन्तान, और तेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़–बकरी आदि पशुओं के बच्चे ।
5. धन्य हो तेरी टोकरी और कठौती।
6. धन्य हो तू भीतर आते समय, और धन्य हो तू बाहर जाते समय ।
7. " यहोवा ऐसा करेगा कि तेरे शत्रु जो तुझ पर चढ़ाई करेंगे वे तुझ से हार जाएँगे वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ाई करेंगे परन्तु तेरे सामने से सात मार्ग से होकर भाग जाएँगे ।
8. तेरे खत्तों पर और जितने कामों में तू हाथ लगाएगा उन सभों पर यहोवा आशिष देगा, इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देता है , उसे वह तुझे आशीष देगा
9. यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गो पर चले, तो वह अपनी शपथ के अनूसार तुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर रखेगा ।
10. और पृथ्वी के देश देश के सब लोग यह देखकर, कि तू यहोवा कहलाता है, तुझ से डर जाएँगे ।
11. और जिस देश के विषय यहोवा ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर तुझे देने को कहा था उसने वो तेरी संतान की और भूमि की उपज की और पशुओं की बढ़ती करके तेरी भलाई करेगा।

12. यहोवा तेरे लिए अपने आकाशरूपी उत्तम भंडार को खोलकर तेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करेगा, और तेरे सारे कामों पर आशिष और तू बहुतेरी जातियों को उधार देगा, परन्तू किसी से तुझे उधार न लेना पड़ेगा।
13. और यहोवा तुझको पूँछ नही किन्तु सिर ही ठहरायेगा और तू नीचे नहीं परंतु ऊपर ही रहेगा और यदि परमेश्वर यहोवा आज्ञाएँ जो मैं आज तुझको सुनाता हू उनके मानने में मन लगाकर चौकसी करें ।
14. और जिस वचनों की मैं आज तुझे आज्ञा देता हूँ उसमें किसी से दाहिने या बायें मुड़के पराये देवता के पीछे न होने, और न उसकी सेवा करें।

हमारा पदस्थान तो बदल गया है परन्तु हमारी दशा (अवस्था) जैसा हमें दिखाई देता है , वह नही बदली है । जब तक हमारे बुध्दि (मन) की आत्मा नयी नहीं की जाती जैसा की हमने पहले कहा है, उसके अनुसार चलना शुध्दिकरण की प्रक्रिया है । यह सारे जीवनकाल की यात्रा है ।

इफिसियों 4:23 और अपने मन (बुध्दि) के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ । हमें अवश्य ही अपने सोचने और काम करने के तरीके को बदलना होगा क्योंकि हम पाप में जन्में । हमें परमेश्वर के काम करने के तरीके और सोचने के तरीके के विपरित कार्य करने और सोचने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। हमारे मन (बुध्दि) के आत्मिक स्वभाव को नया होना ही चाहिए, ताकि परमेश्वर के सोचने और काम करने के तरीके के समान हो जाए, जो कि शुध्दिकरण की प्रक्रिया है । शुध्दीकरण ही यह है जो हमारी दशा (अवस्था) को बदलना है ।

हमारी दशा में परिवर्तन लाने के लिए हमें आवश्यक है कि पढ आज्ञा मानें, मनन करें और परमेश्वर के वचन का प्रतिदिन अध्ययन करें ।

रोमियों 8:7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेंश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है ।

क्योंकि हम अपने शारीरीक (सांसारिक) नया जन्म (नया न किया गया) न पाए हुए मन (बुध्दि) को नया नहीं कर सकते, तो क्या करें ?

इफिसियों 4 :23 के अनुसार आप अपने मन के आत्मिक स्वभाव को नया बनाओ ?

हमारा प्रशिक्षण, हेनरी डब्ल्यु. राईट का उद्धरण " एक और अधिक उत्तम मार्ग" पृष्ठ क्रं.109

" आप अपने परिवारो में तकरिबन 6000 वर्षों से प्रशिक्षित किये गए हो कि ठीक परमेश्वर के विपरीत विचार करें । आपको एक दुसरे के साथ अनुचित तरिके से संबधित होना सिखाया गया है, कि शिकार बनो, और शिकार बनाओ, कि डरो, तिरस्कृत किये जाओ, कड़वे बनो....

परमेश्वर ने यह नहीं पूछा, "तुम से किसने डरने के लिए कहा है ? " या " तुम से निराश होने के लिए किसने कहा ? " आप समस्या नहीं हैं । आप पाप की व्यवस्था में प्रशिक्षित किये गये हैं । आदम और हव्वा के विचार उनके अपने नही थे । परमेश्वर उन बातों को हटा देना चाहते हैं जो उनकी नही है । यह आपकी बुध्दी (मन) के नये किये जाने से आरंभ होगा । आप में मसीह के मन का होना आरंभ हो जाएगा और आपके सोचने के तरीके पाप की व्यवस्था से श्रेष्ठ (सर्वोत्तम) होंगे ।

परेमश्वर आपको सिखाना चाहते हैं । पवित्र आत्मा सत्य की गवाही देना चाहते हैं । जब आप पवित्रशास्त्र पढ़ेंगे, अल्फा तरंगे़ आपको ज्ञानात्मक, निगमनात्मक (कटौती पूर्ण) तर्क करने को योग्यता प्रदान करेगा । अल्फा तरंगे उन सारी बातों का लेख दर्ज करती है जो आपने बाहरी तौर पर और भीतरीरूप से अनुभव किया, संघटित हुए कि निगमनात्मक तर्कों को उत्पन्न करें । यह आपके व्यक्तित्व और आपके प्राण की पहचान का मिश्रण बन जाता है ।"

" एक और उत्तम मार्ग" 2009 का प्रकाशन। लेखकः हेनरी डब्ल्यु. राईट स्वस्थ रहो मुद्राधिकार (c) 2009

दृढ़ गढ़ की व्याख्याः

- एक ऐसा स्थान जिसमें दृढ़ सुरक्षा होती है, एक चार दिवारी युक्त स्थान । हम अपने विचारों के तरीके में दृढ गढ की बात कर रहे हैं ।
- दृढ़ गढ़ पीठी़ से पीठी़ तक पहुॅचाया या प्रदान किया जा सकता है । वे अधर्म भी हो सकते हैं ।
- एक दृढ़ गढ़ अधिक क्षेत्र या अधिक स्थान लेना चाहत है और अपने पद की रक्षा करता है ।
- हम अपने सारे जीवनभर एक विशेष तरीके से विचार करने के लिए प्रशिक्षित किये जाते हैं। हमारे विचार निर्धारित करते हैं कि हम कैसे कृत्य करेंगे और हम क्या करेंगे। हमारे विचार ने हमारे अस्तित्व को या व्यक्तित्व को उत्पन्न किया है ।

हमें यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि पुरनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन सारी अभक्तिपूर्ण आत्मिक संलग्नता परमेश्वर की उंगली से नेस्तनाबुद किया गया है और हम स्वतंत्र हैं

। तौभी, आपकी दीर्घ कालिन स्मृति उन प्रत्येक बात को स्मरण करेंगी जिनमें आप प्रशिक्षित किए गए हो ।

" एक और अधिक उत्तम मार्ग " हेनरी डब्ल्यु. राईट पृष्ठ क्रं.107 से लिया उध्दहरण " जब आप किसी बात पर बार–बार विचार करते हो (मनन करते हो) प्रोटिन संलग्न होता है । इसमें आर. एन.ए. सम्मिलित होता है (डि.एन.ए.को निर्देष देता है) और डि.एन.ए.(अनुवाशिक जानकारी जो शरीर को बताता है कि क्या करता है) परन्तु विशेषकर आर.एन.ए. वे विचार जिन्हें बार–बार स्मरण किया जाता है वे वास्तव में आपके जीव–विज्ञान के स्थाई अंग (हमारी बुध्दि की कोशिकाओं) बन जाता है । परमेश्वर आपको प्रशिक्षित करना करना चाहते हैं ताकि यह नियम आपकी आत्मा में मात्र न रहे, परन्तु एक मानव प्राणि होने के नाते यह नियम आपके व्यक्तित्व का भाग बन जाए ।"

" एक और अधिक उत्तम मार्ग 2009 का प्रकाशन लेखकः हेनेरी डब्ल्यु.राईटः मुद्रणाधिकार (c) 2009 स्वंस्थ रहो "

प्रोटीन संकलन की प्रकिया

- क्या होता है कि एक शब्द है तंत्रिका विज्ञान (नाडी/नस शास्त्र, न्यूरोसाइन्स) जिसे न्यूरोप्लास्टिसिटी कहा जाता है।
- " तंत्रिका " (न्युरो) स्नायु (न्युरॉन्स) के लिए जाना जाता है । प्लास्टिसिटी बढत (विकास) और जोड़ के लिए जाना जाता है ।
- जब हम कुछ सीखते हैं और हम उसे अपने व्यक्तित्व के साथ जोड़ते हैं, तब हम अपने न्युरोप्लास्टिसिटी में उन्नती करते हैं ।
- हम और अधिक, अधिक और अधिक संबंधो को बनाते हैं। जितने अधिक संबंध हम बनाते है वे उतने ही बलवन्त होते जाते हैं।

एक उदाहरण : एक व्यक्ति अपने जीवन भर भय से संबंधित (जुड़ा) रहना है । जब वे एक अनजाने स्थान में प्रवेश करते हैं, जब अंधियारा हो, उन्होंने अभी अभी एक बुरी खबर प्राप्त कि हो या वे अब किसी लड़ाई की अवस्था में प्रवेश कर रहे हो : भय के साथ उनके विभिन्न संबंध होते हैं । जब एक भय की आत्मा लगातार भय के मार्ग को बार–बार उन पर डालते (दागना, छोड़ते जाना) जाता है– वह लगातार बढ़ता जाता है । पुनर्स्थापन, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन आप भय की आत्मा से मुक्त हो गए हैं, तौभी अब भी आपके बुध्दि के संबंन्ध और स्नायु (न्युरॉन्स) बचे रहते हैं । वे आपकी दिर्घकालीन स्मृति का भाग है । ये स्नायु (न्युरॉन्स) जीवित बने रहना चाहते हैं ।

दूसरा उदाहरणः आप सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं और आपके विचार अभक्तिपूर्ण हैः .... संभवतः मुझे देरी हो जाएगी मेरी कार खराब हो जाएगी, मुझे ऐसा मालूम होता है कि कुछ तो भी भयंकर होने वाला है । आप पहचान जाते हैं कि यह भय है और अपनी सोच में एक बदलाव उत्पन्न करते है। आप सोचने लगते हैं की परमेश्वर की प्रतिज्ञा क्या कहती है। आप विश्वास करना और सोचना आरंभ कर देते हैंः

" मै परमेश्वर के अनुग्रह और सुरक्षा में चल रहां हूँ ।"

" मुझ में भय की आत्मा नहीं है, परन्तु सामर्थ, प्रेम और मेरे पास दुरूस्त बुध्दि है। "

" मेरे विरूध्द तैयार किया गया कोई भी हथियार सफल नहीं होगा ।"

" जब मैं सर्वोच्च परमेश्वर के गुप्त स्थान में रहता हूँ, तो वो मेरी रक्षा करेंगे ।"

" परमेश्वर मेरा बल है और मेरी सुरक्षा की ढाल है ।"

हम प्रोटीन संकलन की प्रक्रिया पर चर्चा कर रहे हैं। जब हम कुछ सीखते है और उसे स्वयं के व्यक्तित्व के साथ जोड़ते हैं, हम अपनी न्युरोप्लास्टिसिटी बढ़ाते हैं। हम और अधिक और अधिक और जोड़ बनाते हैं। जितने आधिक जोड़ (संबध) हम बनाएंगे, उतने मजबूत वे होंगे, इसलिए, जैसे हमारे विचार परमेश्वर के वचन और उनकी प्रतिज्ञाओं पर मनन करते हैं, हमारे दिमाग में नया रास्ता बनाया जाता है।

- दिमाग की कोशिका को जीवित रहने के लिए तीन वस्तुओं की आवश्यकता है : प्राण वायु (ऑक्सिजन), शक्कर (शुगर) और उत्तेजना (स्टिम्युलेशन) हमारा प्राणवायु और शक्कर पर कोई नियंत्रण नहीं है, जो भी हो, हम उत्तेजना पर नियंत्रण अवश्य ही कर सकते हैं। उत्तेजना का अर्थ है कि किसी बात पर विचार को स्थान प्रदान करना । उस विचार की उत्तेजना को रोकने के द्वारा दिमाग की कोशिका या परमेश्वर के वचन के विपरीत विचार करते का तरीका मर जाएगा या समाप्त हो जाएगा ।
- दिमाग की कोशिका प्रोटीन से बनी होती है । इन प्रोटीन का 1/2 जीवन 14 दिनों का होता है । इसका अर्थ है यदि आपके पास 100 प्रोटिन है जो भय के साथ जुड़े हैं, उसके साथ आरंभ करें तब सही विचारो के 14 दिनों के बाद आपके पास केवल 50 प्रोटीन बचते हैं जो भय के साथ जुड़े हों । अगले 14 दिनों में सही विचारों के बाद आपके पास 25 बचे है । कोशिकाओ की अवनति (पतन) होने लगता है । कभी–कभी लोग इसे स्वभाविक रूप से सकारात्मक विचारों के साथ करते है और स्वयं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। उदाहरण यह होगा कि, " मैं एक आनंदित व्यक्ति हूँ मै

एक आनंदित व्यक्ति हूँ । बार–बार यही बात । तौभी वे लोग दुःखी लोग होते हैं और यह बात उनके आस पास के सभी लोग जानते हैं।

- इन बुध्दि की कोशिकाओं को मारने के लिए और एक दूसरा शब्द है ट्रान्सन्यूरोडिजनरेशन (पारतंत्रिकापतन) स्नायु जीवित रहना चाहते हैं, परन्तु वे मर रहे हैं। जैसे जैसे वे कमजोर होते जाते हैं वे स्वयं को समाप्त करने लगते हैं। वे व्याकुल होने लगते हैं । आप सही विचार कर रहे हो, प्रतिदिन उस के अनुसार चल रहे हो, और ये स्नायु अपनी सामर्थ और प्रभाव को खोना आरंभ करते हैं । अचानक वे एक एक करके धाराशायी होने लगते हैं " धॉए, धॉए, धॉए," यह स्नायु या दिमाग की कोशिकाए मरना नहीं चाहती और मरने से पहले वे अपना आखरी प्रहार करते हैं ।
- यह तब होता है जब हम आनंदित होते हैं, हम जानते हैं कि अब वे मरने वाले हैं। हम पुरानी बुध्दि कि कोशिकाओं को मार सकते हैं क्योंकि पुनरूत्थान, चंगाई और छुटकारे के दिन हमने शत्रु के सारे कानूनी अधिकार को नष्ट (काट डाला) किया है और स्त्रोत को रोका दिया है। हम वास्तव में परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने मन के आत्मिक स्वभाव के नविनिकरण को लागू कर सकते हैं ।
- जैसे हि आप पुराने सांसारिक (शारीरिक) सोच–विचार के तरीकों को रोकते हैं और पुराने विचारों के स्थान पर परमेश्वर के वचन को लाते हैं, आप सोच विचार के पुराने तरिके को मारते हैं और आप अपने मन के आत्मिक स्वभाव का नया करते हैं।

याद रखें:

आप अभी–अभी पुनर्स्थापना, चंगाई और स्वतंत्रता के दिन में से गुजरे हैं और हर प्रकार की दृष्टआत्मा से मुक्त किये गए हैं । अब हमारे मन के आत्मिक स्वभाव को नया बनाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। परमेश्वर चाहते हैं कि हमारी बुध्दि परमेश्वर के वचन के अनुरूप हो। क्यों ? ताकि हम उस जीवन को जीने के लिए स्वतंत्र हों जो जीवित परमेश्वर ने हमारे लिए रखा है ।

जिस विकृत सत्य में आप जन्मे और उसी में प्रशिक्षित हुए हो उसके स्थान पर परमेश्वर के वचन के सत्य प्रकाशन को रख दो । संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाले मार्ग के इस परिसंवाद में हम लगातार हमारे मन के आत्मिक स्वभाव के नए किए जाने पर चर्चा कर रहे हैं।

इफिसियों 4:23 और अपने मन (बुध्दि) के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ ।

रोमियों 12:2 और इस संसार के सदृश्य न बनोः परंन्तु तुम्हारी बुध्दि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिध्द इच्छा अनुभव से मालुम करते रहो ।

- संसार के तरीके के अनुसार जीवन न जीओ और न वैसा सोचो ।
- परमेश्वर के वचन के सत्य को आपकी बुध्दि को नया करने दे और अपने मन के आत्मिक स्वभाव को बदल दो ताकि परमेश्वर की इच्छा को जानों और वैसा हि उसे पूरा करो।
- परमेश्वर पिता की तरह सोचो और प्रभु यीशु की तरह बोलो ।

हमारे मन के आत्मिक स्वभाव को नया बनाने को महत्व देता और परमेश्वर पर भरोसा रखना यह भीतरी स्थिरता एक सी स्थिती को बनाए रखने की कुंजी है, जो सिध्द शांति को उत्पन्न करता है जिसके परिणाम स्वरूप स्वस्थ प्रतिरक्षण प्रणाली प्राप्त होती है।

समस्थापन (एक जैसा बने रहना) की, व्याख्या

एक प्रणाली की प्रवृत्ति, विशेषकर मनुष्यों की मानसिक प्रणाली, जो उसके भीतरी वातावरण को संचालित करती है, और प्रवृत्त होती है कि स्थिर, तापमान या पी.एच जैसे गुणस्वभाव को अचल (स्थायी) बनाए रखे। यह किसी भी परिस्थिति के प्रति उसके अंगो की प्रतिक्रिया के समायोजन को नियंत्रित करता है या जो उसके सामान्य अवस्था या गतिविधी में बाधा डालने की प्रवृत्ति को उत्तेजित करता है ।

समस्थापन (होमिओस्टेसिस) = परमेश्वर की सिध्द शांति

परमेश्वर की सिध्द शांति – फिलिप्पियों 4:6–7 एम्प्लिफाईड बायबल " चिढ़ना नहीं था किसी भी बात की चिन्ता ना करे, परन्तु प्रत्येक परिस्थिती में और हर एक बात में, प्रार्थना और निवेदन (निश्चित अनुरोध) के द्वारा, धन्यवाद के साथ लगातार, आपकी आवश्यकताओं को परमेश्वर को बताओ । और परमेश्वर की शांति (तुम्हारी हो जाएगा, जो प्राण की अवस्था को मसीह में उसके उध्दार में सुस्थिर करता है, अतः परमेश्वर की ओर से भय का कोई कारण नही और पृथ्वी पर के अपने हिस्से से संतुष्ट रहना फिर वह किसी भी प्रकार का हो, वह शांति) जो सारी समझ से ऊची है उसकी रक्षा करेगी और मसीह यीशु में आपके हृदय और मन की सुरक्षा को बढाएगी।

परमेश्वर की सिध्द शांति – यशायाह 26:3 एम्प्लिफाईड बायबल

जिसकी बुध्दि(मन) (दोनों बाते हो उसका झुकाव और उसका चरित्र) तुम पर ठहरा (लगा) हो उसकी तू रक्षा करेगा और उसे सिध्द और नियमित शांति में रखेगा, क्योकि उसने स्वयं को तुझे सौंप दिया है, तेरा सहारा किया है और तुझ में भरोसे के साथ आशा रखता है ।

परमेश्वर की सिध्द शांति – नीतिवचन 3:5–6 एम्प्लिफाईड बायबल

अपने संपूर्ण हृदय और बुध्दि से अपने प्रभु पर सहारा के, प्रतिति कर और भरोसा रख और अपनी स्वंय की अंतरदृष्टि या समझ का सहारा न लेना अपने सारे मार्गो में जाने, पहचाने और उसे मान ले, और वह तेरे मार्ग को मार्गदर्शित करेंगे, और उसे सिधा करेंगे और समतल करेंगे ।

इनके द्वारा आप परमेश्वर की सिध्द शांति प्राप्त कर पाएंगेः

- अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनो और अपने सोचने के तरीके को परमेश्वर के सोचने के तरीके के साथ बदल लो ।
- परमेश्वर के वचन का पालन (आज्ञा माने) करें ।
- अपने आपको परमेश्वर को सौंप दो ।
- सिध्द प्रेम में चलो (जीवन यापन करें)।
- अपने संपूर्ण हृदय से परमेश्वर पर भरोसा रखें और अपनी समझ का सहारा न लेना ।

नितिवचन 3:8 के अनुसार सिध्द शाति और अच्छे स्वास्थ के लिए उपरोक्त बाते कुंजी है

यह तुम्हारे शरीर के लिए चंगाई और तुम्हारी हड्डियों के लिए बल है ।

अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाने का महत्व रोमियों 12:2 और इस संसार के सदृश्य न बनोः परन्तु तुम्हारी बुध्दी के नए हो जाने से परिवर्तित हो जाओ, ताकि तुम प्रमाणित कर सको कि परमेश्वर की भलि और स्विकारयोग्य और सिध्द इच्छा क्या है ।

- संसार के तरीके के अनुसार जीवन न जीयें ।
- चुन लो कि परमेश्वर के वचन के सत्य को तुम्हारे मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनाने दो और परमेश्वर की सिध्द इच्छा को पूरी करो ।
- पिता की तरह विचार करें । प्रभु यीशु की तरह बोलें । आत्मा में चलें।

<u>अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाने का महत्व और परमेश्वर पर भरोसा रखना</u> यह भितरी स्थिरता समस्थापन को बनाए रखने की कुंजी ह, जो सिध्द शांती को उत्पन्न करता है जिसका परिणाम स्वस्थ प्रतिक्षा तंत्र है ।

" बुध्दि का नविनिकरण, भक्ति और नैतिक शुध्दता " पासबान जॅकडब्ल्यु. हेफोर्ड की ओर से हवाला

" नविन करने का अर्थ है, नया करना, नूतन करना" ताजगी या एक मूल अवस्था पुनर्स्थापना पर लागू होता है । यह छुटकारे की सामर्थ की क्षमता को धनिष्ट (हमसे परिचित करती है) करता है जिससे परमेश्वर की मनुष्यों के लिए मूल उददेश्य की विशेषता को पुनःस्थापित करे और पतन से

पहले जैसा निर्धारित किया गया था वैसे ही मनुष्य के प्राण और बुध्दी की क्षमताओं को एक बहाली (पुनःउस अपस्था में लाना) प्रदान करे । बुध्दी बुध्दीमत्ता या समज को संघटित करती है परंतु उसमें वे सारी बातें भी सम्मिलित होती हैं जो मनोधारणा या बुध्दी निर्धारण इस शब्द में है जो की अनुभूती और इच्छा है। " बुध्दी के नये हो जाने के द्वारा बदल जाना विचार या व्यक्तित्व के प्रकार या सूत्र में अक्षरशः परिर्वतन का संकेत है ।

यह वर्णित करता है, छुटकारे का सामर्थ का प्रयोजन कि हम में भक्ति की स्थापना करे, एक सामर्थ जो बदल देता है :

1. हमारे विचार, जो सत्रबध्दिकरण की ओर अगुवाई करता है
2. हमारे उददेश्य, जो हमारे कृत्य के आदेश की प्रक्रिया करता है, और, ऐसे ही
3. हमारे कृत्य चरित्र बन जाते है– आदतों को निर्धारित करते हैं, जीवन को आकार देते है और भविष्य के लिए गति तय करती है । भक्तिपूर्ण जीवन जीने का मार्ग पेचिदा जटील नही है, ना ही शरीर के द्वारा शक्ती प्रदान किया जाता है, परंतु यह विश्वासियो को निश्चित रूप से पिता के प्रयोजन और मार्ग के लिए इच्छुक समर्पण के लिए बुलाता है ।"

वह व्यक्ति जिसकी बुध्दि का नविनिकरण हुआ है वह जानता है कि बायबलः

- कभी विफल न होनावाला परेमश्वर का सिध्द अधिकार है ।

  2 तीमुथियुस 3:16

  संपूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और उपदेश और समझाने और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है।

- जीवन के लिए हमारा मार्गदर्शन है ।

  भजन 32:8

  मै तुझे बुध्दी दूंगा, जिस मार्ग मैं तुझे चलना होगा उसमें तेरी अगवाई करूंगा । मैं तुझपर कृपादृष्टि रखूंगा और सम्मति दिया करूंगा ।

  भजन 37:23

  मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है । और उसके चलन से वो प्रसन्न रहता है ।

  भजन119:105

  तेरा वचन मेरे पॉव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है ।

- हमारी स्थिरता है।

भजन 119:89

हे यहोवा तेरा वचन आकाश में सदा तक स्थिर रहता है ।

मत्ती 24:35

आकाश व पृथ्वी टल जायेंगे परंतु मेरी बातें कभी न टलेंगी

- हमारा बल है।

  भजन 119:28

  मेरा जीव उदासी के मारे गल चला है तू अपने वचन के अनुसार मुझे संभाल ।

  इफिसियों 6:10

  इसलिये प्रभु मैं और उसकी शक्ती के प्रभाव में बलवंत बनों

कार्यभार प्रतिदिन उसी के अनुसार चलना एक बुध्दि नये हुए व्यक्ति बनने के द्वाराः

- इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र को पढ़े, उसके साथ परिचित हो और आज्ञा मानें।
- " मसीह में मैं कौन हूँ " उसमें पाए जानेवाले शास्त्र भाग को पढ़ें उसके साथ परिचित हो ं और आज्ञा माने और वचन आपके विषय में जो घोषणा करता है उस पर विश्वास करे।
- संपूर्ण तदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग पुनर्स्थापना, "उसके अनुसार चलना" के विभाग में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढे परिचित हो, और उसकी आज्ञा पालन करें ।
- आपके प्रतिदिन के अनुशासन में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ना, उनके साथ परिचित होना और उनकी आज्ञा मानना जारी रखें।

  (जो अध्याय 2 से लेकर 6 के अन्त में पाए जाते हैं)

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय – 8

प्रतिदिन उसके अनुसार चलें –

परमेश्वर के वचन अनुसार काम करनेवाले बनें।

प्रतिदिन उसके अनुसार चले परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बने। याकूब 1:22–25 परंतु वचन पर चलने वाले बनो और केवल सुनने वाले ही नही जो अपने आपको धोखा देते हैं । क्योंकि जो कोई वचन का सुनने वाला हो और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वभाविक मोह दर्पन में दिखाता है इसलिये कि वो अपने आपको देखकर चला जाता और तुरंत भूल जाता है कि मैं कैसा था पर जो व्यक्ति स्वंतत्रता की सिध्द व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है । वो अपने काम में इसलिये आशिष पायेगा कि सुनकर भूलता नही पर वैसा हि काम करता है ।

प्रतिदिन उसके अनुसार चलें – परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनें। 2 तीमुथियुस 3:16–17

प्रत्येक पवित्रशास्त्र परमेश्वर कि फूंकि श्वास है (परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है) और उपदेश (हिदायत, निर्देश) के लिए समझाने (फटकारने) के लिए और पाप के प्रति आश्वस्त होना, गलती को सुधारने के लिए और आज्ञाकारिता में अनुशासित और धार्मिकता पवित्र जीवनयापन में, विचार उददेश्य और कृत्य में परमेश्वर की इच्छा के सादृश्य होना में प्रशिक्षण के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन पूर्ण हो और निपुण हो, अच्छी तरह सज्ज हो और प्रत्येक अच्छे काम के लिए पूर्णतः सुसज्जित (तत्पर) रहे । एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

याद रखें, शरीर पर मन लगाना परमेश्वर के विरूध्द शत्रुता है– रोमियों 8:6–7

शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है परंतु आत्मा पर मन लगाना जिवन और शांती है ।

क्योंकी शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकी ना तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है । और न हो सकता है । और जो शारीरीक दशा में है वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते ।

आदम का स्वभाव अदन की वाटिका में आदम के पतन के श्राप का परिणाम है जिसने आरंभ ही से मनुष्य प्राणि को प्रमावित किया है । सांसारिक " दैहिक" बुध्दि आदम के स्वभाव की मानसिक अभिव्यक्ती है । यूनानी भाषा से अनुवादित शब्द शारीरिक का अर्थ है– शरीर का स्वभाव रखना

या होना । आपका शारिरीक देह बुध्दि नयी नही की जा सकती केवल आपके मन के आत्मिक स्वभाव को नया किया जा सकता है ।

इफिसियों 4:23 अपने मन को आत्मिक स्वभाव में नये करते जाओ ।

अब घर को झाड़–पोंछ कर साफ किया गया है, और सभी अभक्तिपूर्ण आत्मिक अधिकारो को तोड़ डाला गया है । परमेश्वर की उंगली के द्वारा हमें परमेश्वर के वचन से धोने के द्वारा अपने मन के आत्मिक स्वभाव को नया बनाने की आवश्यकता ही हमारे लिए आवश्यक है कि हम परमेश्वर के वचन को पढ़े जानें और आज्ञा मानें । हमें यह सब करने की क्या आवश्यकता है ? आज पृथ्वी पर दो अदृश्य राज्य कार्य कर रहे हैंः

परमेश्वर का राज्य / अंधकार का राज्य

यह दो मनुष्य राज्य एक व्यक्ती किस बात पर मनन कर रहा है उस के द्वारा अपना स्थान लेते हैं । यदि हम अपने मन के आत्मिक स्वभाव को सही विचारों, परमेश्वर के वचन के साथ नया नही करते, तो हम अपने पुराने बुरे विचारों पुरानी आदतों के पुराने मार्ग में कार्यरत होते रहेगे । परमेश्वर कैसा विचार करते हैं यही परमेश्वर का वचन है ।

प्रतिदिन इसमें चलें – परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनें

प्रतिदिन इसमें चलें –परमेश्वर के वचन के अनुसार चलनेवाले बनें

मैं कौन हूँ ?

मैं आपका नित्य साथीदार हूँ।

मैं आपका सबसे बड़ा सहायक हूँ या सबसे भारी बोझ हूँ।

मै आपको आगे धक्का दूंगा या विफलता की ओर नीचे घसिटूंगा ।

मै पूर्णतः आपकी आज्ञा में हूँ।

आधेकाम जो आप करते हो आप हो सके तो उन्हे मुझे सौप दें और मैं

उन्हें करूंगा तेजी से और सही तरह से ।

मैं आसानी से प्रबंधित किया जा सकता हूँ – आपको मेरे साथ दृढ़ रहना चाहिए ।

मुझे दिखाईये कि आप किसी काम को ठिक किस तरह करना चाहते हैं।

और कुछ अध्यायों के बाद, मै उन्हे अपने आप करूंगा ।

मै महान लोगों का सेवक हूँ, और आह, सभी असफलताओं का भी।

वे जो महान हैं, मैंने महान बनाया है।

फिर भी मैं एक मशीन नही हूँ

मै एक मशीन की सक्ष्मता के साथ काम करता हूँ
साथ ही एक व्यक्ति की बुध्दिमत्ता के साथ ।
आप मुझे लाभ के लिए दौड़ा सकते हैं, या विनाश के लिए दौड़ा सकते हैं
इससे मुझे कोई फर्क नही पड़ता।
मुझे लिजिए, मुझे प्रशिक्षित किजिए, मेरे साथ दृढ़ रहिए, और
मैं दुनिया को आपके कदमों में डाल दूंगा।
मेरे साथ ढीलाई बरतें और मै आपको नष्ट कर दूंगा
मै कौन हूँ ? मैं आदत हूँ।

आदत
अ) बार–बार दोहराए जाने के द्वार एक व्यवहार का तरीका अपना लेना
ब) एक निर्धारित या नियमित वृत्ति या अभ्यास
क) व्यवहार का एक अपनाया हुआ तरीका

परमेश्वर चाहते हैं कि हम अपनी पुरानी सोच–विचार की आदतों को बदल दें जो उनकी नही है। यह पुरानी सोचने की आदंतों को नष्ट किए जाने की आवश्यकता है । परमेश्वर के वचन का अध्ययन , जानना , मानना, करना ही केवल पुरानी विचार करने की आदत के साथ–बदला जा सकता है । हमें अपने मन के आत्मिक स्वभाव को रोमियों12:2 के अनुसार नया करने की आवश्यकता है
" .....परंतु तुम्हारी बुध्दि (मन) के नये हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता चला जाए....."
इस बात को समझ लिजिए कि जब हम दबाव में होते हैं तो हम वापस अपनी उन आदतो की ओर फिरते हैं, हमारे सोचने और काम करने के पुराने तरीके ।
" बुरी आदत से छुटकारा पाओ उसके स्थान पर अच्छी आदत डालो ।"

एक हवाई कलाबाज को एक बात सीखने के लिए आठ घंठे प्रशिक्षित किया जाता है । एक रस्सी को खींचना । क्यों ?
आठ घण्टे तक हवाई कलाबाज को प्रशिक्षित किया गया और एक आदत विकसित की । क्या करने के लिए ?

हवाई जहाज से कूदने के बाद रस्सी को खींचें ।

जब हम दबाव में होते हैं तो हम वापस अपनी उन आदतों की ओर फिरते हैं, हमारे सोचने और काम करने के पुराने तरीके कि ओर । परमेश्वर के वचन में से लगातार अपनी बुध्दि का नविनीकरण करने के द्वारा हम नयी आदतों की स्थापना करते हैंः परमेश्वर पिता कि तरह सोचना और प्रभु यीशु की तरह बोलना ।

बाबुल के मिनार की कहानी मे, परमेश्वर ने इसे एक नियम के रूप में निर्धारित किया : उत्पत्ति 11:6 एम्प्लीफाइड बायबल अनुवाद

और प्रभु ने कहा, देखो, वे एक लोग है और उनकी सभी की भाषा भी एक है, और जो वे करेगे यह तो उसका आरंभ मात्र है, और अब उन्होने जो भी कल्पना कि है उसे करना उनके लिए असंभव नहीं होगा ।

नीतिवचन 23:7 क्योंकि जैसा वह अपने हृदय में सोचता है, वैसा ही वह है।

यह दोहराना उचीत हैः

जब हम दबाव में होते हैं तो हम वापस अपनी उन आदतों की ओर फिरते हैं, हमारे सोचने और काम करने के पुराने तरीके की ओर ।

प्रतिदिन की आदत रोमियों 12:1–2

इसलिये हे भाईयों मै तुम्हे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनंती करता हूँ की अपने शरीरो को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाआ

यही तुम्हारी आत्मीक सेवा है इस संसार के सदृश न बनों परंतु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाये जिससे तुम परमेश्वर की भली, भावती और सिध्द ईच्छा अनुभव से मालूम करते रहो

- स्वयं को परमेश्वर के लिए पवित्र करके प्रस्तुत करो ।
- परमेश्वर के वचन के सत्व को आपके मन के आत्मिक स्वभाव को नया करने दो और अपने सोचने के तरीके को बदल दो।
- परमेश्वर पिता की तरह सोचें और प्रभु यीशु की तरह बात करें ।

आपके जीवन में जो पाप है वह आपको परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करने (चलने) से रोकेगाः परंतु परमेश्वर का वचन आपको पाप से दूर रखेगा ।

भजन119:11

मै ने वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है कि तेरे विरूदध पाप न करूँ।

भजन119:105

तेरा वचन मेरे पॉव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है ।

परमेश्वर का वचन सक्रिय और जीवित है।

इब्रानियो 4:12–13

क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवीत और प्रबल और हर एक दोधारी तलवार से भी बहूत चोखा है, और प्राण और आत्मा को और गॉठ–गॉठ और गूदे–गूदे को अलग करके आर–पार छेदता और मन की भावनाओं और बिचारो को जॉचता है। सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन् जिससे हमे काम है, उसकी आखों के सामने सब वस्तुऍ खुली और प्रगट हैं।

प्रभु यीशु ने परमेश्वर के वचन के द्वारा शैतान पर जय प्राप्त की। मत्ती 4:1–11

1. तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकी इबलीस से उसकी परीक्षा हो
2. वह चालीस दिन, और चालीस रात निराहर रहा, तब उसे भूख लगी ।
3. तब परखनेवाले ने पास आकर उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियॉ बन जायें।
4. यीशु ने उत्तर दिया लिखा है मनुष्य केवल रोटी ही से नही, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।
5. तब इबलीस उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया,
6. और उससे कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आपको नीचे गिरा दे क्योंकि लिखा है वो तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा और वे तुझे हाथोंहाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाव में पत्थर से ठेस लगे।
7. यीशु ने उससे कहा, यह भी लिखा है । तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर ।
8. फिर इबलीस उसे एक बहुत ऊॅचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखा कर
9. उससे कहा यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा ।

10. तब यीशु ने उससे कहा हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर ।

11. तब शैतान उसके पास से चला गया और देखो स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

प्रभु यीशु ने यूहन्ना 14:23 में कहा

यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि मुझसे प्रेम रखेगा तो वो मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा और हम उसके पास आयेंगे और उसके साथ वास करेंगे ।

परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाली बातो का सुनहरा नियम।

मत्ती 7:12

इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो की मनुष्य तुम्हारे साथ करे, तुम भी उसके साथ वैसा हि करो क्योंकि व्यवस्था भविष्यवक्ताओं कि शिक्षा यही है।

इफिसियों 6:7–8

और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं परंतु प्रभु की जानकर सच्चे हृदय से करो क्योंकी तुम जानते हो की जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र प्रभू से वैसा हा पायेगा।

अनुग्रह और दया इनके पक्ष (इनको लेकर) हमेशा गलती होती है। परमेश्वर के संपूर्ण प्रेम को ले लो और उसे दिखने दो ।

जब गवाही देते हो तब शब्दों का उपयोग करें केवल तब जब आवश्यक हो । संत फ्रान्सिस जो आसिसि के थे उन्होने कहाः " हर समय सुसमाचार का प्रचार करो और जब आवश्यक हो तब शब्दो का उपयोग करों। " संत फ्रान्सिस के वाक्य का सार :

" जब गवाही दे रहे हो, तब जब आवश्यक हो केवल तभी शब्दों का उपयोग करें।"

परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनो ं। 1 तीमुयियुस 4:15–16

इन बातों को सोचते रह और इन्हीं में अपना ध्यान लगाये रह, क्योंकी तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो । अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख इन बातों पर स्थिर क्योकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुननेवालों के लिये भी उध्दार का कारण होगा।

परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनें । बायबल में लिखे प्रत्येक शब्द के अलौकिक स्त्रोत को पहचानें । परमेश्वर के वचन का आदर और सम्मान करें परमेश्वर के वचन की आज्ञा मानें ।

2 तीमुथियुस 3:16–17

प्रत्येक पवित्रशास्त्र परमेश्वर कि फूंकि श्वास है (परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है) और उपदेश (हिदायत, निर्देष) के लिए समझाने (फटकारने) के लिए और पाप के प्रति आश्वस्त होना,

गलती को सुधारने के लिए और आज्ञाकारिता में अनुशासित और धार्मिकता पवित्र जीवनयापन में, विचार उददेश्य और कृत्य में परमेश्वर की इच्छा के सादृश्य होना में प्रशिक्षण के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन पूर्ण हो और निपुण हो, अच्छी तरह सज्ज हो और प्रत्येक अच्छे काम के लिए पूर्णतः सुसज्जित (तत्पर) रहें । परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनों और तुम्हें बुध्दि प्राप्त होगी । नितीवचन 2:1–5

हे मेरे पुत्र यदि तू मेरे वचन ग्रहण करे, और मेरी आज्ञाओं को अपने हृदय में रख छोड़े और बुध्दी की बात ध्यान से सुने और समझ की बात मन लगाकर सोचे और प्रवीणता और समज के लिये अति यत्न से पुकारे और उसको चांदी के समान ढूँढे और गुप्त धन के समान उसकी खोज में लगा रहे तो तू यहोवा के भय को समझेगा, और परमेश्वर का ज्ञान तुझे प्राप्त होगा।

परमेश्वर ने हमें निर्देष पुस्तिका दी है ताकि हम उसके अनुसार करें ।

रोमियों 15:4 एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद जो कुछ भी पहले (पिछले) दिनों में लिखा गया था वह हमारे हिदायत (शिक्षा) के लिए लिखा गया, कि (हमारी स्थिरता और धिरज) सहनशिलता के द्वारा और पवित्रशास्त्र मेसे निकालने प्रोत्साहन का कटोरा हम दृढ़ता से थामे रह सकें और आशा को संजो कर रखें ।

जब आप परमेश्वर के वचन के पास जाते हैं, आप परमेश्वर के वचन को परखते नहीं है, वचन आपको परखता है । जब आप परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं, तब आप परमेश्वर के स्तर तक ऊँचा उठते हो ।

परमेश्वर ने अमोस साहुल (गोला) को दर्शन दिया । आमोस 7:7–8

उसने मुझे ये भी दिखाया, मैने देखा कि प्रभु साहुल लगाकर बनाई हुई किसी दीवार पर खड़ा है और उसके हाथ में साहुल है, यहोवा ने मुझ से कहा, हे आमोस, तुझे क्या देख पड़ता है ? मैंने कहा, एक साहुल तब परमेश्वर ने कहा, देख मै अपनी प्रजा इस्त्राएल के बीच में साहुल लगाऊंगा ।

परमेश्वर के वचन का अनुवाद–

साहुल एक दर्जो को प्रस्तुत करने का चिन्ह है ।

अनुमती दीजिए परमेश्वर के वचन में पाए जानेवाले सिध्दान्त आपके जीवन के दर्जेबन जाए । लगातार परमेश्वर से पुछते रहिए कि वे आपको बताए कि आपके जीवन में ऐसी कोई भी बात जो परमेश्वर के दर्जे से हटकर हो उन क्षेत्रों में आज्ञा माने और परमेश्वर के वचन को आपको परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार ढालने दे।

परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनें । नीतिवचन 3:5–7

तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन् सपूंर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना, उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा अपनी दृष्टि में बुध्दीमान न होना यहोवा का भय मानना और बुराई से अलग रहना ।

नीतिवचन 3 वचन 8 अ विवरणात्मक : यह तुम्हारी तंत्रिकाओं और नसों के लिए स्वास्थ्य होगा, और आपका शरीर स्वास्थ के साथ चमकेगा, और फिर आपको आपके शरीर के लिए चंगाई प्राप्त होगी.....

नीतिवचन 3 वचन 8 ब विवरणात्मकः ..... और मन्जा (गूदे) से तुम्हारी हड्डियों तक, तुम्हारी प्रत्येक हड्डियों जीवन के साथ कंपायमान होगी, और तुम्हारी हड्डियों के लिए बल होगा ।

परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनें । बोनेवाले का दृष्टान्त और बीज ।

मत्ती 13:1–9

1. उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा
2. और उसके पास ऐसी बडी भीड़ इकट्ठी हुयी की वो नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही ।
3. और उसने उनसे दृष्टांतो मे बहुत सी बातें कहीं, एक बोनेवाला बीज बोने निकला ।
4. बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया ।
5. कुछ बीज पथरीली भूमि पर गिरे, जहॉ उन्हे बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे जल्द उग आये ।
6. पर सूरज निकलने पर वे जल गए और जड़ न पकड़ने से सूख गये ।
7. कुछ बीज झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला ।
8. पर कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना ।
9. जिसके कान हो वह सुन ले।

मत्ती 13:12–23

12. क्योंकी जिसके पास है उसे दिया जायेगा और उसके पास बहुत हो जायेगा पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जायेगा।
13. मैं उनसे दृष्टांतो में इसलिये बाते करता हूँ की वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते, और नहीं समझते ।
14. उनके विषय में यशायह की यह भविष्यवाणी पूरी होती हैः तुम कानों से तो सुनोगे पर समझोग नहीं और ऑखों से तो देखोगे पर तुम्हे न सूझेगा।
15. क्योंकि उन लोगो का मन मोटा हो गया है, और वे ऊँचा सुनते है और उन्होने अपनी ऑखे मूंद ली हैः कही ऐसा नहो कि वे ऑखो से देखें, और कानो से सुने और मन से समझें और फिर जाऍं, और मै उन्हे चंगा करूँ ।
16. पर धन्य है तुम्हारी ऑखें कि वे देखती हैं और तुम्हारे कान की वे सुनते हैं ।
17. क्योंकि मै तुमसे सच कहता हूँ की बहुत से भविष्य वक्ताओं ने और धर्मियों ने चाहा की जो बातें तुम देखते हो, देखें, पर न देखी और जो बाते तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनी ।
18. अब तुम बोनेवाले के दृष्टांत का अर्थ सुनो।
19. जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता उसके मन में जो कुछ बोया गया था उसे दुष्ट आकर द्यीन ले जाता है यह वही है जो मार्ग किनारे बोया गया था ।
20. और जो पथरीली भुमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरंत आनंद के साथ मान लेता है ।
21. पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है ।
22. जो झाड़ियों में बोया गया है। यह वह है जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिंता और धन का धोखा वचन को दबाता है। और वह फल नहीं लाता ।
23. जो अच्छी भूमी में बोया गया यह वह है, जो वचन को समझता है और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।

बोनेवाले और बीज के दृष्टान्त। समझाना :

यह दृष्टान्त हृदय के विषय में बात करता है। परमेश्वर के वचन को कोई समझ नहीं और कोई प्रकाशन नही, यह सुननेवाला वचन को व्यक्तिगत रीतिसे लागू नहीं कर और सुन नहीं रहा ।

वचन 19

जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता उसके मन में जो कुछ बोया गया था उसे दुष्ट आकर छीन ले जाता है यह वही है जो मार्ग किनारे बोया गया था ।

वचन शिघ्र ही, खो जाता है, परख, परीक्षा, कठिन समय और संदेह के कारण । क्योंकि वचन ने गहरी जड़ नहीं पकड़ी होती है, इसलिए वह जल्दी त्याग देता है। यदि हमारी जड़ें गहरी नही है, हम वास्तविकताओं के द्वारा चलाए मान होंगे, परमेश्वर के वचन के सत्य के अनुसार चलाएमान होने के स्थान पर । जब क्लेश और सताव उठेंगे, सुननेवाला ठोकर खाएगा

वचन 20–21

और जो पथरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरंत आनंद के साथ मान लेता है ।

पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोडे ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है ।

जीवन की परवाह, चिंता, भय, ध्यान भटकना, स्वयं –पर–निर्भर रहना, गलत शिक्षा और गलत शिक्षा यह कुछ कांटे हैं। सुननेवाला परमेश्वर पर से और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर से अपनी आंखे हटाता है, स्वयं के सुख पर ध्यान केंद्रित करना और भौतिक वस्तुओं में उलझ जाता है।

वचन 22

जो झाड़ियों में बोया गया है। यह वह है जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिंता और धन को धोखा वचन को दबाता है। और वह फल नहीं लाता ।

यह अच्छी भूमि है जो आपके मन की आत्मा में वचन को ग्रहण करता है जो कि प्रतिदिन परमेश्वर के वचन से नया किया गया है । यह एक ऐसे जीवन को भी प्रस्तुत करता है जिसमें अच्छे फल कर्मो और कृत्य में उत्पन्न करता है ।

वचन 23

जो अच्छी भुमि में बोया गया यह वह है, जो वचन को समझता है और फल लाता है कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।

यदि हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार काम करनेवाले बनना है तो : प्रभु यीशु ने कहा है कि हमें परमेश्वर के वचन क सुननेवाले बनना होगा । यूहन्ना 8 :43 व 47

वचन 43

तुम मेरी बात क्यों नहीं समझते ? इसलिये कि तुम मेरा वचन सुन नहीं सकते

वचन 47

जो परमेश्वर से होता, वह परमेश्वर की बातें सुनता है, और तुम इसलिये नहीं सुनते की परमेश्वर की ओर से नहीं हो।

परमेश्वर के वचन के अुनसार काम करनेवाले बनने के द्वारा प्रतिदिन उसमें चलने के लिए कार्यभार प्रतिदिन उसी के अनुसार चलना एक बुध्दि नये हुए व्यक्ति बनने के द्वाराः

- इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र को पढ़ें, उसके साथ परिचित हों और आज्ञा मानें।
- " मसीह में मै कौन हूँ " उसमें पाए जानेवाले शास्त्र भाग को पढ़े उसके साथ परिचित हों और आज्ञा मानें और वचन आपके विषय में जो घोषणा करता है उस पर विश्वास करें।
- संपूर्ण तदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग पुनर्स्थापना, "उसके अनुसार चलना" के विभाग में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ें परिचित हों, और उसकी आज्ञा पालन करें ।
- आपके प्रतिदिन के अनुशासन में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ना, उनके साथ परिचित होना और उनकी आज्ञा मानना जारी रखें।
  (जो अध्याय 2 से लेकर 6 के अन्त में पाए जाते हैं)

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय – 9

पवित्र आत्मा की अुगवाई में अपना जीवन जीने के द्वारा प्रतिदिन उसमें चलना

पवित्र आत्मा की अगुवाई में अपना जीवन जीने के द्वारा प्रतिदिन उसमें चलना । गलतियों 5:25 यदि हम (पवित्र) आत्मा के द्वारा जीवन जीते है, तो आओ हम आत्मा के द्वार चले भी । (यदि पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर में हमारा जीवन है, तो आओ उसी के अनुरूप होकर आगे चले, हमारा आचरण आत्मा के द्वारा नियंत्रीत हो) एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

परमेश्वर की आज्ञाकारिता के साथ उसमें चलें । 1 पतरस 1:13–16 अतः अपनी अस्तिन मोड लो, अपनी बुध्दी को गेयर में डालों, पुरी तरह तैयार रहो इस उपहार को पाने के लिए जो उस समय मिलेगा जब प्रभु यीशु आएंगे । आलसी बनकर उन पुरानी बुराई की प्रणाली में न फिसल जाओ, जो आपको लगता है वही कर रहे है। ऐसा बन करे । आप स्वंय को जो है उससे और अधिक बेहतर नही जानते। एक आज्ञाकारी संतान के समान, आओ स्वंय को परमेश्वर के जीवन द्वारा आकार दिए हुए जीवन के मार्ग में खिंच लाए, एक जीवन जो उर्जा से भरा और पवित्रता से प्रज्वलित हो । परमेश्वर ने कहा, " मै पवित्र हूँ , तुम भी पवित्र बनों । मैसेज बायबल अनुवाद

डस आज्ञाकारित का एक भाग है कि शांति (मेल) और पवित्रता का पिछा करे । इब्रानियों 12:14 सबसे मेल–मिलाप रखो और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभू को कदापि न देखेगा।

जनते है कि परमेश्वर हमारी सहायता करेंगे । 1 परतरस 1:17

" आप सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारे, और वे मदद करते है उस तरह वे अच्छे पिता है। परंतु भूले नही वे एक जवाबदार पिता है, वे आपको लापरवाह जीवन में पडने नही देंगे । मैसेज बायबल अनुवाद

जे शान्ति प्रभू यीशु ने हमें दि है उस के कारण, हम आत्मा में चल सकते हैं और प्रलोभन की सामर्थ ना ही सताव के उत्पात हमें हिला सकते है। युहन्ना 14:27 मै तुम्हे शांती दिये जाता हूँ, अपनी शांती तुम्हे देता हूँ जैसे संसार देता है, मै तुम्हें नही देता, तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे।

प्रभु यीशु के वचन उददेश्य के साथ उसमें चले । इफिसियों 5:15

आप कैसी चाल चलते हो सावधानी से देखो । उददेश्यपूर्ण और योग्यतापूर्ण और सही ढंग से जिये, मूर्ख और नासमझ के अनुसार, परंतु, बुध्दिमान के समान (समझदार, बुध्दिमान लोग)..... एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

पवित्र आत्मा के द्वारा चलना हमें इस योग्य बनाएगा की हम परमेश्वर की इच्छा को समझ सकें ! इफिसियों 5 :17–20

अतः अस्थिर और विचार हिन और मूर्ख न बनों, परंतु प्रभु की इच्छा क्या है उसे समझो और दृढ़ता से थामलो । और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि यही कामुकता है, परन्तु सदा भरे हुए बने रहो और (पवित्र) आत्मा से प्रेरित रहो । एक दूसरे के साथ भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ, आवाज के साथ (और वाद्यो के साथ) स्तुति चढ़ाओं और अपने संपूर्ण हृदय से प्रभु के लिए मधुर गीत गाओ, हर समय और प्रत्येक बात के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में परमेश्वर पिता को धन्यवाद देते रहो । एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

हमारे जीवनों मे पवित्र आत्मा की सामर्थ हमें इस योग्य बनाती है कि हम परमेश्वर के साथ, घनिष्टता का अनुभव करें । इफिसियों 3:14–21

मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर हर एक घराने का नाम रखा जाता है की वो अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान देती तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवंत होते जाओ और विश्वास के द्वारा, मसीहा तुम्हारे हृदय में बसे की तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर, सब पवित्र लोगों के साथ भत्ति–भॉति समझने की शक्ती पाओ कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई, और ऊॅचाई, और गहराई कितनी है, और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ। अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे ।

प्रभु यीशु पर ऑखें लगाए रखने के द्वारा ध्यान भंग होते और हमलों के प्रति चौकन्ने रहते हुए उसमें चलें ।

इब्रानियों 12:1–2

इस कारण जब की गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हमको घेरे हुए है । तो आओ हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके वह दौड़ जिसमे हमें दौडना है धीरज से

दौडे और विश्वास के कर्ता और सिध्द करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनंद के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिंता न करके क्रूस का दुःख सहा, और परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर जा बैठा ।

आत्मा में चलना हमें कठिन परिस्थितियों से छुड़ाता है।

भजन 34:17

धार्मिक दोहाई देते है और यहोवा सुनता है और उनको सब विपत्तीयों से छुड़ाता है।

भजन 34:19

धर्मी पर बहोत सी विपत्तीयॉ पड़ती तो हैं परंतु यहोवा उसको उन सबसे मुक्त करता है ।

रोमियो 8:1–11 में संत पौलुस के अनुसार पवित्र आत्मा के द्वारा चलना और जीवन यापन करना

1. अतः अब जो मसीह यीशु में है, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं । क्योकि वे शरीर के अनुसार नही वरन् आत्मा के अनुसार चलते है ।

2. क्योंकि जीवन की आत्मा कि व्यवस्था ने मसीह यीशु मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया

3. क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर ना कर सकी, उसको परमेश्वर ने किया अर्थात अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में और पापबलि होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी ।

4. इसलिये कि व्यवस्था की विधि हममें जो शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

5. क्योंकि शारीरीक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं । परंतु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं ।

6. शरीरपर मन लागाना तो मृत्यु है परंतु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शांति है

7. क्योकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है । क्योंकी ना तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधिन है और ना हो सकता है ।

8. और जो शारीरीक दशा में है वे परमेश्वर को प्रसन्न नही कर सकते ।

9. परंतु जब की परमेश्वर का आत्मा तुम में बसता है तो तुम शारीरीक दशा में नहीं परंतु आत्मीक दशा में हो। यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन्म नहीं ।

10. यदि मसीह तुममें है तो देह पाप के कारण मरी हुई है । परंतु आत्मा धर्म के कारण जीवित है ।

11. यदि उसीका आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है, तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलायेगा ।

जैसे आप पुराने शारीरीक सोच विचार को स्थान देना बन्द कर देते हैं और पुराने विचारों के स्थान पर परमेंश्वर को रखते हो, आप पुराने विचार करने के तरीके को मार डालते हैं, यह केवल आपके मन के आत्मिक स्वभाव को ही नया नहीं करेगा, यह आपको प्रतिदिन आत्मा में चलने के योग्य भी बनाएगा ।

यदि फिर चाहे हम कुछ बाते कहने और करने में मूर्ख भी हों, यदि हम चुन ले कि हम पवित्र आत्मा की सामर्थ में चलेंगे और जीयेंगे तब हम पवित्रता के महामार्ग पर चल सकेंगे ।

यशायाह 35:8अ–10 वहॉ एक सड़क अर्थात राजमार्ग होगा, उसका नाम पवित्र मार्ग होगा : कोई अशुध्द जन उस पर से न चलने पाएगा, वह तो उन्ही के लिए रहेगा और उस मार्ग पर जो चलेंगे वे चाहे मूर्ख भी हो तो भी कभी ना भटकेंगे वहाँ सिंह न होगा और कोई हिंसक जन्तु उस पर न चढ़ेगा न वहाँ पाया जाएगा, परन्तु छुड़ाये हुए उस पर नित चलेंगे। यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सूय्योन में आएँगे, और उनके सिर पर सदा का आनंद होगा : वे हर्ष और आनंद पाएँगे और शोक और लम्बी सॉस का लेना जाता रहेगा ।

पवित्र आत्मा के द्वारा चलना और जीवनयापन करना हमारी सहायता करता है हमारे कार्यभार को समझने में ।

इफिसियों 4:11–13 उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके और कुछ को भविष्यवक्ता नियुक्त करके और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया जिससे पवित्र लोक सिध्द हो जायें और सेवा का काम किया जाये और मसीह की देह उन्नति पाये जबतक कि हम सबके सब विश्वास और परमेश्वरके पुत्र की पहचान में ना हो जायें और एक सिध्द मनुष्य न बन जायें और मसीह के पूरे डील–डौल तक न बढ़ जायें।

हम परमेश्वर की वाणी को बोल सकते हैं और जो योग्यता पवित्र आत्मा उपलब्ध कराते हैं उसके साथ सेवकाई कर सकते हैं।

1 पतरस 4:11 यदि कोई बोले तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है, यदि कोई सेवा करे तो उस शक्ती से करे जो परमेश्वर देता हैं जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो । महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसका है ।

हमारे जीवन में पवित्र आत्मा की सामर्थ हमें सभी मनुष्यों में सुसमाचार प्रचार करने के लिए योग्य बनाती है ।

मरकुस 16:15

और उसने उनसे कहा तुम सारे जगत में जाकर सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो ।

आत्मा में परमेश्वर की आराधना करें और शरीर पर कोई भरोसा न रखें ।

फिलिप्पियों 3 : 3

क्योंकि खतनावाले तो हम ही हैं जो परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई से उपासना करते हैं और मसीह यीशु पर घमंड करते हैं, और शरीर पर भरोसा नहीं रखते ।

आदम का स्वभाव अदन की वाटिका में आदम के पतन के श्राप का परिणाम है जिसमें आरंभ से ही मानव जाति को पीड़ीत किया ।

" शारीरीक बुध्दि " यह आदम के स्वभाव की मानसिक अभिव्यक्ति है । यह आदम का स्वभाव और आदम की विचारधारा यह सीधे हमारे जीवन को पवित्र आत्मा के चलाए चलने के विरोध में होता है। युनानी भाषा से अनुवादित यह शब्द " शारीरिक का अर्थ है – शरीर का स्वभाव रखना । पुराना नियम शरीर के रखने के विषय में बात करता है। नया नियम हृदय के रखने के विषय में बात करता है।

इब्रानियों 4:12

क्योंकि परमेश्वर का वचन जिवित और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी चोखा है और प्राण और आत्मा को और गाठँ–गाँठ और गूदे – गूदे को अलग करके आर–पार छेदता है और मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है ।

गिल्स की संपूर्ण बायबल की व्याख्यात्मक टिप्पणी में से इब्रानियों 4:12 खतना

" क्योंकि परमेश्वर का वचन तेज और सामर्थी है । मसीह की यह बात समझी गई है, यह आवश्यक परमेश्वर का वचन है, क्योंकि यहूदियों के मध्य में मसीह का यह नाम कि वह परमेश्वर का वचन है अच्छी तरह जाना हुआ था, (देखें यूहन्ना 1:1 "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था ।") और इसलिए प्रेरित लोग जब उन्हें लिखते थे, तो इस का उपयोग करते थेः और वचनों को परिचित किया गया । इस तरह कि क्यों परवाह कि जानी चाहिए, कि मनुष्य सुसमाचार के बाहर जाकर न गिरे, क्योकि मसीह लेखक (कर्ता), कुलयोग, और उसका तत्व है, वह जीवित परमेश्वर है, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है, कि यह एक वस्तु नहीं, परन्तु एक व्यक्ति है जिसके विषय में बोला गया था, जो न्यायी है, और मनुष्य के

हृदय की गुप्त बातों का सूक्ष्मता से परखनेवाला, और वह निश्चित है, कि यह शब्द एक व्यक्ति के लिए कहा गया है, और निम्नलिखित वचन के बारे में कही गई वे पूर्णतः मसीह के साथ सहमत होती हैः वह परमेश्वर का वचन है, जैसे शब्द बुध्दि से जन्मता हैं, वह पिता के एकलौते है, वह वो वचन है जो सभा में चुने हुओं के लिए बोला गया और अनुग्रह की वाचा है, और वह बोला गया और शुन्य में से सारी वस्तुओं की सृष्टि की, यही वह वचन है जिसकी प्रतिज्ञा कि गई थी, और संसार के आरंभ ही से भविष्यवक्ताओं के द्वारा कहा गया था, और वह अपने पिता की बुध्दी का अनुवादक है, और पिता के साथ हमारा वकील है, वह तेज है, या यह बेहतर रूपान्तर होगा, जीवित उसमें स्वय में परमेश्वर की तरह जीवन है, वह जीवित परमेश्वर है, वह जीवित छुटकारा दाता और कर्ता लेखक है, और वह शक्तिशाली है, जैसे वह सृष्टि के समय प्रकट हुआ और सारी वस्तुओं को थामे हुए है, उसके आश्चर्यकर्मों और सहायता देने में, मनुष्य के छुटकारे के काम में, अपने लोगों को बचाए रखने में, और उसकी वकालत और मध्यस्तता, और किसी भी दोधारी तलवार से भी तेज, या एक से अधिक काट करना उसके मुँह के वचन के द्वारा, उसकी आत्मा की सामर्थ के द्वारा, और उसके अनुग्रह की क्षमता से, कि उसका मुँह ही एक तेज तलवार है, और उसमें से एक निकलकर आता है, यशायाह 49:2 जिसके द्वारा वह मनुष्य के हृदय को छेदता है, शिध्रता से उन्हें काटता है, और, खोलकर रख देते हैं । यहोवा को यहुदियों के साथ दोधारी तलवार कहा गया है, और फिलो जो यहुदी है वे लोग वह वचन की ज्वालामयी तलवार के बारे में कहते हैं । प्राण और आत्मा और जोड़ो और गूदे को छेदता और अलग– अलग करता है, " लोगस " या वचन के लिए यहुदी – फिलो ऐसे ही गुणों का वर्णन करता है, वह उसे " एक काटनेवाला " कहता है, और कहता है कि वह सारी वस्तुओं को काटता और अलग अलग करता है, हाँ, अणुओं और ऐसी वस्तुओ को जो अलग– अलग नही की जा सकती उन्हें भी ऐसा लगता है कि प्रेरितों ने उन विभिन्न नामों का सम्मान किया, जिसके द्वारा मनुष्य के प्राण जो यहुदियों के द्वारा उसे " प्राण, आत्मा और श्वास " कहा जाता है, इसके बाद वाला, वे कहने दो के बीच में निवास करता । कुछ लोग प्राण के द्वारा यह समझते हैं कि यह मनुष्य का स्वभाव और नया न किया गया हुआ भाग, और आत्मा को नया किया हुआ और पुनःसृजा हुआ भाग, यद्यपि कभी–कभी मनुष्यों के द्वारा आसानी से इसमें फर्क नहीं किया जा पाता, तौभी मसीह के द्वारा किया जाता है, अन्य लोग सोचते हैं कि प्राण को निम्न श्रेणी में सृजा गया है, लगाव और आत्मा जो सोचते कि प्राण को निम्न श्रेणी में सृजा गया है, लगाव और आत्मा जो सर्वश्रेष्ठ है, बुध्दि और समझ, परंतु प्रेरितों का तात्पर्य ऐसा जान पड़ता है, कि जब की प्राण और आत्मा अदृश्य है, और जोड़ (गांठ) और गूदे ढके हुए हैं और छुपे हैं, इतना धारदार

और तेज दृश्यक, और इतना छेदनेवाला वह अलोकिक वचन है, कि यह मनुष्य के सबसे अधिक गुप्त और छुपी हुई बातें होता है, और यह विचारों तथा हृदय के उददेश्यों का एक परखकर्ता है, मसीह जानते हैं कि मनुष्य के भीतर क्या है, वे हृदय के उददेश्यों का एक परखकर्ता हैं, मसीह जानते है कि मनुष्य के भीतर क्या है, वे हृदय को खोजनेवाले (जांचनेवाले) हैं, और मनुष्यों कि सन्तान के शासन का परखनेवाला है, और अन्त के दिन में यह और अधिक दृश्यमान होगा, जब वे हृदय की सम्मति को प्रकट करेंगे, और सक्षमता से पूछताछ करेंगे, और सह रीति से उनका न्याय करेंगे।"

परमेश्वर का वचन इन बातों को अलग अलग (विभाजित) करता है :

प्राण और आत्मा	परमेश्वर के विचार और मनसाएं
और	और
जोड़ो (गांठो) और गूदों (मज्जा)	बुरे विचार और मनसाएं

जैसे ही आप वचन को उठाते हैं, आप एक सामर्थी और शक्तिशाली तलवार को उठाते हैं जो असमंजस और खलबली (उत्पात) को आर – पार काटता है और शरीर और आत्मा के फर्क को बताता है ।

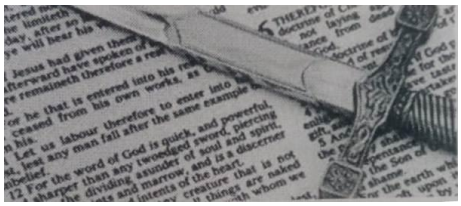

पासबान जॅक उब्ल्यु. हे फोर्ड के द्वारा विवरण – आत्मा में चलो – भक्ति और नैतिक शुध्दता गलतियों 5:16 आत्मा में चलो तो तुम शरीर की अभिलाषा को पूरी नहीं करोगे ।

" पवित्र आत्मा की बनावट, जब वे " अलौकि स्वभाव " के फल के चरित्रों को हममें विकसित करते हैं, यह इसलिये होता है कि हमें एक ऐसा जीवन जीने से रोकें जिसकी शारीरिक वृत्ति हो जो इच्छाहीनता और अनउत्पादक दोनों है।

यह शब्द "चलना" का अर्थ है लम्बी चाल चलना , विशेषकर एक योग्यता के प्रमाण के रूप में" "जिससे भरा हुआ था किसी बात में व्यस्त होना ।" क्रियापद के काल प्रगति या अनुग्रह में स्थिर उन्नति को लागू करता है । पवित्र आत्मा दोनों काम करते हैं निगरानी करते और सक्षम बनाते, प्रायोगिकभक्ति के लिए योग्य बनाते हैं।

हमारे भाग में परख सिखाती है कि कुछ पाप शारीरीक स्वभाव के द्वारा चलाए जाते हैं और अन्य शारीरीक लालन–पालन (खान–पान) पोषण के द्वारा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस तरह कोई सींचा गया या किस नस्ल का है । कुछ पापों से ईश्वरीय निषेधाज्ञा के कारण बचाव होता है और अन्य तो ईश्वरीय पवित्र आत्मा वचन को लाते हैं या स्मरण दिलानें के लिए बुध्दि को व्यक्तिगत चेतावनी देते हैं।

मसीह में विकास उन सारी बातों को रोकता है जो मसीह के लिए असामान्य है । जब हमारा हृदय आज्ञा का उल्लंघन करने में बाधा डालता (रोकता) है, नियमो को स्मरण करने के लिए अपनी बुध्दि पर निर्भर होने के स्थान पर और आज्ञा मानने के लिए संघर्ष करने तब हम भीतर से अधिक प्रोत्साहित होते हैं।

" आत्मा में चलना " सीखना मानसिक नियम और अनुशासन में से धीरे धीरे सरकाकर एक आज्ञा कारिता की ओर ले आएगा जिसकी जड़ें दिल के न्याय और कायलता में पड़ी है ।"

जब हम परमेश्वर और परमेश्वर के वचन की उपस्थिति में हैं, और पवित्र आत्मा की अुगवाई में उसमें चल रहे हैं – तब हम परमेश्वर के स्वरूप में बदल जाएंगे, और हम महिमा से महिमा की ओर जाएंगे । 2 कुरिन्थियों 3 :18

और हम सब जैसे कि उघाड़े (बेपरदा) चेहरे के साथ, क्योंकि हम लगातार देखते रहेंगे (परमेश्वर के वचन में) जैसे कि आईने में वो प्रभु की महिमा, हम लगातार बदलते चले जाएंगे प्रभु के अपने स्वरूप के अनुसार लगातार बढ़ती हुई ज्योति में और महिमा की एक श्रेणी से दूसरी तक, (क्योंकि यह आता है) प्रभु की ओर से (जो है) आत्मा / एम्प्लिफाईड बायबल

भजन 16:11

आप मुझे जीवन का मार्ग बताओगे, आपकी उपस्थिति में आनन्द की परिपूर्णता है, आपके दाहिने हाथ में सुख सदा के लिए है । एम्प्लिफाईड बायबल

1 इतिहास 16 :27

सम्मान और प्रताप (पाया जाता है) आपकी उपस्थिति में है, शक्ति और आनन्द (पाए जाते है) आपके पवित्र स्थान में है। एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

जितना अधिक समय आप परमेश्वर के साथ और परमेश्वर की उपस्थिति में व्यतीत करेंगे उतना ही अधिक आपके लिए परमेश्वर की योजना स्पष्ट होगी ।

भजन 27 :4

मै ने प्रभु से एक बात मांगी है, कि मै खोजूंगा, उसके लिए पुछताछ करूंगा और (आग्रहपूर्ण) अपेक्षा करूंगा, कि मैं अपने सारे जीवन भर में प्रभु के घर में रहने (निवास) करने पाऊँ (परमेश्वर की उपस्थिति में) कि मै प्रभु की सुंदरता को थामे रहूं और एकटक देखता रहूँ (वह मधुर आकर्षण और प्रसन्नचित प्रेम पंक्तियाँ) और मनन करूँ, विचार करूँ, और उनके मंदिर में पूछताछ करूँ । एम्प्लिफाइड बायबल अनुवाद

जैसे आप वचन में समय व्यतीत करते हैं, आप अपना समय असली सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ व्यतीत कर रहे हैं । क्या आपको मालूम है कि वे कर्मचारी जो नकली नोटों की छान–बीन करते हैं वे नकली नोटों का अध्ययन नहीं करते, वे असली नोट का अध्ययन करते, परखते और उसके साथ परिचित होते हैं।

पवित्र आत्मा सिखाते हैं और सत्य की गवाही देते हैं। 2 तीमुथियुस 2 : 15

अध्ययन करें और सहमत हों और अपना भरसक प्रयास करें कि स्वयं को परमेश्वर के समक्ष स्वीकृत परीक्षा के द्वारा परखा हुआ ऐसा, प्रस्तुत करें, एक ऐसा काम करनेवाला जिसके पास लज्जित होने का कोई कारण नहीं सत्य वचन को सही रीति से छान–बिन करता और सही तरह से विभाजित करता (सही तरह से सम्हालता (काम मे लाता) और प्रविणतापूर्वक सिखाता) हो । एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

आत्मा में चलने का अर्थ है एक धन्यवाद व्यक्ती बने रहना। ˙ थिस्सलुनीकियों 5 :18

हर बात में (फिर चाहे परिस्थियाँ कैसी भी क्यों न रहें, धन्यवादी रहें और धन्यवाद दें) (परमेश्वर का) धन्यवाद करो :क्योंकि तुम्हारे लिये (जो) मसीह यीशु में उस इच्छा के प्रकट करने वाले और मध्यस्त परमेश्वर की यही इच्छा है । एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

भजन 100 : 4

उसके फाटकों में धन्यवाद और एक धन्यवाद के बलिदान और उसके आंगनों में स्तुति के साथ प्रवेश करो ।

पवित्र आत्मा की अगुवाई में प्रतिदिन अपना जीवन जीने के द्वारा उसमें चलने का अर्थ है । प्रतिदिन इफिसियों 4 :23 के अनुसार अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाना।

इफिसियों 4:23 के संबंध में अग्रेंजी पठकों के लिए एलिकॉट की टिप्पणी

" और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ ।" जिस शब्द को नये किया जाना " करने अनुवाद किया है वह जैसा "नया" शब्द है वैसा नहीं है। उसका उचित रिती से जो अनुवाद होगा वह है "कि फिर से जवान बनाया जाना" और बहाली थी प्रक्रिया का वर्णन ऐसे किया गया कि पुराने मनुष्यत्व की जर्जरता को और शरीर की लालसाओं के द्वारा उत्पन्न सड़ाहट को उतार

फेंकने का स्वभाविक प्रभाव। इसका प्रभाव " मन के आत्मिक स्वभाव "में दिखाई देता है जो कि, " भीतरी मनुष्यत्व के आत्मिक स्वभाव मे" मनुष्य की " आत्मा बुध्दि या भीतरी मनुष्यत्व है, उसके सही संबधो में ऐसा समझा जाता है कि परमेश्वर के आत्मा द्वारा जिलाया और संभाला (बनाए रखा) जाता है, उसके विपरीत अवस्था " शरीर की बुध्दी की है" उन लोगों में जो सिर को पकड़ते नहीं हैं । इस आत्मा के विषय में कहा गया है कि अपनी जवानी को फिर से प्राप्त करती है .... जब यह मिटटी का बना सड़ाहट का आवरण काट कर अलग किया जाता है।

आपकी बुध्दि " शरीर की बुध्दि (मन) नया नहीं किया जा सकता, केवल आपके मन का आत्मिक स्वभाव नया बनाया जा सकता है ।

रोमियों 8 :7

क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है क्योंकि ना तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधिन है और ना हो सकता है ।

पाप के लिए मर जाने के द्वारा आत्मा में चलाना, परमेश्वर के लिए जीवित – पाप के सेवक से हटकर परमेश्वर के सेवक होना ।

रोमियों 6 : 1–11 और 20–23

1. तो हम क्या कहें ? क्या हम पाप करते रहें की अनुग्रह बहुत हो ?
2. कदापि नहीं ! हम जब पाप के लिए मर गये तो फिर आगे को उसमे कैसे जीवन बिताये ?
3. क्या तुम नहीं जानते की, हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया ।
4. अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाढ़े गये क्योंकि जैसे मसीह पिता के महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें ।
5. क्योंकि यदि हम उसके मृत्यु के समानता में जुड़ गये हैं , तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुडं जायेंगे
6. हम जानते हैं की हमारा पुराने मनुष्यतत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाये और हम आगे को पाप के दासत्व में ना रहें ।
7. क्योंकि जो मर गया वो पाप से छूटकर धर्मी ठहरा ।
8. इसीलिए यदि हम मसीह के साथ मर गये तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएंगे भी ।

9. क्योंकि ये जानते हैं की , मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं उसपर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की ।
10. क्योंकि वो जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया परंतु जो जीवीत है तो परमेश्वर के लिये जीवीत है ।
11. ऐसे ही तुम भी अपने आपको पापों के लिए तो मरा परंतु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवन समझो ।
20. जब तुम पाप के दास थे तो धर्म की ओर से स्वंतत्र थे
21. अतः जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो उन से उस समय तुम क्या फल पाते थे ?

    क्योंकि उनका अंत तो मृत्यु है ।
22. परंतु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुमको फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है और उसका अंत अनंत जीवन है ।
23. क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है । परंतु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनंत जीवन है ।

रोमियों 6 पवित्रता का पिदा करते और इनके द्वारा आत्मा में चलने की बात कर रहा हैः

- जानना की परमेश्वर की सामर्थ हममें काम कर रही है।
- हमारे सोचविचार के हमारे पुराने तरीके को जो क्रूस पर चढ़ाया है उसे मसीह के साथ गाड़ा जाना आवश्यक है।
- मसीह में हम कौन हैं इसे समझना ।
- पवित्र आत्मा का अनुग्रह ओर सामर्थ ।
- पिता परमेश्वर की तरह विचार करना । प्रभु यीशु की तरह बोलना ।

आत्मा में चलना फल उत्पन्न करेगा ।

गलतियों 5 :22–23 के अनुसार आत्मा के फल

पर आत्मा का फल प्रेम, आनंद, शांन्ति, धीरज , कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है ।

ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं

आपका जीवन पवित्र आत्मा की अगुवाई में जीने के द्वारा प्रतिदिन इसमें चलने के लिए ।

कार्यभार प्रतिदिन उसी के अनुसार चलना एक बुध्दि नये हुए व्यक्ति बनने के द्वाराः

- इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र को पढ़ें उसके साथ परिचित हों और आज्ञा मानें।
- " मसीह में मैं कौन हूँ " उसमें पाए जानेवाले शास्त्र भाग को पढ़ें उसके साथ परिचित हों और आज्ञा मानें और वचन आपके विषय में जो घोषणा करता है उस पर विश्वास करे।
- संपूर्ण तंदुरूस्ति की ओर जानेवाला मार्ग पुनर्स्थापना, "उसके अनुसार चलना" के विभाग में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़े परिचित हों, और उसकी आज्ञा पालन करें ।
- आपके प्रतिदिन के अनुशासन में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ना, उनके साथ परिचित होना और उनकी आज्ञा मानना जारी रखें।
  (जो अध्याय 2 से लेकर 6 के अन्त में पाए जाते हैं)

संपूर्ण तंदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग

अध्याय – 10

प्रतिदिन उसके अनुसार चलने को पवित्र जीवन जीना कहते हैं ।

1 पतरस 1 : 2 और 1 : 13 – 16

2. और परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने और यीशु मसीह के लहु के छिड़के जाने के लिए चुने गये हैं । 13. इस कारण अपनी अपनी बुध्दी की कमर बॉधकर और सचेत रहकर उस अनुग्रह की पूरी आशा रखें जो यीशु मसीह के प्रगट होने के समय तुम्हें मिलनेवाला है 14. आज्ञाकारी बालकों के समान अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश्य न बनों 15. पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल–चलन में पवित्र बनों 16. क्योंकि लिखा है । " पवित्र बनों " क्योंकि मैं पवित्र हूँ

www.biblegateway.com कि ओर से टिप्पणी –1 पतरस 1:13–16 पर,

"एक यात्री के रूप में, धावक के रूप में, योध्दा और मजदूर के रूप मे, वे अपने लम्बे और ढीले परिधानों में एकत्रित हुए, ताकि वे अपने व्यवसाय (काम धन्धे) के लिए तैयार हो सकें, ऐसे ही मसीहियों ने भी अपनी बुध्दी और लगाव के द्वारा करना है। गंभीर रहें, सभी आत्मिक खतरे और शत्रु के प्रति चौकन्ने रहें और सारे व्यवहार में संयमी रहें । मश्वरे में गंभीर –मन के रहे, साथ ही साथ आचरण (अभ्यास) में भी और स्वयं के न्याय में नम्र रहें । एक बलवन्त और परमेश्वर के

अनुग्रह में सिध्द भरोसा ही हमारे कर्तव्य में उत्तम सत्य के साथ सहमत योग्य है। पवित्रता प्रत्येक मसीही का कर्तव्य और इच्छा है । यह हर एक मामले में, हर एक अवस्था में और सभी लोगों के प्रति हो। हमें विशेषकर ऐसे पापों के विरोध में जागृत रहना और प्रार्थना करना है, जिसकी ओर हमारा झुकाव है । परमेश्वर का लिखित वचन एक मसीही के जीवन के लिए सुनिश्चित नियम है, और इस नियम के द्वारा हमें आज्ञा दी गई है कि हम हर तरह से पवित्र रहें । परमेश्वर जिन्हें बचाते (उध्दार करते) हैं उन्हें पवित्र बनाते हैं ।"

"पवित्र बनना याने परमेश्वर के लिए अलग होना और संसार से परमेश्वर की पवित्रता के प्रति समर्पित लोग शारीरीक मॉगों को "ना" कहते हैं और परमेश्वर की इच्छा के लिए जीवन जीते हैं। पवित्र व्यक्ति सदैव सतर्क रहता है, अपनी बुध्दि (मन) को साफ रखता है, परमेश्वर के साथ अपने जीवनयापन में योग्य रहता है। " पासबान जॉन डब्ल्यु हेफोर्ड का उदाहरण

प्रतिदिन उसके अनुसार चलने का एक आवश्यक भाग है, जिसे पवित्र जीवन जीना कहते हैं। परमेश्वर हमसे यह चाहते हैं कि हम अलग किये जाएं । परमेश्वर की इच्छा है कि उनकी संतान पवित्र हो ।

पवित्र : नैतिकता और आचार संबंधी संपूर्णता या सिध्दता, नैतिक बुराई से स्वतंत्रता ।

1 थिस्सलुनिकियों 4 :3–8

3) क्योंकि परमेश्वर की यह इच्छा है, कि तुम परिशुध्द (अलग किये हुए, शुध्द और पवित्र जीवन जीने के लिए अलग किये गए) बनो : कि तुम सभी लैंगिक दुराचार (व्यभिचार) से दूर रहो और संकोच करो,

4) कि तुम में से प्रत्येक जन को मालूम होना चाहिए अपने स्वयं की देह को पवित्रीकरण (शुध्द, अशुध्द बातों से अलग किया हुआ) और आदर के लिए कैसे वश (नियंत्रण, प्रबंध) करें

5) अन्य जातियों के समान लालसाओं उपयोग किये जाने के लिए । कामुक न हो, जो सच्चे परमेश्वर के प्रति अनजान हैं और परमेश्वर की इच्छा का ज्ञान नही रखते ।

6) कि कोई भी मनुष्य अपराध न करे और अपने भाई को ठगे नहीं और उसके मामले में उसके साथ छल न करें या अपने भाई को व्यापार में छले नही क्योंकि इन सारी बातों में प्रभु बदला लेने वाला है, जैसा हमने आपको पहले ही दृढ़तापुर्वक और स्पष्ट रूप से चुनौती दे दी है।

7) क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुध्दता के लिए नहीं बुलाया परन्तु पवित्रीकरण (कि स्वयं को सबसे अधिक संपूर्ण शुध्दता के लिए समर्पित करें) के लिए ।

8) इसलिए जो कोई भी अपमान (एक तरफ रख देता है और इसका तिरस्कार करता है) करता है, जिसका (वही) आत्मा (जिसे) वह तुम्हें देता है वह पवित्र (अछूता, पवित्र) । एम्प्लिफाईड बायबल अनुवाद

पवित्र जीवन जीने का अर्थ है स्वयं को अविश्वसियों से अलग करना ।

2 कुरिन्थियों 6 : 17 –18

17. इसलिये प्रभु कहता है उनके बीच में से निकलो और अलग रहो और अशुध्द वस्तु को मत छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा ।

18. और मैं तुम्हारा पिता हूँगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियॉ होगे, यह सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर का वचन है ।

प्रतिदिन उसके अनुसार चलने का भाग यह है कि इस बात को सीखना कि लोंगो को उस आत्मिक प्रभाव से अलग करना जो उनमें कार्यरत है । हमारी लड़ाई लहू और मांस से नहीं परन्तु अदृश्य राज्य के साथ है।

इफिसियों 6 :12

क्योंकि हमारा यह मल्लयुध्द लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में है ।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि दूसरे का जिस तरह का व्यवहार या बर्ताव करते हैं वे ऐसा क्यों करते हैं, फिर भी, जो भी हो हमें दूसरों से प्रेम करने की आज्ञा दी गई है । हमें उनकी संगति उनके आस पास मंडराते नही रहना है। जान लीजिए की हम परमेश्वर के द्वारा चुने गए हैं कि अलग किये जाएँ ।

अन्य लोगों के बारे में :

- अस्सिसी के संत फ्रान्सिस : हर समय सुसमाचार का प्रचार करो और जब आवश्यक हो तब ही शब्दों का उपयोग करो।

  सारांश : जब गवाही दे रहे हो, जब आवश्यक हो तभी शब्द का उपयोग करें ।

- इससे पहले कि आप दूसरों की सहायता करने के लिए निकलें पहले आपको चाहिए कि आप स्वयं की सहायता करें । मत्ती 22:37– 40 को स्मरण करें पहले परमेश्वर से प्रेम करे, फिर अपने आप से प्रेम करें ताकि आप दूसरों से प्रेम कर सको । सारांश

- अनुभूति करें जब तुम दूसरों से उल्लेख करें – " आपको संपूर्ण तंदुरूस्ती के मार्ग में से होकर जाना चाहिए ।" वे सामान्यतः एक दीवार खड़ी करेंगे । प्रतिदिन उसमें चलें और दूसरों को आपके अंदर परिवर्तन दिखने दें ।

पवित्र जीवनयापन का अर्थ है कि हमें दूसरों के प्रति आलोचक नहीं होना है। मत्ती 7 :1 –5

1. दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए।

2. क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जायेगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जायेगा।

3. तू क्यों अपने भाई की ऑख के तिनके को देखता है और अपनी ऑख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता ?

4. जब तेरी ही ऑख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, ला मैं तेरी ऑख से तिनका निकाल दूँ ?

5. हे कपटी, पहले अपनी ऑख में से लट्ठा निकाल ले तब तु अपने भाई की ऑख का तिनका भलीभॉति देखकर निकाल सकेगा ।

पवित्र जीवन यापन की बुलाहट के लिए आवश्यकता की हम प्रभु के लिए अपने घर का अर्पण करे ।

अपने घर को पवित्र स्थान बनने का चयन करें एक सुरक्षा और बचाव का स्थान (शरणास्थान) अभक्तिपूर्ण वस्तुतत्वों और ऐसी कोई भी बात जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हो उनसे अलग रहे ।

प्रेरितो : 19 :18–20

जिन्होंने विश्वास किया था उनमें से बहुतेरों ने आकार अपने अपने कामों को मान लिया और प्रगट किया जादू करने वालों में से बहुतोंने अपनी–अपनी पोथियॉ इकट्ठी करके सबके सामने जला दि, और जब उनका दाम जोड़ा गया, तो पचास हजार चॉदी के सिक्कों के बराबर निकला इसप्रकार प्रभु का वचन बलपूर्वक फैलता और प्रबल होता गया ।

उत्पत्ति 11 : 6 के अनुसार परमेश्वर ने इसे एक नियम के रूप में निर्धारित किया है इसे समझले : " जो कोई भी कल्पना हम करेंगे वह हमारे लिए असंभव नहीं होगी ....." और शैतान इस बात को भी जानता है। जिस बात को आप स्थान देते हो उसे अधिकार (सामर्थ) भी देते हो । किसी बात को स्थान देने का क्या अर्थ होता है ? जब आप किसी बात पर विचार (मनन या कल्पना) करते हो , आप उसे स्थान देते हो । जैसे आप विचार कर रहे, मनन कर रहे या कल्पना कर रहे, तब आप किसी बात पर का स्थान लेने देते हो ।

आज इस पृथ्वी पर दो अदृश्य राज्य काम कर रहे हैं ।

परमेश्वर का राज्य।

अंधकार का राज्य ।

एक व्यक्ति किस बात पर मनन कर रहा है उसके द्वारा यह दो अदृश्य राज्य स्थान प्राप्त करते है ।

यदि हम सही विचारों के साथ (परमेश्वर के वचन) अपने मन के आत्मिक स्वभाव को नया नहीं करते हैं, तो हम अपने पुराने सोच–विचार मार्ग (पुरानी आदतों) में ही कार्यरत रहेंगे । परमेश्वर का वचन परमेश्वर कैसे विचार करते हैं वो हैं, और परमेश्वर चाहते हैं कि हम उन्हीं की तरह विचार करें ।

नीतिवचन 23:7 क्योंकि जैसा वह अपने मन में सोचता है वैसा ही वह है ।

इफिसियों 4 : 23 और अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नये बनते जाओ ।

जैसा आप उस विचार पर सोचते हो, वह आपकी दीर्घकालिन स्मृति का भागबन जाता है । जिस पर आप विचार करते हैं वह आपकी देह से उस विचार को सहयोग करने के लिए रसायन उत्पन्न करने के लिए कहता है।

<u>भक्तिपुर्ण विचार</u> उत्पन्न करते हैं "..... आपके शरीर के लिए स्वास्थ और आपकी हड्डियों के लिए बल ....." नीतिवचन 3 : 8

<u>भक्तिपूर्ण विचार</u> एक मजबूत प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्पन्न करता है ।

<u>अभक्तिपूर्ण विचार</u> हानिकारक रसायनों को उत्पन्न करते हैं जो बीमारी और मृत्यु की ओर ले जाते हैं।

परमेश्वर बुला रहे हैं मरकुस 1 :14–20

14. यूहन्ना के पकड़वाये जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया 15. और कहा, समय पूरा हुआ है और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है, मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करों 16. गलील की झील के किनारे किनारे जाते हुए, उसने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे 17. यीशु ने उनसे कहा मेरे पीछे आओ मैं तुमको मनुष्यों के मछुवे बनाऊँगा 18. वे तुरन्त जाल को छोड कर उसके पीछे हो लिये 19. कुछ आगे बढ़कर, उसने जबदी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को नाव पर जालों को सुधारते देखा 20. उसने तुरन्त बुलाया और वे अपने पिता जब्दी को मजदूरो के साथ नाव पर छोड़कर उसके पीछे हो लिये ।

- मरकुस 1 :14 – 20 में, प्रभु यीशु ने शमौन, अन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ रहने के लिए बुलाया । जब वे थोड़े समय तक प्रभु यीशु के साथ रह चुके, उन्होंने उन्हें उनके कार्यभार दिये । प्रतिदिन उसमें चलना आसान है और जब हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन और मनन और आज्ञा पालन करते व परमेश्वर के साथ समय व्यतीत करते हैं तब कार्यभार स्पष्ट हो जाता है ।

सफलतापूर्वक उसमें चलने और पवित्र जीने के लिए अतिरिक्त मुददे चुनाव कर लें कि आप परमेश्वर के वचन के प्रति आज्ञाकारी रहेंगे और परमेश्वर की आशिष आप पर छा जाएगी (आपके आगे होगी) –

व्यवस्थाविवरण 28 : 1–14 : यदि आप परिश्रम के साथ आज्ञा मानों तो .....

परमेश्वर के वचन पर मनन (ध्यान) करें

यहोशु 1 : 8

व्यवस्था की पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाये इसी में दिनरात ध्यान दिये रहना इसीलिए की जो कुछ उसमें लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे, क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा ।

परमेश्वर के वचन पर लगातार मनन करते हैं और अपेक्षित रहें उसके विषय में सोचे और ध्यानपूर्वक अध्ययन करें – परमेश्वर का वचन काम करने का तरीका भजन 119:15 मैं आपको निर्देशों पर ध्यान करूंगा और आपके मार्गों की अपेक्षा करूंगा ।

प्रभु यीशु मसीह ने पहले ही कीमत चुका दी है। यह हमारी जवाबदारी है कि हम सही विचार करें और अपने कृत्यों (कर्मो) को अनुमति देना है कि वे परमेश्वर को प्रसन्न करें ।

प्रतिदिन उसके अनुसार चलना और पवित्र जीवन जीने के लिए आवश्यक है कि हम यह जानें कि पिता हमसे कितना प्रेम करते हैं ।

आदि में परमेश्वर पिता ने मनुष्य को अपने स्वरूप और अपनी समानता में बनाया है।

उत्पत्ति 1:26–27

26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ, और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओ, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगनेवाले जंतुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें । 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वरने उसको उत्पन्न किया नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टी की ।

परमेश्वर पिता हमारे विषय में सब कुछ जानते हैं। परमेश्वर ने हमें अदभुत रीति से सृजा है और उनकी हस्तकला अद्‌भुत है। वे एक प्रेमी पिता हैं।

भजन 139 : 1–4 और 139 : 14

1. हे यहोवा, तू ने मुझे जॉचकर जान लिया है ।
2. तू मेरा उठना बैठना जानता है , और मेरे विचारों को दूरही से समझ लेता है ।
3. मेरे चलने और लेटने की तू भलि–भॉति छानबीन करता है, और मेरे पूरे चालचलन का भेद जानता है ।
4. हे यहोवा मेरे मुॅह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो।

14. मैं तेरा धन्यवाद करूंगा इसलिए कि मैं भयानक अद्‌भुत रीति से रचा गया हूॅ । तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भलि भॉति जानता हूॅ ।

पवित्र जीवन जीने के द्वारा प्रतिदिन उसमें चलने के लिए कार्यभार

कार्यभार प्रतिदिन उसी के अनुसार चलना एक बुध्दि नये हुए व्यक्ति बनने के द्वाराः

- इस अध्याय में पाए जानेवाले पवित्रशास्त्र को पढ़ें, उसके साथ परिचित हो और आज्ञा माने।
- " मसीह में मैं कौन हूॅ " उसमें पाए जानेवाले शास्त्र भाग को पढ़ें उसके साथ परिचित हों और आज्ञा मानें और वचन आपके विषय में जो घोषणा करता है उस पर विश्वास करे।
- संपूर्ण तदुरूस्ती की ओर जानेवाला मार्ग पुनर्स्थापना, "उसके अनुसार चलना" के विभाग में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ें परिचित हों, और उसकी आज्ञा पालन करें ।
- आपके प्रतिदिन के अनुशासन में पाए जानेवाले शास्त्र भागों को पढ़ना, उनके साथ परिचित होना और उनकी आज्ञा मानना जारी रखें।

  (जो अध्याय 2 से लेकर 6 के अन्त में पाए जाते हैं)

कुछ जानकारियॉ इस अभ्यास पुस्तिका में एकत्रित कि गई हैं और उध्दाहरण इनसे लिये गए हैं :

"स्वस्थ रहने का एक और उत्तम मार्ग" हेनरी डब्ल्यु. राईट, 2009 के द्वारा । "ए मोर एक्सलन्ट वे टू बी इन हेल्थ " व्हिटकर हाऊस पब्लिशर्स

" द हेफोर्ड बायबल हैण्डबुक," जॉक डब्ल्यु. हेफोर्ड द्वारा, कार्यपालक संपादक, 1995 थॉमसन नेलसन, इंक.

अतिरिक्त जानकारी जो इस अभ्यास पुस्तिका में है वे एक सप्ताह के, "फॉर माय लाइफ "के नोटस् में से लिया है, कार्यक्रम थॉमस्टन में, जॉर्जिया, पासबान हेनरी डब्ल्यु. राईट www.beinhealth.com.

रिस्टोरेशन क्रिश्चन यह एक युनाइटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका 501 (C) 3 एक्लोसियास्टिकल ऑर्गनाईजेशन ।

रोनाल्ड ई. शोनहर 35 वर्षो से अधिक परमेश्वर के वचन की सेवा व शिक्षा देते आए हैं और 8–16–2009 में उन्हे पुरोहिताभिषेक किया गया । एक बिशप, पासबान और ओवर सियर (देख–रेख कर्ता) के कार्य पद पर, माऊली, ओहिओ में ।

द फादर्स लव लेटर (पिता का प्रेम पत्र)

www.fathersloveletter.com/hindi

अनुवादकः कृपया इस वेबसाईट से डाऊनलोड करें और इस पृष्ठ पर जोडें.